Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

दीप बन कर जले जो
दुनिया को राह दिखाने को

सुनो बात ऋषि की, उसी पर चलो सब,
सभी वेदभावों की, भाषा हटा दो।

--महात्मा वेदभिक्षु:

(१६ अक्टूबर से
१५ नवम्बर
१६८६ तक)

कार्तिक २०४३

इस अंक में विशेष

वेद विज्ञान का जीवनोपयोगी तत्व दर्शन

जन ज्ञान [मासिक]

कार्तिक २०४१ १५ अक्टूबर से १५ नवम्बर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िए पृष्ठ

१. सत्संग महिमा ....
२. सम्पादकीय ....
३. अमरवाणी महात्मा वेदभिक्षु: ५
४. स्वामी दयानन्द सरस्वती विष्णु प्रभाकर ७
५. आप ही के पत्र १७
६. वेद मन्त्रों के उपदेश स्व० पं० रघुनन्दन शर्मा २०
७. मर्यादा पुरुषोत्तम राम ३२
८. आपका रसोईघर अनुरक्ति ४६
९. अंग्रेजी ने हमारे नामों को भी विकृत कर दिया शिवकुमार गोयल ५२
१०. कितने दीपक और जलायें (कविता) बलवीर सिंह ६४
११. मधुमेह : आधुनिक सभ्यता की देन डा० श्याम सुन्दर जोशी ८१
१२. आर्य समाज के प्रति यह कैसा वर्ताव वि० स० विनोद ६१
१३. शोरगुल कम कीजिए ,, ६१
१४. महाराणा सुहल देव की महान विजय विनोद कुमार मिश्र ६
१५. शीश तुमने दिया चन्द्र शेखर आर्य १०
१६. वेद और विज्ञान स्व पं० मधुसूदन ओझा १०

मुखपृष्ठ : महर्षि दयानन्द का चित्र

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक प राकेशरानी द्वारा, 'जन-ज्ञान' मुद्रणालय में मुद्रित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:

सम्पादक—**राकेशरानी**

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली—११००३६

फोन :– ५७२४७४१, ५७२२६३६

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये

विदेश में : विमान से ४२ पौंड, ६० डालर

समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर

आजीवन : ५०१ रुपये

विदेश में : १५०१ रु.

यह अंक : तीन रुपये

कार्तिक संवत् २०४३

अक्तूबर १९८६, वर्ष १८, अंक ३

सत्संग महिमा

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्,
मा नो अतिख्य आगहि ॥१।४।३॥

पदार्थ—हे इन्द्र (ते अन्तमानाम्) आपके समीपवर्ती—आपकी आज्ञा में स्थित (सुमतीनाम्) श्रेष्ठ बुद्धि वाले महात्माओं के समागम से (विद्याम) आपके यथार्थ स्वरूप को हम जान लेवें और आप (नः) हमको (मा अतिख्यः) हमारे हृदय में स्थित हुए महात्माओं के उपदेश का उल्लंघन करने वाला मत बनाओ किन्तु (आगहि) प्राप्त होओ ।

भावार्थ—हे परमात्मन ! आप हमें अपने सदाचारी, परोपकारी, विद्वान, भक्त, महात्मा सज्जनों का सत्संग दो, क्योंकि सतसंग के प्रभाव से अनेक ऐसे नीच भी उत्तम बन गए हैं, मूर्ख विद्वान बन गए हैं, जिन्हें पहले कोई जानता भी नहीं था। दुराचारी, दुर्व्यसना और पतित भी आपके अनन्य भक्त, सदाचारी बन गए, सत्संग की महिमा अपार है। सत्संग से जो लाभ होते हैं, वे लिखे नहीं जा सकते। इसलिए हे परम-पिता ! अपने हमें वेद द्वारा कहा है कि तुम सत्संग की प्रार्थना करो जिससे तुम्हारा यह जन्म सफल हो। बिना सत्संग के विषयों में लीन रह-कर व्यर्थ की चर्चा करते रहने से कुछ भी लाभ नहीं होता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

दीपज्योति नमोस्तुते

दीपज्योति नमोस्तुते : गहनतिमिर–निविड़ अन्धकार में प्रकाश की सुवर्ण रेखा उमगे और हम सबका अन्दर-बाहर आलोकित हो, इस कामना को शब्द प्रदान कर रहा है—जन-ज्ञान का यह अंक। ज्योतिपर्व के इस पावन पर्व पर हम मर्यादा पुरुषोत्तम राम के राक्षसी सत्ता को विध्वंस् कर लंका से अयोध्या में पुनरागमन की स्मृति अपने हृदय पटल पर उभरती पायेंगे तो हमें भगवान महावीर, गौतम बुद्ध, दशमेश गुरु गोविन्दसिंह, महर्षि स्वामी दयानन्द एवं स्वामी रामतीर्थ सरीखेवे महामानव और मनीषियों के प्रेरक जीवन वृत्त भी निश्चय ही स्मरण हो आयेंगे। ये प्रेरक-पुरुष इनका तपा हुआ जीवन हमें स्मृति दिलाते हैं कि असत्व पर सत्य, अन्याय पर न्याय, और कुविचार पर सुविचार की विजय त्याग, तपश्चर्या और बलिदान के बल पर ही होती है। विजयदशमी के पर्व के पश्चात् ही दीपमालिका की पावन परिपाठी निभाई जाती है। और हिमगिरि की उत्तुंग शैल मालाओं से लेकर कन्याकुमारी तक तथा कच्छ से कामरूप तक अमावस्या के गहन तिमिर को समाप्त करने हेतु नन्हीं-नन्हीं दीपवार्तिकाओं से सज उठता है यह महान देश। प्रकाशपर्व का आयोजन कर सामान्य कृषक और श्रमिक, सामंत और श्रीमंत सभी एक ही भावना से प्रेरित होकर यह सर्व मनाते हैं। और उनकी कुटियों से प्रासादों तक में समान रूप से बिखरता हुआ उजियारा इस सत्य का साक्षात्कारता है। युगों के अनेक प्रबल प्रभंजनों को चुनौती देकर उन्हें झेलकर यह आर्यवर्त्त, यह भारत देश और उसके कण-कण को पावन मान-कर उसके लिये हर प्रकार का त्याग और बलिदान देने को तत्पर यह हिन्दू राष्ट्र अपने समस्त भेद-विभेद, मत-मतान्तरों के होते हुए भी अनेकता में एकता के महान गुण को आत्मसात किये हुए हैं। जहाँ यह तथ्य हमारे लिये प्रेरणा अनन्त कर सकते हैं, वहीं यह दीपोत्सव हमारे हानि-लाभ के लेखे-जोखे का पर्व भी है। अतएव इस पावन पर्व को सोल्लास मनाते हुए हमें यह भी विचार करना होगा कि क्या ज्योतिपर्व पर मात्र दीपक सजाना ही हमारा दायित्व की इतिश्री है। इस संदर्भ में जब हम स्वदेश की स्थिति पर विचार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करते हैं तो हमें प्रतीत होता है कि हम कोटि-कोटि माटी के दिये या विद्युत दीपों की लड़ियां भले ही सजा रहे हों, अभी भी अंधकार की प्रेरक शक्तिय इस शस्य-शामला, सुजला, सुफल, वरदाम, भूमि में विघटन और साम्प्रदायिकता, क्षेत्रियता तथा संकीर्णता की फुफकारों से महानतम का साम्राज्य-फलानेके लिये निरन्तर सक्रिय हैं।

अतएव विजयदशमी और दीपमालिका के पेपहान पर्व मनाने के साथ ही हमें स्वदेश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों पर भी दृष्टिपात अवश्य ही करना होगा। हमें संकल्प ग्रहण करना होगा उन प्रवृतियों के प्रति सजगता का वातावरण निर्मित करने का जो हमारे राष्ट्र जीवन को खोखला करने के लिए पूर्ण पराकाष्टा। पर प्रतीत हो रही है। हम साम्प्रदायिकता के उन्मूलन के लिये किसी की अपेक्षा कम प्रतिवद्ध नहीं है। संकीर्णता की विषवल्लरी से उद्भूत संकट की गंभीरता से भी हम अनभिज्ञ नहीं हैं। किन्तु हमारी मान्यता है कि हिन्दुत्व ही इस राष्ट्र की एकता का चिन्तन स्त्रोत है। क्योंकि हिन्दुत्व कोरे कागजों पर लिखा गया कोई कृत्रिम शब्द नहीं अपितु मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण के मानव कल्याणकारी तथ्य विश्व हितकारी दर्शन की अभिव्यंजना है। हिन्दुत्व का दर्शन संकीर्णता का प्रेरक नहीं अपितु अंतिम लक्ष्य के रूप में उसी स्थिति को स्वीकार करता है, जब मानव मात्र में बंधुत्व भावना का विस्तार होगा। क्योंकि "वसुधैव कुटम्बकम" ही तो उसका शाश्वत संदेश है। उन परिस्थितियों के सृजन के लिए यह आवश्यक है कि भारत भूमि विश्व के मानचित्र पर एक सशक्त और बलिष्ट राष्ट्र के रूप में उभरे।

ऐसा तभी होगा जब यह देश, अंधकार पर प्रकाश की विजय की कामना ही नहीं अपितु उसके लिये सहस्रों वर्षों से संघर्षरत यह राष्ट्र उसके समक्ष आज विद्यमान चुनौतियों पर विजय पा लेगा। ये चुनौतियाँ आज साम्प्रदायिकता, क्षेत्रियता तक विदेशी धन के बल पर भारत भूमि को विखंडित करने वाले तत्वों के साथ ही कतिपय अन्य संकटों के कारण भी उपस्थित हैं। अलगाववाद के जो बीज विदेशी बो गये थे वे अब पौधे का नहीं वृक्ष का रूप और आकार पाते जा रहे हैं। आज देश के सामने नैतिकता, मर्यादा और चरित्र का जो संकट उपस्थित दिखाई देता है उस पर हम विजय पा सकेंगे, यह हमारा अदम्य विश्वास है। साम्प्रदायिकता और क्षेत्रियता के विषधरों के फन कुचलने में यह महान देश अवश्य सफल होगा, यह हमारी मान्यता है। हमारे ये विजयदशमी और दीपोत्सव सरीखे पावन पर्व इसी तथ्य का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साक्षात्कार कराते हैं। जब-जब भी इस वरेण्य भूमि पर ऐसे संकटों के बादल घहराये हैं, तभी इस महान जाति की आंतरिक ऊर्जा किसी न किसी राष्ट्र पुरुष के रूप में प्रस्फुटित हुई है। अतः हमारा अडिग विश्वास है कि आज हमें सर्वत्र नैतिकता, मर्यादा और चरित्र का जो सकट अपने राष्ट्र जीवन में समाहित-सा हुआ प्रतीत हो रहा है, वह अधिक समय तक चल नहीं सकता। इस देश की भूमि अमृत-जननी है। इसका संदेश शाश्वत है। यों भी हमारी मान्यता है कि यह संकट मूलतः अप्राकृतिक ही है। कुछ वर्ष या दशक एक राष्ट्र के जीवन में कुछ क्षणों से अधिक महत्व नहीं रखते अतः निश्चय जानिये प्रकाश सत्य की प्रतीक्षा कर रहा है। साथ ही यह भी कटु सत्य है कि दीपपर्व की यह ज्योति आज हमारा आह्वान कर रही है जो अंधकार पर प्रकाश की विजय के स्वप्न को साकार करने के लिये, सच के सूरज को ग्रास न लगने के लिये हमें सावधान और सजग होकर प्राणवृत्तीकाएं सजानी होंगी। हमारे पड़ोस में बैठे शत्रुओं से तो हमें सजग रहना ही है, साथ ही विदेशी धन के रूप में देशरूपी राम को छलने वाले स्वर्ण हिरण के कारनामों से भी जन-जन को सावधान और सतर्क रहना होगा।

इन पर्वों का आह्वान है कि हम अपने देह दीप अंधेरा हरने के लिए समर्पित करें। हमें संकल्प ग्रहण करना होगा। लक्ष्य पाने के लिये अविराम चलते रहने का। हम निःक्षेपसपंथी हैं। आत्मदान ही तो हमारे महान पूर्वजों द्वारा प्रदर्शित पथ है। हमारी यह निष्ठा और आस्था ही इस महान् राष्ट्र को विश्व के मानचित्र पर एक ऐसे सबल राष्ट्र के रूप में उभरेगी जो विश्व के किसी भी कोने में अन्याय और अत्याचार के प्रसार को चुनौती दे सकेगा। राक्षसी प्रवृतियों सावधान! भारत के राम का बाण तुम्हारे कुकृत्यों का शमन करने के लिये सतत् तत्पर है। और तभी हम वास्तविक अर्थों में इस उद्घोष को साकार कर सकेंगे।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

समय के साथ मत बहो, उसे दिशा दान दो।
नये सूर्योदय के लिये—प्राण दो, प्रमाण दो॥
अन्तरिक्ष को ज्योतिर्मय कर, नवजीवन छिताओ रे।
सांस सांस में मास भरी हो, शक्ति-दूत बनाओ रे॥
ओ प्रभु के प्यारे पुत्रो तुम, नव जागरण के गीत गुंजाओ।
धर्म सत्य की अमर पताका, मानव-मानस पर फहराओ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

राष्ट्र की अखंडता का प्रश्न

विघटन, अलगाव और सांप्रदायिकता का जो विषधर जागा है उसे या तो जला दो, या उसकी आग में स्वयं जल जाओ ! और कोई मार्ग है ही नहीं।

सभी अपने-अपने स्वार्थ में लगे हैं। किसी को भी चिन्ता नहीं है भारत मां की। यह जीवन का नहीं, मृत्यु का लक्षण है।

आज भारत के प्रत्येक नागरिक को उग्र राष्ट्रवाद का प्रचार करना होगा। हम जिएं, भारत के लिए, मरें भारत के लिए, भारत एक है। उसकी एकता हमारा संकल्प हो, लक्ष्य हो। प्रान्तीयता, जातिवाद, भाषा के भावों को भस्म करो। वर्ग विशेष के नाम पर अधिकार माँगने की प्रवृत्ति को जला दो। भारत के नागरिक केवल दो भागों में बट जायें, देशभक्त और देशद्रोही। देशद्रोही जो भी हो, उसे समाप्त कर दो।

झगड़ा मजहब का नहीं, राष्ट्र का है। भारत की अखंडता और गौरव का है। हम अपनी दूरदृष्टि से भारत का भविष्य धूमिल देख रहे हैं। स्वार्थ की, राजनीतिक नेताओं की धूर्तता पूर्ण चालों ने देश को बिखरा दिया है। कोई खालिस्तान चाहता है, कोई द्रविड़िस्तान और कोई पूर्वांचल को प्रथक राज्य बनाना चाहता है, तो कोई कश्मीर को। कोई हरिजन के नाम पर सौदा करता है तो कोई सिख के। कोई इस्लाम के गीत गाता है तो कोई ईसाइयत के। भारत मां के गीत यदि सभी गाएं तो सारे झगड़े समाप्त हो जायं।

सांप्रदायिक तत्वों को यदि आज पूरे बल से न कुचला गया तो कुछ भी न बचेगा, यह तथ्य जितना शीघ्र सभी समझ लें, उतना ही कल्याण है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बीच भंवर जग नाव पड़ी थी, तुम ही [illegible]ोज सके पतवा[illegible] !
हे युग स्रष्टा ! हे युग दृष्टा ! हे युग गौरव ! युग आधार !!!

पंडिता राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुण्य तिथि (दीपावली) के अवसर पर

स्वामी दयानन्द सरस्वती

जिन्होंने समाज को एक नयी विचारधारा दी

—विष्णु प्रभाकर

विश्व का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। जो इस बात के साक्षी हैं कि जिन देशों ने दासता से मुक्ति पायी है या किसी दूसरे रूप में राजनैतिक क्रान्ति की है। उन्होंने सबसे पहले सामाजिक शक्ति का संचय किया था। हमारे देश की स्वतन्त्रता के पीछे भी १९ वीं शताब्दी में उभरे अनेक सुधार-आन्दोलनों की शक्ति थी।

जितने सुधार-आन्दोलन यहां हुए, उनका तत्कालीन कारण विदेशियों का इस देश में आगमन था। जैसा कि सदा होता है, विजेताओं के साथ उनकी सभ्यता और संस्कृति भी इस देश में आयी। शुरू-शुरू में ईसाई धर्म प्रचारकों ने हिन्दू धर्म पर खुले हमले किये। दोष चुन-चुन कर खिल्ली उल्ली उड़ाना ही मानो उनका धर्म रह गया था। स्वाभाविक रूप से सुधार-आन्दोलनों के जन्म का एक कारण इस आक्रमण का प्रतिकार करना भी था। परन्तु यह भी सत्य है कि पश्चिमी सभ्यता और शिक्षा ने हमें अपनी ओर आकर्षित किया। उनके सम्पर्क से इस देश में एक नयी चेतना पैदा हुई। उसी के परिणामस्वरूप राजा राममोहन राय ने सन् १८२८ में ब्रह्म समाज की स्थापना की और सती-प्रथा तथा बाल-विवाह जैसी बर्बर प्रथाओं को कानून द्वारा बन्द करवाने की चेष्टा की। आचार्य जावड़ेकर के शब्दों में, "हिन्दू धर्म में सुधार किये जायें, एकेश्वरी धर्म का सर्वत्र प्रचार करके यह बताया जाये कि सब धर्मों का अन्तरंग एक ही है। और इस तरह संसार के धर्म-भेदों का अन्धकार दूर करने वाले सार्वजनिक विश्व धर्म के सूर्य का प्रकाश सर्वत्र फैलाना उनकी बड़ी महत्वाकांक्षा थी।

वे ईसाई धर्म को हिन्दू धर्म से किसी प्रकार भी अच्छा नहीं मानते थे, परन्तु वे स्वीकार करते थे कि ईसाइयों में भी बहुत-से अच्छे लोग हैं। ब्रह्म समाज से मिलते-जुलते और भी कई आन्दोलन इस देश में उभरे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रवर्तित आर्य समाज का सुधार-आन्दोलन उन सबमें सबसे अधिक व्यापक था। एक और बात में यह आन्दोलन सर्वथा मौलिक था। दूसरे आन्दोलन किसी-न-किसी रूप में पश्चिम से सीधे प्रभावित थे, परन्तु स्वामी दयानन्द संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे और अंग्रेजी के प्रभाव-वृत से सर्वथा असम्पृक्त थे, अतः पश्चिम का उन पर कोई सीधा प्रभाव नहीं था।

सच्चे शिव की तलाश में जब वे बर्फीली नदियों और हिंसक पशुओं से भरे सघन वन-प्रान्तों में भटक रहे थे, तभी उन्होंने मथुरा के दण्डी स्वामी विरजानन्द का नाम सुना। वे उनके पास आये। दण्डीस्वामी प्रज्ञाचक्षु थे, परन्तु दयानन्द की प्रतिभा को पहचानने में उनको कोई कठिनाई नहीं हुई। दयानन्द ने अपार श्रद्धा के साथ उनसे विद्या ग्रहण की। गुरु-दक्षिणा के लिए उनके पास कुछ नहीं था। कहीं से कुछ लौंग लेकर वे उनसे विदा मांगने आये। उस समय दण्डीस्वामी ने कहा, "दयानन्द, मुझे लौंग नहीं चाहिए, लेकिन जो कुछ चाहिए वह भी तुम्हीं दे सकते हो। मैं चाहता हूं, देश के अज्ञान को दूर करो। कुरीतियों का निवारण करो। जिन ग्रन्थों में परमात्मा और ऋषि-मुनियों की निन्दा है, उनको त्याग कर आर्ष ग्रन्थों का प्रचार करो। वैदिक ग्रन्थों के पठन-पाठन में लोगों को लगाओ। गंगा-जमुना के प्रभाव की भांति लोक हित की भावना से क्रियाशील जीवन व्यतीत करो। यही मेरी गुरु-दक्षिणा है।"

गुरु का यह आदेश शिरोधार्य करके दयानन्द ने तत्कालीन भारत में फैले पाखण्ड, अविद्या और अन्धविश्वासों पर प्रबल आक्रमण किया। उस समय हिन्दू धर्म अत्यन्त विकृत हो चुका था। सैकड़ों मत-मतान्तर चल रहे थे। असंख्य जातियां जन्म ले चुकी थी। नारी, मानो मात्र छूतछात, विद्वत्ता के दम्भ और ढोंग का धर्म रह गया था। इसके विपरीत इस्लाम और ईसाई धर्म नये थे। उनमें जीवन था, स्फूर्ति थी। वे इस जीर्ण-शीर्ण धर्म पर नवोन्मेष के साथ आक्रमण कर रहे थे।

कुरीतियों पर धन की चोट और खण्डन हित सुधार के लिए

यह स्थिति थी जब स्वामी दयानन्द देश-भ्रमण के लिए निकले। उन्हें सुधारक बहुमुखी लड़ाई-लड़नी पड़ी। ब्रह्म समाज ने भी इन कुरीतियों, कुप्रथाओं और अंधविश्वासों पर प्रहार किया, परन्तु वह पाश्चात्य सभ्यता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से आतंकित था। स्वयं उसके नेता इस बात को अनुभव कर रहे थे। इसीलिए उनमें वह स्वाभिमान नहीं था, जो दयानन्द मे प्रकट हुआ। दयानन्द ने कहा कि रूढ़ियों और अंधविश्वासों में फंसकर हम अपना सर्वनाश कर रहे हैं। जब इन रूढ़ संस्कारों की गन्दी पर्तों को एक बार तोड़कर देखेंगे, तभी सच्चा रूप दिखायी देगा। उन्होंने इन कुरीतियों पर घन की चोट की। शान्त सुधारक से अधिक वे उग्र क्रांतिकारी के रूप में प्रकट हुए। उनकी दृष्टि में जो कुछ भारत के लिए आवश्यक था, उस पर वे चट्टान के समान दृढ़ हो गये। उन्होंने मानो उस द्वारका की कुंजी को पा लिया, जो सहस्रों वर्षों से बन्द पड़ा था।

उन्होंने अपने धर्म ग्रन्थों के साथ-साथ अन्य मतान्तरों के धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन भी किया। उनके दोष दिखाते हुए उन पर प्रहार किये। ऐसा करने का उद्देश्य उन्हीं के शब्दों में यह था, "जो-जो सब मतों में सत्य बातें हैं वे सब में अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके, जो जो मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं उन-उनका खण्डन किया है।—यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं, तथापि इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश करता हूं, वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतोन्नति वालों के साथ भी बरताता हूं। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बरता हूं, वैसा विदेशियों के साथ भी। तथा सब सज्जनों को भी बरतना योग्य है।

एक और स्थान पर उन्होंने कहा, "मेरा उद्देश्य सबको आपस में मिलाना है, जैसे जुड़े हुए हाथ। मैं कोयले से लेकर ब्राह्मण तक में राष्ट्रीयता की ज्योति जगाना चाहता हूं। मेरा खण्डन हित सुधार के लिये है।

उन्होंने किसी नवीन दर्शन का प्रचलन नहीं किया। परन्तु आधुनिक युग में वेदों को पण्डितों की पंचायत से निकालकर जन-साधारण के लिए सुलभ बना देने का श्रेय उन्हीं को है। उन्होंने नियम बना दिया कि "वेद सब सत् विद्याओं की पुस्तक है। वेद को पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

उन्होंने मन्त्र संहिता [मन्त्र] भाग को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण माना। वे देवतावाद नहीं मानते थे। उन्होंने निरुक्तकारों की तीन देवों की पूजा, यज्ञकों की ३३ देवों की स्तुति और पाश्चात्य विद्वानों की अग्नि आदि जड़ वस्तुओं की आराधना का खण्डन कर एकेश्वर-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाद की स्थापना की। उनके मत में वैदिक सूत्र विभिन्न नामों से एक ईश्वर के ही गीत गाते हैं। वे आत्मा, परमात्मा, प्रकृति, इन तीनों को स्वतन्त्र रूप में स्वीकार करते हैं। वेद में इतिहास नहीं मानते। वैदिक शब्दों को यौगिक और योग रूप मानते हैं, रूढ़ि नहीं। उन्होंने निरुक्त प्रणाली को स्वीकार करते हुए कहा, "वेद में धर्म की ही नहीं, विज्ञान की भी सारी बातें प्रच्छन्न हैं।" उनकी इस मान्यता का श्री अरविन्द ने समर्थन ही नहीं किया, बल्कि उन्हें स्वामीजी से एक शिकायत भी रही। उन्होंने कहा, "वेदों में केवल धर्म ही नहीं, विज्ञान भी है।" दयानन्द के इस विचार से चौंकने को कोई बात नहीं। मरा विचार तो यह है कि वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी हैं जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं चला है। इस दृष्टि से देखने पर ह.. पता चलता है कि दयानन्द ने वेदों में निहित विज्ञान के सम्बन्ध में अत्युक्ति नहीं, बल्कि अल्पोक्ति से काम लिया।

वेदों में स्वामीजी की इतनी आस्था थी कि सन् १८७७ के केसरी दरबार के अवसर पर, सब धर्मों में एकता स्थापित करने के लिए, जो कान्फ्रेंस उन्होंने बुलायी, उसमें उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि सब धर्मों के व्यक्ति वेदों को स्वीकार कर लें। परन्तु यह तो असम्भव को सम्भव करने जैसा था। वह कान्फ्रेंस सफल नहीं हो सकी। उसके आठ वर्ष बाद जनवरी, १८८५ में ब्राह्म समाज के एक नेता बाबू नवीनचन्द राय ने 'ज्ञान प्रदीप' में इस कांफ्रेंस की चर्चा करते हुए लिखा था, "फिर दूसरी बार स्वामीजी की मुलाकात हम लोगों से दिल्ली में १८७७ में केसरे हिन्द के दरबार के समय हुई। वहां उन्होंने हमें, बाबू केशवचन्द सेन और श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को निमन्त्रित किया और हम लोगों से यह प्रस्ताव किया कि हम लोग पृथक-पृथक धर्मोपदेश न करके एकता के साथ करें, तो अधिक फल होगा। इस विषय में बहुत बातचीत हुई, पर मूल विश्वास में हम लोगों का उनके साथ भेद था, इसलिए जैसा वे चाहते थे, एकता न हो सकी।"

मूल विश्वास में वह कैसा भेद था, इसकी चर्चा श्री पी. एस. वासुने बाबू केशवचन्द्र सेन की जोवनी में की है, "बाबू केशवचन्द्र सेन जब फिर दिल्ली में स्वामी दयानन्द से मिले, तो उन्होंने कहा कि वे बहुत बातों में उनसे सहमत हैं, लेकिन एक बात उनकी समझ में नहीं आती कि बिना वेद का सहारा लिये धार्मिक शिक्षा कैसे दी जा सकती है?"

इस कांफ्रेंस में सर सय्यद अहमद ने भी भाग लिया था। एकता के ये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयत्न सफल नहीं हुए, परन्तु स्वामीजी के मन में यह प्रश्न बराबर जीवित रहा। तीन वर्ष बाद दिसम्बर, १८८० में उन्होंने सेण्ट्स पीटर्स चर्च, आगरा के बिशप महोदय से कहा, "यदि हम और आप तथा अन्य धर्मों के बुद्धिमान नेता केवल उन बातों का प्रचार करें, जिन्हें सब मानते हैं, तो एकता स्थापित हो सकती है और फिर मुकाबले पर नास्तिक ही रह जायेंगे।"

लेकिन बिशप महोदय स्वामीजी की यह बात भी स्वीकार नहीं कर सके। और उसके तीनवर्ष बाद राजस्थान में स्वामीजी का देहान्त हो गया। खण्डन-मण्डन की धुन्ध की गहरी पर्त को भेदकर यदि कोई दयानन्द के अन्तर तक पहुंच पाता, तो निश्चय ही वह देखता कि वह व्यक्ति एकता के लिए कितना आतुर रहता था।

वेदों के सम्बन्ध में स्वामीजी की आस्था कितनी ही प्रबल रही हो, परन्तु दूसरे असंख्य अन्धविश्वासों पर उन्होंने गहरी चोट की। मूर्ति-पूजा और श्राद्धको वैदिक धर्म के प्रतिकूल माना। बताया कि मृत्यु के बाद जीवात्मा पुनः जन्म लेता है, इसलिए श्राद्ध द्वारा उसे भोजन या जल पहुंचाने की कल्पना अवैज्ञानिक है। मन्दिरों में मूर्तियों पर जल चढ़ाना ईश्वर की पूजा का उचित साधन नहीं है। उचित साधन है दैविक गुणों को अपने अन्तर में संजोना : उस युग में समुद्र-यात्रा का समर्थन करते हुए उन्होंने लिखा, "धर्म हमारी आत्मा और कर्तव्य के साथ हैं। जब हम अच्छा काम करते हैं, तो हमको देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर जाने में कोई दोष नहीं लगता। दोष तो पाप करने में लगता है।"

स्त्रियों और शूद्रों के मसीहा

स्त्रियों और शूद्रों के लिए तो वे मसीहा बनकर आये। उन्होंने 'स्त्री शूद्रोनाधीयाताम्' का खण्डन करके 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' आदि वाक्यों का मण्डन किया। लिखा, "स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए।" उनको वेद पढ़ने का अधिकार देते हुए कन्या के विवाह की आयु कम-से-कम १६ वर्ष नियुक्त की। वृद्धविवाह को गलत माना। उनकी प्रेरणा पाकर 'असूर्यपश्याएं' पहली बार घर की चारदीवारी से बाहर निकलीं। शुरू में वे विधवाविवाह का प्रचार केवल शूद्रों तक ही सीमित मानते थे, लेकिन पूना के अपने एक व्याख्यान में उन्होंने स्पष्ट कहा, "ईश्वर के समीप स्त्री-पुरुष दोनों बराबर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। क्योंकि वह न्यायकारी है। उसमें पक्षपात का लेश नहीं है। जब पुरुषों को पुनर्विवाह की आज्ञा दी जाये, तो स्त्रियों को दूसरे विवाह से क्यों रोका जाए ? प्राचीन आर्य लोग ज्ञानी, विचारशील, और न्यायी होते थे। आज-कल उनकी सन्तान अनार्य हो गई है। पुरुष अपनी इच्छानुसार जितनी स्त्रियां चाहें कर सकते हैं, देश, काल, पात्र और शास्त्र का कोई बन्धन नहीं रहा। क्या यह अन्याय नहीं है ? क्या यह अधर्म नहीं है ?"

उन्होंने वर्णव्यवस्था को जन्म से नहीं, कर्म से माना और सब वर्णों के लिए समानाधिकार का प्रतिपादन किया। कहा, "यदि परमेश्वर का अभि-प्राय शूद्रादि के पढ़ाने-सुनाने का न होता, तो उसके शरीर में वाक् और श्रवण इन्द्रियां क्यों रचता ?···जहां कहीं भी निषेध किया है, उसका यह अभिप्राय है कि जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आये, वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहलाता है।"

उन्होंने न केवल शूद्र, बल्कि अति शूद्र को भी जनेऊ धारण करने का अधिकार दिया। अपने जीवन की सन्ध्या में तो वे वर्णव्यवस्था को मरण-व्यवस्था तक मानने लगे थे।

इन विचारों की पृष्ठभूमि में आर्य समाज ने दलितोद्धार का काम किया। उन्हें शुद्ध करके उनके साथ सहभोज और किसी सीमा तक विवाह करने में भी कोई आपत्ति नहीं हुई। इसके परिणामस्वरूप इन जातियों में आत्म-सम्मान की भावना जागृत हुई और वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठीं। मेघ जाति के लोग जहां पहले राजपूतों को 'गरीबनवाज' कहकर सम्बोधित करते थे, अब केवल 'नमस्ते' कहकर ही सम्बोधित करने लगे कितने ही भंगी और चमार पण्डित और ठाकुर बन गये।

१८५७ की क्रान्ति के समय निश्चय ही स्वामी दयानन्द घूम-घूमकर देश में उठती हुई ज्वाला को देख रहे थे। उन्होंने समझ लिया था कि देश के स्वाधीन हुए बिना कुछ नहीं हो सकता। उनके ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर इसी भावना को स्वर मिला है। इस असफल क्रान्ति के २५ वर्ष बाद उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा, "'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित, और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया केसाथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

(शेष अगले अंक में)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(भूल सुधार, पृष्ठ ३१ का शेष)

पूर्णं वामेन तिष्ठन्तस्ते नो जानन्त्वायतः ।।२।।
येषामध्येति प्रवसन् येषु सौमनसो बहुः ।
गृहानुप ह्वयामहे ते नो जानन्त्वायतः ।।३।।
उपहूता भूरिधनाः सखायः स्वादुसंमुदः ।
अक्षुध्या अतृष्या स्त गृहा मास्मद् बिभीतन ।।४।।
उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः ।
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः ।।५।।
सूनृतावन्तः सुभगा इरावन्तो हसामुदाः ।
अतृष्या अक्षुध्या स्त गृहा मास्मद् बिभीतन ।।६।।
इहैव स्त मानु गात विश्वा रूपाणि पुष्यत ।
ऐष्यामि भद्रेणा सह भूयांसो भवता मया ।।७।।

(अथर्व० ७।६०।१—७)

अर्थात् हे वीर्य, धन, सम्पत्ति, सुहृद्भाव और अच्छे मन वालो ! आप लोग इन घरों में प्रेमपूर्वक आइये, डरिये मत। घरों में आने वालों के लिए ये घर आरोग्यवर्धक, बलशाली, दुग्ध वाले, लक्ष्मीवान् और श्रीमान् हैं। ये घर अमित धन वाले, मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद करने वाले और क्षुधा-तृषा के हरने वाले हैं, इसलिए आइये, डरिये मत। गौवें, बकरी और नाना प्रकार के रसीले अन्न हमारे घरों में भरेपड़े हैं ये घर सत्यवालों, भाग्यवानों, धनियों, हंसमुखों और भूख-प्यास से रहितों के हैं, इसलिए डरिए मत। थके हुए पथिक जो इन घरों का स्मरण करते हैं, उन्हें ये घर अपनी ओर बुलाते है, इसलिए कहीं मत जाइये, यहीं रहिये। ये घर अनेक प्रकार से पोषण करते हैं, इसीलिए हम भी यहां आ गये हैं ठहरे हैं और सब प्रकार से सुखी हैं। इस उपदेश में गृहस्थाश्रम का कैसा भव्य वर्णन है और कैसे उदार गृहस्थों का चित्र खींचा गया है। इसका कारण यही है कि वेदों में अतिथि सत्कार न करने वाले और क्षुधातुरों को अन्न न देने वाले गृहस्थों को निन्दा की गई है। ऋग्वेद में लिखा है कि—

य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन्नफितायोपजग्मुषे ।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितार न विन्दते ।।२।।
स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय ।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम् ।।३।।

(ऋ० १०।११७)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai
अर्थात जो अन्नवान होता हुआ, अन्न चाहने वालों और गरीबों के पास आये हुए दुखियों के लिए मन कठोर कर लेता है और आप मजे में खाता है उसे सुख देने वाला मित्र नहीं मिल सकता। जो अन्न चाहने वाले दुर्बल याचक को अन्न देता है वही सच्चा भोजन करता है। ऐसे दाता के पास दान करने के लिए पर्याप्त अन्न आता है और कठिन समय में सहायक मित्र उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार से इन वेदमन्त्रों ने आदर्श गृहस्थ का चित्र खींचते हुए बतलाया कि मकान तो सदैव साधारण ही हो, पर वह साधारण मकान अन्न आदि आवश्यक पदार्थों से भरा हो और मकान पर आने वालों का उत्तम सत्कार किया जाय।

पर स्मरण रहे कि इस दानशीलता के कारण ऋण न होने पावे। ऋण मनुष्य को बहुत ही नीच बना देता है, इसलिए उतना ही खर्च चाहिये जितनी अपनी निज की आमदनी हो। अथर्ववेद में लिखा है कि—

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम॥
(अथर्व० ६।११७।३)

पुष्टिं पशूनां परि जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम्।
पयः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात्॥
(अथर्व० १९।३१।५)

अर्थात इस लोक, परलोक और तीसरे लोक में हम सब उऋण होवें और देवयान तथा पितृयान के जो मार्ग और स्थान हैं, उन सबमें हम उऋण होकर निवास करें। मैं चतुष्पाद पशुओं से, द्विपाद पशुओं से, द्विपाद मनुष्यों से और धान्यों से प्राप्त पदार्थ स्वीकार करता हूं और बृहस्पति तथा सविता देव परमात्मा ने जो मुझको पशुओं का दूध और औषधियों का रस दिया है, उसी से पोषण करता हूं। इन मन्त्रों का यही तात्पर्य है कि जो कुछ अपने पुरुषार्थ से प्राप्त हो, उसी के अनुसार खर्च किया जाय, ऋण लेकर नहीं। इस प्रकार से गृहस्थ की दशा का वर्णन करके अब गृहस्थ के नित्य करने योग्य पंचमहायज्ञों का वर्णन करते हैं। यजुर्वेद में लिखा है कि—

यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये।
यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे॥ (यजुर्वेद ३।४५)

अर्थात ग्राम में, जंगल में और सभा में हमने इन्द्रियों से जो पाप किया है, उसे इस यज्ञ में होम करके दूर फेंकते हैं। इस मन्त्र का मतलब यही है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
गृहस्थ से जो पांच स्थानों में पाप होता है अथवा युद्धों और हिंस्त्र पशुओं की हत्या से जो पाप होता है अथवा ग्राम में, जगल में और सभाअ मे जो मन, वाणी और कर्म से बिना इरादे के पाप हो जाता है, वह पंचमहायज्ञों और इष्टापूर्तादि लोकोपकारी कार्यों के करने से दूर हो जाता है, अर्थात एक प्रकार से नित्य प्रायश्चित हो जाता है। इन पंचमहायज्ञों में सबसे पहले वेदों का स्वाध्याय और प्राणायाम पूर्वक गायत्री का जप है। यही ब्रह्मज्ञ है। वेद में इस ब्रह्मयज्ञ के करने की ताकीद की गई है। वेद के स्वाध्यायय लिए यजुर्वेद में लिखा है कि—

यथेमां वाचं कल्याणीमाददामि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं
मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु। (य० २६।२)

अर्थात जैसे इस कल्याणकारिणी वाणी को मनुष्यों के जिए मैं बोलता हूं, वैसे ही ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों, शूद्रों, स्त्रियों और अनार्यों के लिए आप भी बोलिये और समझिए कि इस प्रकार के विद्यादान से मैं देवताओं में प्रिय होऊं, मुझ परोक्ष सुख मिले और सब कामनाएं पूर्ण हों। यह वेद के स्वाध्याय की महिमा है। पर वेद-स्वाध्याय का मतलब केवल वेदों रटना ही नहीं है, प्रत्युत उनके अर्थों का जानना है। इसलिए अथर्ववेद में लिखा है कि—

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्ते अभीसभासते।
(अथ० ९।१०।१८)

आज ही ५०१ रुपया भेजकर

जन-ज्ञान 'मासिक'

के'।

आजीवन सदस्य बनें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शोक समाचार

दैनिक जागरण पत्र के संस्थापक संचालक श्री पूर्णचन्द्र गुप्त का ७५ वर्ष अवस्था में दिनांक १५-६-८६ को हृदय गति रुक जाने से मेरठ में निधन हो गया। उनके निधन से एक ओजस्वी पत्रकार कर्मठ आर्य सेनानी की हानि हुई है।

दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पं० राकेशरानी एवं जन-ज्ञान परिवार ने दिवंगत को शांति तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना व्यक्त की।

प्रेरक विचार

- राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।
- स्त्री क्या है! साक्षात् त्याग की मूर्ति। जब कोई स्त्री किसी काम में जी जान से लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है।
- वास्तविक सौंदर्य हृदय की पवित्रता में है।
- सुख, जो कुछ तुम त्याग कर सकते हो उस पर आधारित है, जो कुछ तुम पा सकते हो उस पर नहीं।
- कोई भी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती यदि वह अपने को अन्य से पृथक् रखने का प्रयास करे।
- अस्पृश्यता हिन्दू जाति पर कलंक है।
- मधुर संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है।
- सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है।
- लोकमत का अर्थ है जिस समाज की राय हमें चाहिए उसका मत। यह मत नीतिविरुद्ध न हो तबतक उसका आदर हमारा धर्म है।
- हृदय की कोई भाषा नहीं है; हृदय हृदय से बातचीत करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

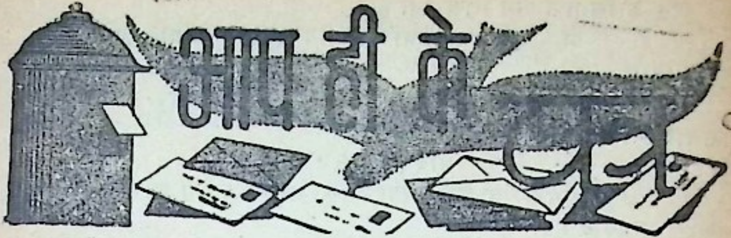

प्रिय बहन राकेशरानी जी

सप्रेम नमस्ते

४-५ दिन हुए मुझे जून मास का जन-ज्ञान प्राप्त हुआ जिसमें जून मास में आपका जन्म दिवस होने का ज्ञान हुआ। इसके लिये आपको अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं व्यक्त करती हूं व प्रभु से आपके स्वस्थ व दीर्घ जीवन के लिए प्रार्थना है। आप भाग्यशाली हैं जिनका जीवन धर्म के लिये देश व जाति के लिए समर्पित है। संघर्ष ही तो जीवन है।

आपका संघर्षमय जीवन दीर्घकाल तक सब विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर गतिमान रहे व सफलता प्राप्त करे। ऐसे जीवन अति मूल्यवान होते हैं। युग की आशा होते हैं प्रेरणा स्रोत होते हैं।

हां···तो जून मास का "जन-ज्ञान" मुझे मिला है। उससे पहले मार्च का मिला था जिसके ऊपर महात्मा "वेद भिक्षु" जी का चित्र छपा था उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर कुछ दिन हुए मैंने ५० रु० "हिन्दु रक्षा समिति" के लिये अनुदान स्वरूप मनिआर्डर द्वारा भेजे हैं आशा है मिले होंगे और पहुंचने पर सूचित करेंगी।

आपकी बहिन
सत्यवती शर्मा २६३

आदरणीया

जन-ज्ञान का प्रत्येक अंक अब बहुत कुछ नया दे रहा है। संस्कृति, व राष्ट्रीयता का मुख्य पत्र हम इसे कह सकते हैं।

आप—या संस्थान—निश्चित रूप से, इस कठिन समय में—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ृति के खिलाफ पन्ने लिख रहीं हैं।

मैं—क्या हर सच्चा भारतीय जनज्ञान के प्रति कृतज्ञ है।

अवध श्रीवास्तव
पत्रकार संघ विदिशा

समादरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते।

कृपया संलग्न सूचना अपने अमूल्य पत्र में छापकर अनुगृहीत करें। धन्यवाद।

भावात्क:
सुखदेवराज शास्त्री

सेवा में—

श्री सम्पादक जी,
जन-ज्ञान पत्रिका
नई दिल्ली—५

विशेष—सूचना छपने पर पत्रिका की प्रति अवश्य भेजकर कृतार्थ !

३ अगस्त—८६ को श्रीगुरु विरजानन्द स्मारक समिति करतारपुर का त्रैवार्शिक चुनाव श्री सत्यानन्द जी मुंजाल लुधियाना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें तीन वर्षों के लिए ट्रस्ट के प्रधान श्री शिव चन्द जी अग्रवाल, मन्त्री श्री चतुर्भुज मित्तल तथा कोषाध्यक्ष श्री यशफूल चन्द जी अग्रवाल करतारपुर पुनः निर्वाचित हुये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने अपने सुझाव गुरुकुल के कार्यों में सफलता हेतु रक्खे।

जन-ज्ञान पत्रिका
में
प्रकाशनार्थ

चतुर्भुज मित्तल
मन्त्री

आदरणीय बहन राकेश रानी जी,

आप पर लगाये गये ३८ मुकदमों से सरकार धर्म निरपेक्षता का ताज नहीं पहन सकती ! जिसमें अल्पसंख्यक बहुसंख्यक की दीवार खींची गई है। यदि अल्पसंख्यकों द्वारा बहुसंख्यक हिन्दू समाज को धर्मान्तरण द्वारा अल्पमत में आने का षड्यन्त्र किया जाता है तो इस षड्यन्त्र का पर्दाफाश करने वाली आप जैसी सुयोग्य देवी को वह सरकार ३८ मुकदमों से हतोत्साहित करना चाहती है। परन्तु आप इससे हतोत्साहित न होना जो सम्पूर्ण हिन्दू समाज आपके साथ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सदैव आप हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु निरन्तर लेखन की प्रक्रिया को गतिशील बनाकर हिन्दू समाज की चेतना जाग्रति प्रदान करती रहें जिससे हिन्दू समाज सजग होकर अपनी राष्ट्रीय गरिमा का सजग प्रहरी बन सके। आपके प्रति हमारी शुभ कामनाएं समर्पित हैं।

आपका भाई
अशोक कुमार उभर शोहरतगढ़ बस्ती

मां राकेशरानीजी,

सादर नमस्ते।

जन-ज्ञान का जून अंक पढ़ा तथा सम्पादकीय लेख भी पढ़ा! लेख पढ़ते-पढ़ते मन और शरीर से एक लख उठ गई। मैं नहीं जानता कि यह कैसा अनुभव है मगर इतना तो समझ सका हूं—अब अगर इस देश व धर्म की संस्कृति को बनाये रखना है तो अपने को वलिदान करने की बेला आ चुकी है।

प्रज्ञेय दूबे का नमस्ते

"ओ३म्"

आदरणीय दीदी जी

सादर चरण स्पर्श

सरकार ने आप पर एक मुकदमा और बढ़ा दिया है। यह जानकर बड़ा दुःख हुआ दीदीजी वह समय दूर नहीं है। जब हमारे दुश्मनों को तथा सरकार को मुंह की खानी पड़ेगी (सोना को तपाने पर ही निखार आता है)

हम स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी की घोषणा कि "गोवंश हत्या निरोध केन्द्रीय कानून न बना तो देश में १९६६ स भी बड़ा आन्दोलन होगा" इसका हार्दिक स्वागत करते हैं तथा कहते हैं यह आन्दोलन इतिहास का सबसे बड़ा आन्दोलन होगा संत विनोवा भावे की अन्तिम इच्छा हमारे हृदय को झकझोरती रहती है तथा दोष बनकर सुलगती रहती है। यह कथन सत्य है जा गाभक्त नहीं वह भारत भक्त नहीं।

दीदीजी सत्य के लिए आपको आज की 'तारावती' बनना पड़ेगा परमात्मा आपको अधिक स अधिक शक्ति प्रदान करे।

आपका
अनुज हरिप्रकाश दीक्षित भरतपुर उन्नाव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदमंत्रों के उपदेश

—पं० रघुनन्दन शर्मा

वेदों में मनुष्य मात्र के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान भरा पड़ा है। आवश्यकता इस बात की है कि श्रद्धा और आस्था के साथ ही वेदों की उपादेयता समझकर जीवन विज्ञान के रूप में इनका स्वाध्याय किया जाये। जन-ज्ञान में इसी दृष्टि से वेद ज्ञान की नियमित श्रृंखला प्रारम्भिक की जा रही है—सम्पादक।

प्रायः लोग कहा करते हैं कि मनुष्यों को ज्ञान की जितनी आवश्यकता है, वह सभी ज्ञान वेदों में—संहिताओं में—नहीं है, अर्थात् हमारे व्यवहार में आनेवाली ऐसी अनेक बातें हैं, जिनका वर्णन वेदों में नहीं है, इसलिए वेदों के साथ जब तक अन्य ग्रन्थों की शिक्षा भी सम्मिलित न की जाय, तब तक मनुष्य समाज का काम नहीं निकल सकता। सुनने में ये बातें ठीक प्रतीत होती हैं, पर जरा सा विचार करते ही इस आरोप में कुछ भी दम दिखलाई नहीं पड़ता। क्योंकि यह आरोप वर्तमान समाज के कल्पित व्यवहारों को देखकर उत्पन्न किया गया है और वैदिक शिक्षा के वास्तविक स्वरूप पर ध्यान नहीं दिया गया। वैदिक शिक्षा में कमी दिखलाई पड़ने के मुख्यतः ये तीन ही कारण हैं—

पहिला कारण यह है कि हमने जिन विषयों को, रीतिरिवाजों को और क्रियाकलापों को जितना महत्व दे रखा है, वे सबके सब वेद की दृष्टि में उतने ही महत्वपूर्ण नहीं हैं। उदाहरणार्थ हमने दत्तक आदि पुत्रों को लेकर अपनी सम्पत्ति के स्वामी बनने की रीति को धर्मशास्त्रों में लिख रक्खा है, पर वेद इस रीति को स्थान नहीं देते। इसका कारण यही है कि वैदिक धर्मानुसार कोई आदमी किसी सम्पत्ति का वंशपरम्परागत मालिक नहीं हो सकता। दूसरा कारण यह है कि शाखाप्रचारकों ने वेदों के मन्त्रों को मनमाने स्थानों में रख दिया है, जिससे पूरे प्रकरण की बात ही समझ में नहीं आती। परिणाम यह होता है कि अनेक विषयों में हमारा प्रवेश ही नहीं होता। इसी तरह तीसरा कारण वेदों के अनेक शब्दोंके अर्थों की हमारी अनभिज्ञता है। वेद में सैंकड़ों शब्द ऐसे हैं, जिनका ठीक ठीक अर्थ नहीं होता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इससे भी अनेक विषयों का ज्ञान यथार्थ रूप से हम तक नहीं पहुंचता। इस लिए वेद में यदि किसी मनुष्योपयोगी आवश्यक विषय का प्रत्यक्ष वर्णन न दिखाई पड़े, तो उसका यह मतलब हरगिज नहीं है कि वेद में उसका बीज ही नहीं है।

वेद के समस्त शब्दों के अर्थों का विस्फोटन करके और समस्त मन्त्रों को विषयवार एक जगह एकत्रित करके कुछ दिन मन लगाकर स्वाध्याय करने से वेदों में मनुष्योपयोगी समस्त आवश्यक ज्ञान बीजरूप से निकल सकता है, इसमें सन्देह नहीं। परन्तु हर समय के योग्य, हर मनुष्य या समाज के योग्य और हर स्थान में व्यवहार करने योग्य बातें वेदों से नहीं निकल सकतीं। इसका कारण यही है कि वेदों में प्रावेशिक ज्ञान ही शिक्षा है, कल्पित ज्ञान की नहीं। यदि हम अपने कल्पित रीतिरिवाजों को हटा दें और शब्दार्थों को खोलकर और मन्त्रों को विषयवार करके पढ़ें, तो उनसे इतनी शिक्षा मिल सकती है कि जिसके द्वारा मनुष्य की बुद्धि इस योग्य हो जाय कि वह अपना समस्त कार्य कर ले। परन्तु जिन विषयों को वेदों ने अनावश्यक समझा है, वे बात वेदों से नहीं निकल सकतीं, चाहे भले हमने उनको अपने समाज में-कर्मधर्म में-सम्मिलित ही क्यों न कर लिया हो। नमूने के लिए दत्तक पुत्र की भाँति यज्ञोपवीत को भी लीजिये। संहिताओं में यज्ञोपवीत के लिए सूत, रेशम, ऊन आदि का वर्णन नहीं आता। वहां मेखला का ही जिक्र है। मेखला का अर्थ घेरा है। किसी पदार्थ गले या ऊपर में एक घेरा-माला-पहना देना है। अर्थात चिह्न मात्र कर देना है। ब्राह्मणग्रन्थों ने भी इसे बहुत नहीं बढ़ाया। परन्तु सूत्रों ने बढ़ाया है। उन्होंने ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य के लिए सूत्र में भेद कर दिया है। किन्तु, यज्ञोपवीत कितना लम्बा हो, यह उन्होंने भी नहीं कहा। इसे आधुनिक ग्रन्थों ने ही बढ़ाया है यद्यपि इस प्रकार। कई बार विधियां बढ़ाई गई हैं, तथापि यज्ञोपवीत में कितनी गांठें हों और उसे किसके हाथ से नापना चाहिये आदि बातें फिर भी रह गई हैं। इसी तरह कान में चढ़ाना या शिर में लपेटना आदि बातेंफिर रह गई हैं, जिनको बहुत ही आधुनिक साहित्य ने पूरा किया है।इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यही है कि हम अपने रिवाजों को जैसे जैसे बढ़ाते जाते हैं, वैसे ही वैसे उस कल्पित रिवाज कोपुष्ट करने के लिए विधिवाक्य भी लिखते जाते हैं। मानो आगे आगे हम और पीछे पीछे शास्त्र दौड़ रहे हैं। हम शास्त्र के अनुसार नहीं चल रहें, प्रत्युत शास्त्र हमारी कल्पना के अनुसार चलते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

पर वेदों का [illegible] नहीं है, वेद किन्हीं रिवाजों के बाद नहीं बने, प्रत्युत उन्होंने ही आवश्यक रिवाजों को जन्म दिया है। यज्ञोपवीत के लिए वेद इतना ही आवश्यक समझते हैं कि दूसरे कुल में जाने पर विद्या आरम्भ करने पर और मनुष्य शरीर के अन्तिम वय के प्राप्त करने वाले व्रत को धारण करने पर आवश्यक है कि उसे कोई ऐसा चिन्ह दिया जाय, जिससे वह पहिचाना जा सके। समाज उसे उस चिन्ह से पहिचाने, जिससे शिक्षा, सत्कार और सहायता आदि देने में सुविधा हो। यह चिन्ह चाहे जैसा हो, पर शरीर में सदैव रह सकने वाला हो। वह एक माला अर्थात मेखला के ही रूप में अधिक उपयोगी हो सकता है और कमर में, गले में या कन्धों में ही उसका रहना अधिक उचित मालूम पड़ता है। यही कारण है कि पारसी लोग इसे कमर में बांधते हैं। पहिले जमाने में बहुत से वैदिक आर्य भी परिकर बन्धन की तरह उसे पहिनते थे *। परन्तु शाखाभेद से जैसे-जसे पढ़ाई के तरीके बदलते गए और गोत्र बढ़ते गये, वैसे-वैसे उपवीत का ढंग भी बदलता गया और भिन्न भिन्न होता गया। यज्ञोपवीत आजकल जिस अवस्था में पहुंचा है, यदि वह सारी दशा आप वेदों में ढूंढ़ना चाहें, तो नहीं मिल सकती। लड़का पढ़ने जाने लगे और मातमा उसे शादी का लोभ देकर वापस कर ले, इस विधि पर न कोई संहिता की श्रुति है, न ब्राह्मणग्रन्थों की गाथा है, न सूत्रों का सूत्र है और न निर्णयसिन्धु की कोई नदी है। इसके लिए तो आल्हखण्ड में भी कोई प्रमाण न मिलेगा। कहने का मतलब यह है कि वेदों को अपने रिवाजों का गुलाम बनाना उचित नहीं है। वेदों में जो शिक्षा बीजरूप से है, उसको ऋषियों ने सुविधा के लिए विस्तारपूर्वक लिखकर अपने जमाने में हमेशा प्रचलित किया है। ब्राह्मणग्रन्थों के पूर्व भी एक महान् साहित्य था, उसमें भी कुछ था, अब भी कुछ और आगे भी कुछ होगा, पर वेद इस, सबके जवाबदार नहीं हैं। उनमें तो जो कुछ है वह इतना ही है कि वह मनुष्य की बुद्धि को सोचने, विचार लायक कर देता है और इस योग्य बना देता है कि मनुष्य अपनी भलाई के नियम उस बीज के अनुसार लगा ले।

इस प्रकार से मूल और भाग्य सदैव एक साथ ही बनता रहता है, पर भाष्य मूल नहीं हो जाता। मनु वैवस्वत के ही समय में वेदों का प्रादुर्भाव हुआ था, किंतु उसी समय में ब्राह्मण भी बनाने पडें थे। हम देखते हैं कि वेदों में कहीं नही लिखा कि अमुक काम करते समय अमुक मन्त्र पढ़ो, पर ब्राह्मणग्रन्थों में है। इससे पाया गया कि ब्राह्मणग्रन्थों ने एक नया ढंग यह पैदा किया कि कोई कार्य मौन होकर न किया जाय, प्रत्युत मन्त्र कहकर ही किया जाय। इसमें कोई पाप नहीं था, इसीसे इस पर कोई आपत्ति भी नहीं हुई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
पर यदि कोई मार्जन करते समय 'आपो हिष्ठा' न पढ़े, तो उसका मार्जन बिगड़ नहीं सकता और स्नान के समय यदि कोई गंगाष्टक न पढ़े, तो उसके स्नान में कोई त्रुटि नहीं हो सकती। क्योंकि स्नान अलग चीज है और मन्त्र पढ़कर स्नान करना अलग चीज है। न पहिले में कोई पाप है, न दूसरे में कोई पुण्य है। किन्तु प्रसन्नता तो यह है कि आज्ञा और विधि का पालन कैसे किया जाय ? इस प्रश्न का उत्तर सदैव यही रहा है कि वेदों की बोलरूह सूचना पर विद्वानों के विचारों से जो विधि निर्धारित हो, वही कर्त्तव्य समझा जाय। पर स्मरण रखना चाहिये कि वेदों की सूचना अपरिवर्तनशील है और दूसरे विद्वनों के विचार परिवर्तनशील हैं। पहिले में किसी का मतभेद नहीं हो सकता, दूर में हो सकता है। यज्ञोपवित करना पहिला पक्ष है, इनमें मतभेद नहीं हो सकता। पर कब करना चाहिये, इसमें मतभेद हो सकता है। इसीलिए गृह्यसूत्रों में कोई कहता है कि ब्राह्मण का यज्ञोपवीत बसन्त में करना चाहिये और कोई कहता है कि सब ऋतुओं में करना चाहिये। वेद की आज्ञा और विद्वानों की विधियों में पहिली बात दूसरी मोहताज नहीं है, पर दूसरी बात पहिली की मोहताज है। यज्ञोपवीत माघ में न होकर चाहे पोष में हो, पर हो जरूर यही मतलब है।

इस पर प्रश्न हो सकता है कि वेदों ने माघ और पौष का भी निर्णय क्यों नहीं कर दिया ? और रेशम तथा सूत की विधि भी क्यों नहीं बतला दी ? इस पर हमारा नम्र निवेदन यह है कि जो वैदिक शिक्षा समस्त पृथिवि पर बसे हुए मनुष्यों के लिए है, उसमें इस प्रकार का वर्णन हो ही नही सकता। क्योंकि जिले जिले की परिस्थिति अलग अलग है, पदार्थों की उपज भिन्द भिन्न है और ऋतुओं के प्रभाव अलग अलग हैं। ऐसी दशा में यदि सभी कुछ वेद ही लिखने बैठें, तो वेदों के पुस्तक तो एशियाटिक सोसाइटी का पुस्तकालय बन जाय, वेदों के गौरव और मनुष्य की स्वाधीनचिन्ता में विघ्न उपस्थित हो जाय, धर्म और आपद्धर्म में कोई फर्क ही न रहे और संकट के समय मनुष्य अपना त्राण ही न सोच सके। इसलिए क्रियाकलाप, आपद्धर्म और मनुष्यों का सामयिक उपयोगिता का विस्तृत वर्णन न करने से वेद अधूरे नहीं समझे जा सकते। वे पूर्ण हैं। वेद परलोक की पूर्ण और विस्तृत शिक्षा देते हैं, तथा लोक की शिक्षा में मनुष्य को इस योग्य बना देते हैं कि उसका एक भी आवश्यक कार्य कभी रुक ही न सके।

---

* लोकमान्य तिलक महोदय ने इस बात को 'ओरायन' ग्रन्थ में सप्रकाण लिखा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नमूने के तौर पर हम यहां वेदों के कुछ सरलार्थ मन्त्रों को उद्धृत करके दिखलाते हैं कि वेद प्रत्येक आवश्यक विषय की शिक्षा किस प्रकार देते हैं। यहां हम एक एक विषय के दो दो चार चार मन्त्र ही देंगे। यह वेदविषयों की एक सूची मात्र ही है। इन विषयों से संबंध रखने वाले वेदों में अनेकों मन्त्र हैं, पर सबकेलिखने की आवश्यकता नहीं है। हमने इस मंत्रसूचि और विषय प्रतिपादन में अपने ढंग का क्रम दिया है। इस क्रम से वेदों के ज्ञान की स्पष्टता होती है। सबसे पहिले हमने मनुष्यों की इच्छाओं के मन्त्र लिखे हैं। मनुष्य कीसमस्त इच्छाओं का समावेश बड़े बड़े सात स्तम्भों में हो जाता है। ये इच्छाएं गृहस्थाश्रम से ही पूरी हो सकती हैं, इसलिए हमने इच्छाओं के बाद गृहस्थाश्रम के मन्त्र रक्खे हैं। गृहस्थ का निर्वाह बिना उत्तम सामाजिक व्यवहार के धारण किए हो ही नहीं सकता, क्योंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, इसलिए हमने तीसरा नम्बर सामाजिक व्यवहार के मंत्रों को दिया हैं। परन्तु वह आदमी अच्छे सामाजिक व्यवहार नहीं कर सकता, जो सदाचारी नहीं है, इसलिए हमने चौथा नम्बर सदाचार के मंत्रों को दिया है। सदाचार कभीं सुदृढ़ नहीं हो सकता, जब तक मनुष्यों को गर्भ से लेकर यज्ञोपवीत अर्थात आचार्यकुलवास तक के संस्कारों से सुसंस्कृत न किया जाय, इसलिए हमने संस्कारों के मंत्रों को पांचवा स्थान दिया है। संस्कारों से सदाचार की पुष्टि होती है और समाज पवित्र भी होता है, पर बिना जीविका के उसका निर्वाह नहीं हो सकता, इसलिए हमने छटे नम्बर में जीविका के मंत्रों को रक्खा है। इसमें भौगोलिक ज्ञान और व्यवसाय से सम्बन्ध रखने वाली समस्त बातों के मंत्र आ गये हैं।

जीविका के आगे समाज की रक्षा का प्रश्न आता है। बीमारी से शरीर-रक्षा, कलह और पाप से समाजरक्षा और बाह्य शत्रुओं से राष्ट्ररक्षा करनी पड़ती है, इसलिए आयुर्वेद, यज्ञ और राज्यव्यवस्था के मंत्रों को एकत्रित करके जीविका के बाद सातवें नम्बर में रखा है। इसमें आगे परलोकचिन्ता के मंत्र हैं। इनमें सबसे पहिली बात सृष्टि की उत्पत्ति की है। सृष्टि की उत्पत्ति के कारणों का समूह ही परलोक है, इसलिए हमने परलोक से संबंध रखने वाले जीव, ब्रह्म, बन्ध, मोक्ष और पुनर्जन्म आदि विषयों के मंत्रों का समावेश आठवें नम्बर में किया है। इस तरह से सारांशरूप से हमने लोक-परलोक से संबन्ध रखनेवाले प्रायः सभी विषयों के मंत्रों को लिख दिया है। हमारा अनुमान है कि जितने विषयों के मंत्र हमने दिये हैं, उतने विषयों में प्रवेश हो जाने पर मनुष्य की बुद्धि इस योग्य हो जाती है कि वह अपना भला बुरा-हानि लाभ-सोच ले और अपनी उन्नति कर लें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य की इच्छाएं

सबसे पहिले मनुष्य की इच्छाओं को लीजिए। मनुष्य की इच्छाएं सात भागों में विभाजित हैं। (१) वहुत दिन जीने की इच्छा। (२) स्त्री, पुत्र, रति, शोभा, शृंगार की इच्छा। (३) खाने पीने, पहिनने ओढ़ने, मकान, गृहस्थी, बाग बगीचे और खेत तथा पशुओं की इच्छा। (४) यश और मान आदि की इच्छा। (५) विद्या, ज्ञान, विज्ञान और मालूमात की इच्छा। (६) अपने साथ कोई अन्याय न करे, अर्थात् न्याय की इच्छा और (७) बार बार जन्म-मरण के दुःख से छूटकर मोक्षप्राप्ति की इच्छा मनुष्यमात्र को रहती है। वेदों ने गायत्री मन्त्र के द्वारा इन्हीं इच्छाओं की पूर्ति के लिए नित्य परमेश्वर से प्रार्थना करने का उपदेश किया है। गायत्री का माहात्म्य वर्णन करते हुए अथर्ववेद १९।७१।१ में कहा गया है कि—

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

अर्थात् प्रचोदयात् पदान्तवाली और द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री की मैं इसलिए स्तुति करता हूँ कि वह मुझको आयु, वल, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन और वैदिकज्ञान देकर ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्षपद को पहुंचावे। उस आदेश से ज्ञात हुआ कि मनुष्यमात्र की ये इच्छाएं स्वाभाविक हैं। फ्रीनॉलॉजीवाले भी बतलाते हैं कि मस्तिष्क में ज्ञान, मान, अर्थ, काम, आयु, विज्ञान और न्यायधर्म के ही प्रधान सात स्थान हैं। अन्य स्थान तो इन्हीं के अन्तर्गत इन्हीं की शाखाएं हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये इच्छाएं नसर्गिक हैं। इन सबमें दीर्घ जीवन की इच्छा सर्वप्रथम है, इसलिए सबसे पहिले हम दीर्घजीवन के ही मन्त्रों का नमूना दिखलाते हैं। यजुर्वेद में लिखा है कि—

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चका जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुगन्तोः॥
(यजु० २५।२२)

अर्थात् हे विद्वानो! मनुष्य की आयु सौ वर्ष नियत है, अतः जब तक हमारे शरीरों की जरा अवस्था न हो जाय और हमारा पुत्र भी पिता न हो जाय तब तक हम जिएं अर्थात् सौ वर्ष के अन्दर हमारी आयु क्षीण न हो। इतना ही नहीं कि हम किसी प्रकार सौ वर्ष तक जिएं, प्रत्युत आरोग्यता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और अन्न के साथ जिएं, जैसा कि लिखा है कि—

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणयाम।

शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।। (यजुर्वेद ३६।२४)

अर्थात् ज्ञानियों का हित करने वाला शुद्ध ज्ञान नेत्र उदित है। उससे हम सौ वर्ष देखें, सौ वर्ष जिएं, सौ वर्ष सुनें, सौ वर्ष बोलें, सौ वर्ष तक दीन न हों और सौ वर्ष से भी अधिक दिन तक आनन्द से रहें।

वेद में दीर्घ जीवन की इस इच्छा के आगे काम की इच्छा का वर्णन इस प्रकार है—

कामस्तदग्रे समवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।
स काम कामेन बृहता सयोनी रायस्पोषं यजमानाय धेहि ।।
(अथर्व० १९।५२।१)

अर्थात् जो 'काम' मन में बीजरूप से है, वह पहिले हुआ। हे काम! तूने बहुत बड़े काम का विस्तार कर दिया है, इसलिए अब धन दे।

प्रियो देवानां भूयासम्। प्रियः प्रजानां भूयासम्।
प्रियः पशूनां भूयासम्। प्रियः समानानां भूयासम् ।।
(अथर्व० १७।१।२—५)

अर्थात् देवों के लिए, प्रजा के लिए, पशुओं के लिए और समानों के लिए प्रिय होऊं। कामना से सम्बन्ध रखने वाले इन दोनों मन्त्रों में कहा गया है कि मन और रेत ही काम का मूल है। इस काम से ही आगे बड़ी-बड़ी पुत्रादि की कामनाएं उत्पन्न होती हैं और इसीसे बनाव चुनाव, शोभा शृंगार और ठाटबाट की आवश्यकता होती है। इन सबका मूल मन और रेत अर्थात् रति ही है। रति ही प्रजा, पशु और अन्नादि धन की ओर विशेष प्रवृत्ति उत्पन्न करती है। क्योंकि दीर्घजीवन और कामजन्य स्त्रीपुत्रादिकों के लिए ही धन की इच्छा होती है।

मनुष्य को इस धन की इच्छा किस प्रकार रहती है, उसका नमूना वेद ने निम्न मन्त्र में दिखलाया है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एकपाद् भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपादित्रपादमभ्येति पश्चात् ।
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे संपश्यन्पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः ।।
(ऋ० १० । ११७ । ८)

अर्थात् एक गुणा धन रखनेवाला अपने से दुगुने धन रखने वाले के मार्ग का आक्रमण करता है, दुगुने धनवाला तिगुने धन वाले के पीछे दौड़ता है और चौगुने धनवाला अपने से दूने धनवाले को महत्ता को प्राप्त होता है। अर्थात् मनुष्य धनवानों को देखकर स्पर्धा करते हुए अधिकाधिक धन प्राप्त करने की इच्छा रखता है।

इस धन की इच्छा के आगे मान की इच्छा होती है। वेद में मान की इच्छा का नमूना इस प्रकार दिखलाया गया है—

यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन् तेज आहितम् ।
एवा मे वरणो मणिः कीर्ति भूतिं नि यच्छतु ।
तेजसा मा समुक्षतु यशसा मनस्तु मा ।। १७ ।।
यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च नृचक्षसि । एवा० ।।१८ ।।
यथा यशः पृथिव्यां यथास्मिन् जातवेदसि । एवा० ।। १९ ।।
यथा यशः कन्यायां यथास्मिन् संभृते रथे । एवा० ।। २० ।।
यथा यशः सोमपीथे मधुपर्के यथा यशः । एवा ।। २१ ।।
यथा यशोऽग्निहोत्रे वषट्कारे यथा यशः । एवा० ।। २२ ।।
यथा यशो यजमाने यथास्मिन् यज्ञ आहितम् । एवा० ।। २३ ।।
यथा यशः प्रजापतौ यथास्मिन् परमेष्ठिनि । एवा० ।। २४ ।।
यथा देवेष्वमृतं यथैषु सत्यमाहितम् । एवा० ।। २५ ।।
अथर्व० १० । ३)

अर्थात् जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, पृथिवी, ब्रह्मचारिणी कन्या, मधुपर्क और सोमपानप्राप्त विद्वान्, अग्निहोत्री, यज्ञ करने वाला यजमान, परमेष्ठी और प्रजापति यश और कीर्ति को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार कीर्ति, [illegible] और यश मुझको भी प्राप्त हो। इन मन्त्रों में यश, कीर्ति और मान के लिए प्रार्थना की गई है। क्योंकि लिखा है कि 'सर्वे' 'नन्दन्ति यशसा' अर्थात सबको यश से आनन्द मिलता है।

इस मान की इच्छा के आगे वेद में ज्ञान की इच्छा का वर्णन इस प्रकार है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥
(यजु० ३२ । १४—१५)

अर्थात् जिस मेधा (ज्ञान) की देवता और पितर उपासना करते हैं, उस मेधा से हे परमेश्वर! मुझे शीघ्र ही मेधावी कीजिये। यह मेधा मुझको वरुण, अग्नि, प्रजापति, इन्द्र, वायु और परमात्मा देवे। अर्थात् इन सब पदार्थों का ज्ञान मुझे शीघ्र हो। इसलिए--

मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये। मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम
(हविषा वयम् ॥ (अथर्व० ६ । ४१ । १)

अर्थात् मन, अन्तःकरण, बुद्धि, विचारशक्ति, ज्ञानशक्ति, मति, श्रवणशक्ति और दृष्टिशक्ति की उन्नति के लिए हम सब यज्ञकर्म करें। ज्ञानेच्छा के आगे वेद में न्याय की इच्छा इस प्रकार बतलाई गई है—

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारं च हरासि मे
निहारं निहराणि ते स्वाहा ॥ (यजु० ३ । ५०)

अर्थात् मुझे दे और मैं तुझे दूं। तू उत्तम गुण मुझमें धारण कर और मैं तुझमें धारण करूं। यह मैं लेता हूं और यह तू ले, अर्थात् परस्पर न्याययुक्त व्यवहार हो। कैसा सुन्दर न्याय का आदर्श है! इसके आगे परमपद की इच्छा का वर्णन इस प्रकार है—

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं मतसः परस्तात।
तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥
(यजु० ३१ । १८)

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदचः प्रमुद आसते।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधि···॥
(ऋ० ९ । ११३ । ११)

अर्थात् मैं उस अन्धकार से परे महान् प्रकाशमय सूर्यतुल्य परमात्मा को जानता हूं। उसी के जान लेने से अमृतत्व प्राप्त होता है इसके सिवा और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इसलिए जहाँ आनन्द ही आनन्द है और जहाँ सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं, उस मोक्षधाम में मुझे अमर कीजिये। इन मन्त्रों से दीर्घातिदीर्घ जीवन अर्थात् अमृतत्व की महान् इच्छा वर्तमान है। संसार में बहुत दिन जीने की जो इच्छा पाई जाती है, वह इसी अनन्त जीवन की अभिलाषा है। इस प्रकार से मनुष्य की ये सातों स्वाभाविक इच्छाओं को दर्शाने वाले मन्त्र वेद में मौजूद हैं। परन्तु ये इच्छाएं बिना गृहस्थाश्रम के पूर्ण नहीं हो सकतीं।

गृहस्थाश्रम

उपर्युक्त इच्छाएं बिना गृहस्थाश्रम के पूरी नहीं हो सकतीं, इसलिए वेदों में गृहस्थाश्रम का पर्याप्त वर्णन है। यहाँ हम नमूने के तौर पर गृहस्थाश्रम की खास-खास बातें लिखते हैं। सबसे पहिले देखते हैं कि वेदमन्त्रों के अनुसार गृहस्थ की हालत कैसी होनी चाहिये। अथर्ववेद में लिखा है कि—

> इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
> क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे॥ (ऋ० १०। ८५। ४२)

अर्थात् किसी से विरोध न करो, गृहस्थाश्रम में रहो, पूर्ण आयु प्राप्त करो, पुत्र और पौत्रों के साथ खेलते हुए और आनन्द करते हुए अपने ही घर में रहो और घर को आदर्शरूप बनाओ। इसके आगे यह दिखलाते हैं कि गृहस्वामी दंपति का परस्पर कैसा आदर्श होना चाहिये। ऋग्वेद उपदेश करता है कि—

> समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
> सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ॥
> (ऋ० १०। ८५। ४७)

अर्थात् संसार की समस्त शक्तियाँ और विद्वान् हम दोनों—पति-पत्नी—को अच्छी प्रकार जानें, हम दोनों के हृदय जल के समान शान्त हों और हम दोनों की प्राणशक्ति, धारणशक्ति परस्पर कल्याणकारी हो। यह वैदिक दम्पति का आदर्श है। अब देखना चाहिये कि इस वैदिक दम्पति का घर कैसा है। वेदमन्त्रों के आदेशानुसार सर्वसाधारण के घर बहुत ही सादे होने चाहियें। अथर्ववेद में लिखा है कि—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऊर्जस्वती पयस्वती पृथिव्यां निमिता मिता ।
विश्वान्नं बिभ्रती शाले मा हिंसीः प्रतिगृह्णतः ।।
(अथर्व० ६ । ३ । १६)

तृणेरावृता पलदान् वसाना रात्रीव शाला जगतो निवेशनी ।
मिता पृथिव्यां तिष्ठसि हस्तिनीव पद्वती ।।
(अथर्व० ६ । ३ । १७)

या द्विपक्षा चतुष्पक्षा षट्पक्षा या निमीयते ।
अष्टापक्षां दशपक्षां शालां मानस्य पत्नीमग्निर्गर्भ इवा शये ।।
(अथर्व० ६ । ३ । २१)

अर्थात् उपजाऊ और पानीवाली भूमि पर छोटी सी निर्वाहयोग्य जिसमें समस्त आवश्यक अन्न भरे हैं, ऐसी है शाला ! तू अपने ग्रहणकर्ता (निवासी) को मत मारना। तृण से छाई हुई और तोरण बन्दनवारों से सजी हुई है शाला ! तू सबको रात्रि के समय शान्ति देने वाली है और लकड़ी के खम्भों पर हस्तिनी की भांति थोड़ी सी जमीन पर स्थित है। जो शाला दो छप्पर-वाली, चार छप्परवाली, छै छप्परवाली और जो आठ तथा दश छप्परवाली बनाई जाती है, उस इज्जत बचानेवाली शाला में मैं जठराग्नि और गर्भ के समान निवास करता हूं। यह है वैदिक घरों की सादगी। अब देखना चाहिए कि इन घरों में खाद्य और पेय पदार्थों के तैयार करने वाली गृहस्थी का कैसा वर्णन है। ऋग्वेद में लिखा है कि—

यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे । उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ।।१।।

यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या कृता । उलू० ।।२।।
यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं च शिक्षते । उलू० ।।३।।
तत्र मन्थां विबध्नते रश्मीन्यमितवा इव । उलू० ।४।।
यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूख क यु़ज्यसे ।
इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः ।।५।। (ऋ० १ । २८)

अर्थात् जहां बड़ा स्थूल पत्थर (चक्की) नीचे ऊपर चलता है, जहां दो जंघाओं के बीच में सिलबट्टा चलता है, जहां स्त्रियां पदार्थों का धरना, उठाना और रांधना पकाना जानती हैं, जहां मथानी को रस्सी से बांधकर दही मथा जाता है और जहां घर-घर में उलूखल मुसल चलता है, वे घर ऐसे प्रकाशित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होते हैं, जैसे जय के समय दुन्दुभि प्रकाशित होती है। इन वैदिक घरों में चक्की, सिलबट्टा, उखली मूसल और मथानी के शब्द दुन्दुभि के समान अन्न चाहने वालों को घोषित कर रहे हैं और गृहदेवियाँ पदार्थों के धरने उठाने और रांधने, पकाने में लगी हुई हैं। इन घरों में जिस प्रकार अन्नदान की धूम मची हुई है, उसी तरह घी-दूध की भी धारा बह रही है। अथर्ववेद में लिखा है कि—

चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णां उदकेन दध्ना।
एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना
उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः॥ (अथर्व० ४।३४।७)

अर्थात् चार-चार घड़े दूध और चार-चार घड़े पानी चारों ओर देता हूं। ये सब आपको स्वर्ग में—सुखस्थान में पोषण पहुंचावें।

पूर्णं नारि प्र भर कुम्भमेतं घृतस्य धाराममृतेन संभृताम्।
इमां पातॄनमृतेना समंग्धीष्टापूर्तमभि रक्षात्येनाम्॥
(अथर्व० ३।१२।८)

अर्थात् हे स्त्री! तू दूध और घी को घड़ों में भरकर उनकी धारा से इन पीने वालों को तृप्त कर और वापी कूप तड़ाग तथा दान आदि सब प्रकारों से इनकी रक्षा कर।

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन् (यजुर्वेद २।३४)

अर्थात् बलकारक जल, घृत, दूध रसयुक्त अन्न और पके हुए तथा टपके हुए मीठे फलों की धारा बह रही है, अतः हे स्वधा में ठहरे हुए पितरो! आप तृप्त हों। इन मन्त्रों के अनुसार वैदिक घरों में देव, ऋषि और पितरों की तृप्ति के लिए घी, दूध और फलों का विशाल आयोजन दिखलाई पड़ता है। इतना ही नहीं प्रत्युत वैदिक गृहस्थ अपने इष्टमित्रों, अतिथियों और क्षुधापीड़ित मनुष्यों को किस प्रकार अन्न, जल और सेवा से तृप्त करने के लिए बुला रहे हैं, वह भी देखने योग्य है। अथर्ववेद में लिखा है कि—

ऊर्जं बिभ्रद् वसुवनिः सुमेधा अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण।
गृहानैमि सुमना वन्दमानो रमध्वं मा बिभीत मत्॥१॥
इमे गृहा मयोभुव ऊर्जस्वन्तः।

 (शेष पृष्ठ १२ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

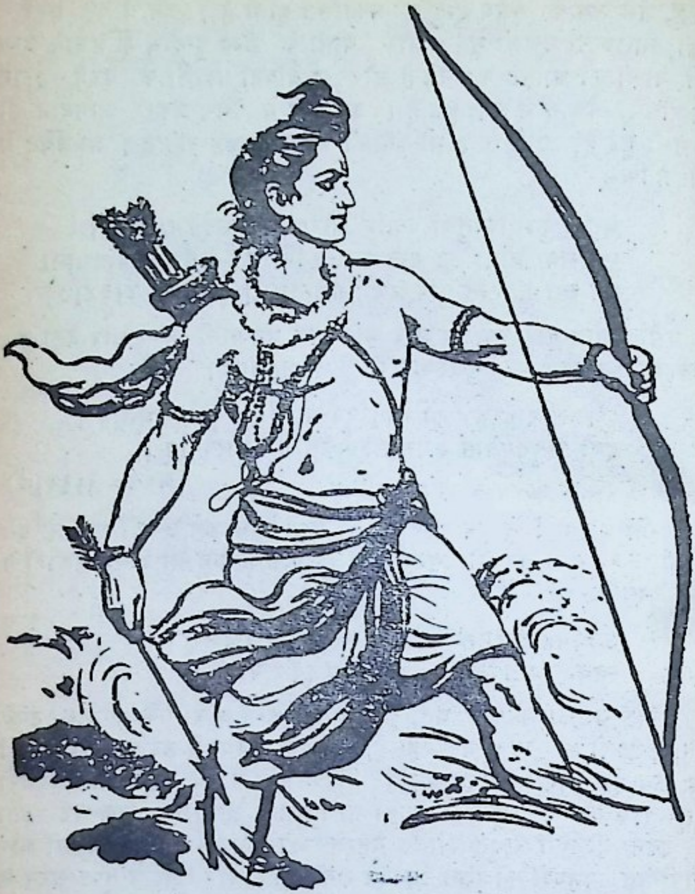

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विजयादशमी १० अक्तूबर पर विशेष

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की विजय गाथा

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का सम्पूर्ण जीवन आदर्श मनुष्य बनने का मार्ग-दर्शन प्रस्तुत करता है। इसलिए दुनिया भर में राम कथा पद काव्य रचे गए हैं। श्रीराम का जीवन सदैव हमारे राष्ट्र और समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा। त्रेता युग में सरयू नदी के तट पर बसी हुई रम्य नगरी अयोध्या में श्रीराम का जन्म हुआ था। उस नगरी में महाराजा दशरथ राज्य करते थे। उन्हीं के पुत्र रूप में श्रीराम का जन्म हुआ था। सत्यनिष्ठ राजा दशरथ धर्म, अर्थ और काम का अनुष्ठान करते हुए अयोध्या नगरी का शासन किया करते थे। महाराजा दशरथ की शासन-व्यवस्था इतनी अच्छी थी कि नर नारी सुखपूर्वक राज्य में निर्भय भ्रमण करते थे।

राजा दशरथ को सभी भौतिक सुख प्राप्त थे लेकिन कोई सन्तान न होने से वे चिन्तित रहते थे। श्रृंगी ऋषि के आशीर्वाद से उन्होंने वेद मंत्रों के द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराया और यज्ञ समाप्त हो जाने के पश्चात् बारहवें मास में, चैत्र मास की नवमी को रानी कौशल्या की कोख से सर्वगुण सम्पन्न राम का जन्म हुआ। इसके पश्चात् कैकयी ने भरत, और सुमित्रा ने लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को जन्म दिया। राजा दशरथ ने अपने चारों पुत्रों को प्रकाण्ड पंडितों से शिक्षा दिलाई। इसलिए चारों ही पुत्र वेदों के विद्वान, परम तेजस्वी वीर और सर्वगुण सम्पन्न हुए। इनमें राम विशेष रूप से तेजस्वी, पराक्रमी और सर्वप्रिय हुए। भाई लक्ष्मण राम के अनन्य सेवक थे, वैसे तो चारों ही भाईयों में अपार स्नेह था।

जब ये चारों भाई वेदादि विद्याओं का अध्ययन कर तथा धनुर्विद्या आदि शस्त्र संग्राम में निपुण हो गए तब एक दिन महाराजा दशरथ अपने सभी मंत्रियों, गुरुजनों और बांधवों के साथ बैठे हुए उनके विवाह के बारे में विचार कर रहे थे कि तभी महातेजस्वी विश्वामित्र मुनि वहां पधारे। राजा दशरथ ने मुनि का भरपूर स्वागत किया और मुनि से आने का विशेष प्रयोजन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जानने की इच्छा करते हुए सेवा का अवसर प्रदान करने का अनुरोध किया। महामुनि विश्वामित्र ने कहा, राजन ! मैं किसी विशेष सिद्धि के लिए एक यज्ञ कर रहा हूं, मेरा यज्ञ पूर्ण होने ही वाला है लेकिन जब भी मेरा यज्ञ समाप्त होने को होता है, तभी महापराक्रमी तथा शस्त्र विद्या में निपुण मारीच और सुबाहु यज्ञवेदी पर मांस और रूधिर की वर्षा करने लगते हैं। मैं क्रोध नहीं करना चाहता इसलिए हे राजन् ! आप अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को मुझे दे दीजिए। अपने दिव्य तेज और पराक्रम से वे राक्षसों का विनाश करने में समर्थ हैं। दशरथ बड़े द्वन्द्व में पड़ गए। उन्होंने विश्वामित्र से बहुत कहा कि आप मुझे आज्ञा करें, मैं चलता हूं, सारी सेना को भी ले जाइए, पर राम को मत ले जाइये, परन्तु विश्वामित्र मुनि नहीं माने, वे राम को ले जाने की हठ पर ही अडिग थे इसलिए महाराजा दशरथ ने मुनि विश्वामित्र के सामने नतमस्तक होते हुए राम को वन के लिए विदा किया। राम के साथ लक्ष्मण ने भी उनका अनुगमन किया।

वन प्रान्तर में से गुजरते हुए सबसे पहले उन्हें राक्षसी ताड़का का सामना करना पड़ा और विश्वामित्र के आदेश पर उन्होंने ताड़का का वध किया। यज्ञस्थल पर पहुंचने के बाद विश्वामित्र ने यज्ञ समापन हेतु मौन साधना प्रारंभ की ही थी कि राक्षसराज मारीच और सुबाहू ने यज्ञवेदी पर मांस और रूधिर की वर्षा करने के लिए बढ़ चले। यह देखते ही महाबलि राम ने मारीच की छाती पर अस्त्र प्रहार किया और वह वहीं ढेर हो गया। तत्पश्चात् जैसे राक्षस सुबाहू आगे बढ़ा राम ने बड़ी फुर्ती से आग्नेय अस्त्र लेकर सुबाहू के 'हृदय पर प्रहार' किया जिसकी मार से वह तत्काल भूमि पर गिर पड़ा। इस प्रकार यज्ञ के विध्वंसक राक्षसों का संहार करने पर राम और लक्ष्मण की ऋषियों द्वारा प्रशंसा हुई। अगले दिन प्रातः ही ऋषि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को लेकर मिथिला में होने वाले धार्मिक यज्ञ में चले गए। राजा जनक के दरबार में ऋषि विश्वामित्र का भरपूर स्वागत हुआ, और विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण का परिचय भी राजाजनक को दिया।

अगले दिन प्रातः जनक के दरबार में सीतास्वयंवर का आयोजन था। स्वयंबर के लिए यह शर्त थी कि जो वीर शिव धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा देगा, जनकदुलारी सीता का विवाह उसी से कर दिया जायेगा। अब तक अनेक पराक्रमी राजा इस परीक्षा में असफल रह चुके थे, इसलिए महाराजा जनक भी प्रायः निराश हो थे कि कहीं उनकी पुत्री सीता इस कठिन प्रतिज्ञा के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारण अविवाहित तो नहीं रह जायेगी। किन्तु जब राम को धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए कहा गया तो उनके सुकुमार बदन को देखकर सब दरबारी चकित ही हुए कि भला कोमलतन राम कैसे शिवधनुष की प्रत्यंचा चढ़ा पायेंगे। परन्तु राम ने जैसे ही मुस्कराते हुए धनुष को उठाया, धनुष पल भर में टूट गया। राजा जनक भाव विभोर हो उठे और राजा दशरथ को अयोध्या से सादर बुलवाकर राम और सीता का विवाह सम्पन्न कराया गया।

शिव धनुष के भंग किये जाने की खबर से परशुराम बड़े क्रोधित हुए क्योंकि पराक्रमी परशुराम इसे अपना अपमान समझते थे। उन्होंने राम को चुनौती दी और अपने साथ लाए जमदग्नि ऋषि के धनुष पर वाण चढ़ाने का आह्वान किया। साथ ही इसके बाद मल्लयुद्ध के लिए-भी ललकारा, यदि विश्वामित्र की अनुमति लेकर राम ने पल भर में उस धनुष पर वाण चढ़ाकर खींचा और क्रुद्ध होकर परशुराम से कहा, आप ब्राह्मण हैं और पूज्य हैं इसलिए यह प्राणघातक वाण मैं आप पर नहीं छोड़ रहा हूँ। राम के इस प्रबल शक्ति परीक्षण से परशुराम भी नतमस्तक हो गए और अपने गन्तव्य को वापस चले गए। इस प्रकार इन विघ्न वाधाओं को समाप्त कर राम अयोध्या लौटे और सुखपूर्वक राजभवन में निवास करने लगे।

राम का सर्वश्रेष्ठ गुणों से भूषित देखकर एक दिन महाराजा दशरथ ने अपने बुद्धिमान मंत्रियों से निश्चय करके उन्हें युवराज बनाने का निश्चय किया तथा विभिन्न देशों के राजाओं को निमंत्रण भेज दिया। किन्तु शीघ्रता के कारण राजा ने केकय के राजा और जनक को नहीं बुलाया। राम के राज्याभिषेक के लिए सारी सामग्री जुटा ली गई। अयोध्या के मार्गों को वन्दनवारों से सजा दिया गया।

राम के अभिषेक के समाचार से सर्वत्र प्रसन्नता की लहर फैली हुई थी। लेकिन रानी कैकयी की कुटिल दासी मन्थरा को यह सब न सुहाया और उसने कैकयी को जाकर भड़काया कि तुझे राजा प्रेम नहीं करते, वह केवल दिखावा है इसीलिए तो राजा ने राम के राज्याभिषेक का निश्चय किया है और जानबूझकर भरत को ननिहाल से बुलाया तक नहीं है। कैकयी पर इस समाचार का उल्टा ही असर हुआ। उसने प्रसन्न होते हुए कहा, कि मेरे लिए राम और भरत में कोई अन्तर नहीं है। मैं राम के राज्याभिषेक से बहुत प्रसन्न हूं। लेकिन मन्थरा ने कैकयी को अनेक ढंग से भड़काया और उसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहा कि राम के राजा बनने पर तू कौशल्या की दासी बन जायेगी इसलिए अच्छा यही है कि तू भरत के लिए राजगद्दी प्राप्त कर और राम को वन में भेजने की योजना बना ताकि भरत निष्कंटक राज्य कर सके। अन्ततोगत्वा कैकयी पर मन्थरा का असर हो ही गया और वह अपनी मांग मनवाने के लिए कुपित होकर महल के एक कोने में जा पड़ी। उधर राजा दशरथ राम के राज्याभिषेक का प्रिय समाचार देने के लिए कैकयी के महल में जैसे ही पहुंचे यह हाल देखकर चकित रह गए। कैकयी से जब प्रेमपूर्वक इस प्रकार शोक-मग्न होने का कारण पूछा तो उसने पहले वचन देने की मांग की और कहा कि मेरे वचन पूर्ण करने की प्रतिज्ञा करोगे तब ही मैं वचन मांगूगी अन्यथा इसी तरह अन्न जल छोड़कर प्राण त्याग दूंगी। राजा दशरथ के आश्वासन देने पर कैकयी ने वर दो वर मांगे। पहला यह कि भरत का राजतिलक किया जाये और दूसरे वचन द्वारा मांग की कि राम को १४ वर्ष के लिए वनवास दिया जाय। ककयी के ये कठोर वचन सुनकर पितृवत्सल राजा दशरथ प्रकंपित हो उठे। उन्होंने कैकयी से कहा, तुम राजपाट कुछ भी मांग लो। समुद्र पर्यान्त जो कुछ भी इस धरती पर है, मैं तुझे दे सकता हूं पर राम को वन में भेजने की हठ न करो क्योंकि मैं राम के बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकता।

कैकयी ने सुमन्त द्वारा राम को बुलवाया। राम ने देखा कि पिता श्री महाराजा दशरथ की आंखों से अविरल अश्रु बह रहे हैं, कारण पूछने पर वे कुछ बताते नहीं हैं, बोलते समय उनकी जिह्वा को मानो लकवा मार गया हो। यह देखकर कैकयी ने स्वयं ही धृष्ठतापूर्वक कहा, 'तुम्हारे पिता वह सब नहीं कह पायेंगे जो वचन उन्होंने मुझे दिये हैं। एक बार युद्ध में घायल होने पर मैंने राजा की रक्षा की थी। उस समय मुझे राजा ने दो वर दिये थे जिन्हें मैं कभी भी मांग सकती थी। आज मैंने वे वचन मांग लिये हैं। पहला वचन ये है कि तुम्हारे बजाय भरत को राजतिलक किया जाये और दूसरा यह कि तुम १४ वर्ष के लिए वन में जाकर रहो। जब तक तुम इस नगर से प्रस्थान नहीं कर जाओगे, राजा स्नान तक नहीं करेंगे। राजा लज्जा के कारण तुमसे कुछ कह नहीं पा रहे हैं।

राम ने विनम्र भाव से कहा, माता ! इसमें द्वन्द्व की क्या बात

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। मैं तो पिताजी की आज्ञा से प्राण भी न्योछावर करने के लिए तयार हूं। आप भरत को बुलवाकर तिलक की तैंयारी कराइये। मैं इसी क्षण १४ वर्ष के लिए वन की ओर प्रस्थान करता हूं।

राम के वनवास का समाचार सुनकर माता कौशल्या अचेत होकर धरती पर गिर पड़ी। धर्मात्मा राम ने विलाप करती हुई माता को उठाया और कहा, माताजी, पिताजी के वचनों का पालन करना मेरा परम धर्म है। पिता की आज्ञा का पालन करने वाला कोई भी पुत्र हानि नहीं उठाता। इसके पश्चात राम ने प्रिय भाई लक्ष्मण को समझाया राम के समझाने पर लक्ष्मण का दुःख दूर तो हो गया किन्तु उसे हर्ष नहीं हुआ। इसके पश्चात् राम माता कौशल्या को अभिवादन कर वन की ओर चल दिये। पतिव्रता सीता ने भी राम के साथ वन जाने का आग्रह किया तो राम ने उन्हें समझाया कि वन का कष्टपूर्ण जीवन तुम कैसे सहन कर पाओगी, फिर तुम्हारा यह भी कर्तव्य है कि तुम सास श्वसुर की यहां रहकर सेवा करो। यह सुनकर सीताजी ने कहा, 'हे आर्य पुत्र ! पिता, माता, भ्राता, पुत्र तथा पुत्रवधु ये सब अपने-अपने पुण्यों को भोगते हैं, किन्तु केवल नारी ही अपने पति के भाग्य को भोगती है। इसलिए मुझे भी अपने साथ वन में चलने की अनुमति दीजिए। माता-पिता ने मुझे पति की सेवा करना ही सिखाया है इसलिए इस समय आप मुझसे कुछ और मत कहना। मैं आपके साथ वन में भी महल के समान ही सुखपूर्वक रहूंगी। राम को सीता के तर्कयुक्त आग्रह को स्वीकार करना पड़ा और उन्होंने सीताजी को अपने साथ वन में जाने की अनुमति प्रदान कर दी।

राम और सीता की बातें सुनकर लक्ष्मण राम के चरणों में प्रणाम करके बोले, यदि हिंसक जीवों से व्याप्त वन में जाने का निश्चय आपने कर ही लिया है, तो मैं भी धनुषबाण लेकर आपके पीछे-पीछे चलूंगा। इस प्रकार राम, सीता और लक्ष्मण तीनों वन में प्रस्थान करने के लिए पिता दशरथ से मिलने के लिए चल पड़े।

पिता दशरथ मनोहर मूर्ति राम को वल्कलधारी देखकर विचलित हो उठे. उन्होंने व्यथित हृदय से राम को वन जाने से रोकने के लिए तर्क दिया कि राम तुम वन में न जाओ और मुझे एक ओर बैठाकर अयोध्या का राज्य करो किन्तु मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने पिता को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वचन पालन का स्मरण कराते हुए कहा कि मेरा वन जाना ही उचित है। राजा ने सुमन्त को आज्ञा दी कि राम के साथ अपार धन-सम्पत्ति और स्वर्णाभूषण वस्त्रादि रथों में रखकर इन्हें वन में पहुंचाओ। इस पर राम ने विनम्रतापूर्वक कहा, पिताजी वनवास में इस धन संपत्ति का क्या प्रयोजन ? जब मैंने राजपाट त्याग दिया तो मुझे इन प्रलोभनों से क्या मोह ! मुझे तो वल्कल वस्त्र ही चाहिए। यह कहकर राम ने सारे स्वर्णाभूषण उतारकर भूमि पर रख दिये और कैकयी ने स्वयं उन्हें पहनने के लिए वल्कल वस्त्र लाकर दे दिये। राम, सीता और लक्ष्मण के प्रस्थान करते ही अयोध्या में हा-हाकार मच गया।

रथ में बैठकर राम सुन्दर वन में निकल गए। सबसे पहले वे निषाद जाति के राजा गुह के राज्य में ठहरे। गुह ने राम का बड़ा सत्कार किया। इसके पश्चात रथी सुमन्त ने राम से विदा ली। तत्पश्चात राम, लक्ष्मण और सीता गुह के राज्य से वन की ओर प्रस्थान करने के लिए नदी तट पर पहुंचे। नदी पार कर महावन में चलते-चलते गंगा-यमुना के संगम पर पहुंचे। सूर्यास्त के समय दोनों भाई सीता सहित भरद्वाज मुनि के आश्रम में पहुंचे। रात्रि को उन्होंने आश्रम में ही विश्राम किया। आश्रमवासियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। प्रातःकाल होते ही तीनों ने चित्रकूट पर्वत की ओर प्रस्थान किया। चित्रकूट पहुंचकर राम, लक्ष्मण और सीता ने मुनि बाल्मीकि के आश्रम में प्रवेश किया। मुनि ने उनका स्वागत किया।

उधर राम को वन में छोड़कर लौटे सुमन्त से राजा दशरथ ने राम के समाचार पूछे। यह सब सुनकर राजा बड़े शोकाकुल हुए। प्रातः उठे तो उन्होंने कौशल्या से कहा कि मुझे अपने विगत पाप का स्मरण हो रहा है जब मैंने शिकार के भ्रम में ब्राह्मण पुत्र श्रवण कुमार की हत्या कर दी थी और उसके असहाय वृद्ध माता-पिता ने मुझे श्राप दिया था कि हे राजा तूने हमारे एकमात्र आश्रय इकलौते पुत्र की हत्या की है अतः तू भी पुत्र शोक से पीड़ित होकर ही प्राण त्यागेगा। दशरथ ने कहा, कौशल्या व्यक्ति एक न एक दिन अवश्य ही अपने पाप का दण्ड भोगता है। यह कहते हुए शोकाकुल राजा दशरथ ने राम के वियोग में प्राण त्याग दिये।

इसके बाद राजपुरोहित वशिष्ठ भरत और शत्रुघ्न को लाने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए भेजा। भरत ने जब लौटकर सारी बदली हुई परिस्थिति को देखा और शोक में प्राण त्यागने वाले पिता के साथ जुड़ी सारी घटना को सुना तो उनका हृदय चीत्कार कर उठा। पिता की मृत्यु और अग्रज राम के वनवास का समाचार पाकर भरत ममहित हो उठे, और माता कैकयी से बोले, तुमने मेरे लिए राज्य नहीं मांगा है बल्कि घोर शोक, दुःख और ग्लानि मांगी है। माता-पिता की मृत्यु और अग्रज राम के वनगमन के बाद मैं इस राज्य का क्या करूंगा। राजा के दाह संस्कार के पश्चात् १३ दिन पश्चात मंत्रिगणों ने भरत से राज्यारोहण करा लेने का अनुरोध किया। यह सुनकर भरत ने कहा कि क्यों मुझे पाप का भागी बनाते हो। मेरे ज्येष्ठ भ्राता राम ही राजा बनेंगे और मैं १४ वर्ष वन में जाकर रहूंगा।

प्रातः उठते ही भरत विशाल सेना लेकर राम को वापस लेने चल दिये। विशाल सेना के साथ भरत को आते देखकर लक्ष्मण ने संदेह प्रकट किया कि भरत हम पर आक्रमण करने आ रहा है। तब राम ने संशय निवारण करते हुए कहा कि भरत ऐसा कदापि नहीं कर सकता, सच तो यह है कि प्राणों से भी प्रिय भरत जब अयोध्या में आया होगा तो यह सुनकर कि मैं जटा धारण कर और वल्कल वस्त्र पहनकर सीता और तुम्हारे साथ वन में चला आया हूं, शोक से व्याकुल होकर, स्नेह के कारण हमें देखने ही आया है, उसके आने का अन्य कोई कारण नहीं है। वह तो मुझे राज्य देने के लिए आया है। भरत जैसे आए, राम के चरणों में गिर पड़े।

तत्पश्चात् भरत ने राम से निवेदन किया कि हे भाई! आपने जो राज्य मुझे दिया, वह मैं आपको ही लौटा रहा हूं। सारी प्रजा आपको सिंहासन पर बैठा देखना चाहती है। तब राम ने भरत को समझकर कहा कि, हे भरत! मुझे पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन करना उचित नहीं है, अच्छा यही है कि तुम भी उनकी आज्ञा का पालन करो। जब राम वापस लौटने को तैयार नहीं हुए तो भरत ने कहा कि आप मेरी पादुकाओं पर एक बार खड़े हो जाइये। बस, मैं वल्कल वस्त्र पहनकर और पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर चौदह वर्ष तक आपकी प्रतीक्षा करूंगा। इस प्रकार पादुकाओं को लेकर भरत लौट गया।

भरत के विदा होने के पश्चात् रामचन्द्रजी ने उस स्थान से चल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देना उचित समझा ताकि अयोध्या से फिर कोई मोहवश बुलाने न आ जाय। चलते-चलते वे अत्रि मुनि के आश्रम में पहुंचे। मुनि की पत्नी अनुसूया ने सीता को पत्नी धर्म का उपदेश दिया। इसके पश्चात् राम ने दुर्गम वन की ओर प्रस्थान किया। वहां से वे दण्डक वन में पहुंच गए। वहां उन्होंने तपस्वियों के अनेक आश्रम देखे। वन में घूमते हुए उन्हें विराध नाम का राक्षस मिला। विराध ने सीताजी को छोड़ जाने की धमकी दी और कहा, यदि तुम इस स्त्री को नहीं छोड़ोगे तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा। इस पर श्रीराम ने अपने तीक्ष्ण बाणों से विराध का वध कर दिया। इसके बाद रामचन्द्रजी एक-एक करके अनेक ऋषियों के आश्रमों में गये। कहीं एक मास, कहीं डेढ़ मास, कहीं छः मास या आठ मास तक सुख पूर्वक रहे। इस प्रकार वन में विहार करते हुए १० वर्ष बीत गए। इसके पश्चात् सुतीक्ष्ण मुनि से मिलकर वे अगस्त्य मुनि के आश्रम में गए। अगस्त्य ने उन्हें दिव्य धनुष बाण, तरकस और अन्य शस्त्र दिए। फिर अगस्त मुनि के परामर्श से ही वे गोदावरी नदी के तट पर स्थित पंचवटी नामक स्थान में गए। वहां पर उन्होंने एक सुन्दर आश्रम बनाया और लक्ष्मण तथा सीता के साथ सुखपूर्वक उस आश्रम में निवास करने लगे।

एक दिन दोनों भाई और माता सीता संध्यावन्दन आदि से निवृत्त हुए ही थे कि शूर्पणखा नामक एक राक्षसी वहां आई और रावण की इस बहन ने अपने राज्य में राम के आने का प्रयोजन पूछा। इसके पश्चात उसने राम से विवाह करने का प्रस्ताव रखा। राम ने कहा कि वे तो विवाहित हैं, हां, लक्ष्मण विवाह कर सकता है। लेकिन लक्ष्मण द्वारा भी दुत्कार दिये जाने पर उसने उसे अपना अपमान समझा और सीता पर आक्रमण करने की कोशिश की। इस पर लक्ष्मण ने उसके नाक और कान काट डाले।

शूर्पणखा रोती हुई अपने भाई खर के पास गई। खर ने बहन के अपमान का बदला लेने के लिए १४ राक्षसों को राम पर आक्रमण करने भेज दिया। इस पर राम लक्ष्मण ने अपनें दिव्य शस्त्रों से इन राक्षसों को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद स्वयं खर अपने सेनापति दूषण के साथ राम पर आक्रमण करने के लिए आया लेकिन ये दोनों भी युद्ध में मारे गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इन राक्षसों के वध का समाचार पाकर दंडकारण्य के ऋषि-मुनि एकत्र होकर राम के पास आए और धर्म रक्षा के लिए उनका आभार व्यक्त किया। खर, दूषण और दण्डकारण्य के त्रिशिरा सहित सब राक्षसों का विनाश देखकर शूर्पणखा लंका में रावण के पास गई और उसे धिक्कारने लगी कि तुम्हारे राज्य दण्डकारण्य में राम ने राक्षसों को मार डाला है और तुम चैन से बैठे हो। रावण के मन में छल समा गया और इसे प्रतिशोध का अच्छा अवसर समझकर उसने सीताजी का हरण करने का निश्चय किया। इसके लिए उसने मारीच की सहायता ली। मारीच ने इस पापकर्म में महाभागी होने से काफी मना किया लेकिन रावण नहीं माना और उसने अपनी योजना का पालन न करने पर मारीच की हत्या करने की धमकी दी। विवश होकर रावण के डर से मारीच को उसकी बात माननी पड़ी। मायावी मारीच ने छल से स्वर्ण मृग का रूप धारण किया और राम के आश्रम के पास मंडराने लगा। सीताजी उस स्वर्ण मृग को देखकर विमुग्ध हो गईं और श्री राम से कहा कि इस मृग को पकड़कर लाइये, यह हमारे क्रीड़ा करने के काम आयेगा। लक्ष्मण ने माता सीता को समझाने की कोशिश भी की कि मुझे यह मृग मायावी लगता है, अतः इसके मोह में न पड़ना ही ठीक है, पर सीताजी ने अपनी हठ जारी रखी। आखिर श्रीराम लक्ष्मण को सीताजी की रक्षा का भार सौंप कर मृग को पकड़ने के लिए चल पड़े। मृग उछलता-भागता उन्हें बहुत दूर ले गया। राम ने एक ऐसा बाण छोड़ा जो उसके हृदय को बींध गया। जब वह मरने लगा तो अपने इस बनावटी शरीर को त्यागकर उसने रावण के कहने के अनुसार राम की वाणी में, हा लक्ष्मण ! हा सीते ! कहकर बड़ी जोर से पुकारा। राम ने सोचा कि लक्ष्मण ने ठीक ही कहा था, यह तो मारीच की ही माया थी। उधर सीता जी ने जब लक्ष्मण को और स्वयं को पुकारने की आवाज सुनी तो लक्ष्मण को कहा कि तुम्हारे बड़े भाई संकट में हैं जाओ उनकी रक्षा के लिए तुरन्त जाओ। लक्ष्मण ने सीताजी को समझाया कि यह राक्षसों का छल है, राम संकट में नहीं हो सकते ! लक्ष्मण के इस कथन पर क्रुद्ध होकर सीताजी ने उसे अनेक कठोर वचन कहे, आखिर विवश होकर लक्ष्मण को राम की खोज के लिए निकलना पड़ा। अपनी छल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योजना के अनुसार रावण उसी समय सीताजी के सम्मुख ब्राह्मण का वेष बनाकर पहुंचा और सीता जी का बलात् अपहरण कर विमान द्वारा उन्हें लंका की ओर ले चला। उस समय कोई भी सीता जी की सहायता करने के लिए उपस्थित न था। सीता जी रुदन करते हुए मार्ग में स्मृति चिन्हों के रूप में अपने आभूषण गिराती गईं। सीता तो लंका में पहुंच गईं, उधर राम जब उस मायामृग को मारकर आश्रम में वापस जा रहे थे तो मार्ग में उन्होंने म्लानमुख लक्ष्मण को देखा। उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि सीता को अकेले छोड़ना बहुत बुरा हुआ। आश्रम में पहुंचकर राम ने अपनी कुटी को सूना पाया। राम व्यथित होकर सीताजी को सर्वत्र ढूंढ़ते फिरे, ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे दक्षिण की ओर गए। वहां तपस्विनी शबरी ने जब उन्हें देखा तो अपने-आपको धन्य माना। शबरी का अतिश्य ग्रहण कर राम और लक्ष्मण पम्पा सरोवर पर चले गए। सीता की खोज करते-करते राम और लक्ष्मण दोनों भाई किष्किधापुरी वन में पहुंच गए। वहां के राजा सुग्रीव को सन्देह हुआ कि ये गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासी बाली के भेदिये हैं और शायद मुझ पर आक्रमण करने आए हैं। उसने अपने मंत्री हनुमान को वास्तविकता का पता करने के लिए भेजा। हनुमान ने राम और लक्ष्मण के समीप जाकर मधुरवाणी में बातचीत कीं और उनसे पूछा कि वे कौन हैं और कहाँ से आए हैं। राम के आदेश से लक्ष्मण ने हनुमान को सारी बात बताते हुए कहा कि हम सुग्रीव को ही ढूंढ़ रहे हैं और उनकी मदद से सीताजी को ढूंढ़ना चाहते हैं। इसके पश्चात राम लक्ष्मण हनुमान के साथ सुग्रीव से मिले और सीताजी को मुक्त कराने के सहयोग के बदले में उसके शत्रु बाली के वध का आश्वासन दिया।

सुग्रीव को एक बार तो श्रीराम के बल में संशय हुआ क्योंकि अप्रतिम बलशाली बाली के सम्मुख राम सुकोमल दिखते थे लेकिन जब एक ही वाण से श्रीराम ने सात साल वृक्षों को बींध डाला और फिर उनका तीर तरकस में वापस आ गया तब वह उनके बल के सम्मुख नतमस्तक हो गया। राम ने सुग्रीव को सलाह दी कि तुम शीघ्र ही हमसे पहले पहुंच जाओ और अपने भाई को युद्ध के लिए ललकारो। सुग्रीव ने राम के कथनानुसार बाली को तीव्र गर्जन के साथ युद्ध के लिए ललकारा। दोनों में भीषण युद्ध छिड़ गया। उसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय राम ने एक महाविनाशक बाण छोड़ा जो बाली के सीने को बधकर पार हो गया। महाबलि बाली वहीं ढेर हो गया। मृत्युशैया पर पड़े बाली से राम ने भेंट की तो बाली ने तनिक क्रोध से कहा कि आपने हृदयरूप से मेरा वध करके अधर्म किया है, आप जैसे धर्म धुरीण के लिए यह उचित नहीं था। लेकिन जब राम ने उसके दुष्कृत्यों का स्मरण दिलाया तो वह शान्त हो गया और प्रार्थना की उसके पुत्र अंगद को वह अब अपना ही पुत्र समझें और उसकी देख-रेख करने की जिम्मेदारी संभाल लें। श्रीराम ने इसकी स्वीकृति देकर बाली को सान्त्वना दी और तब बाली ने शान्तिपूर्वक प्राण त्याग दिये। इसके बाद श्रीराम की आज्ञा से सुग्रीव का अभिषेक किया गया और अंगद को युवराज पद सौंपा गया।

इसके पश्चात् हनुमान के स्मरण कराने पर सुग्रीव ने सीताजी की खोज का कार्य शुरू किया और विलम्ब के लिए क्षमायाचना की। इसके पश्चात सीताजी की खोज में सर्वत्र अपने सैनिक भेज दिये। सुग्रीव का सबसे अधिक बुद्धिमान और बलवान मंत्री हनुमान था। उसे दाक्षण की ओर भेजा। सुग्रीव को विश्वास था कि हनुमान ही इस कार्य को कर सकता है। सुग्रीव के इस विश्वासपात्र सेनापति को राम ने अपनी अंगुठी दी ताकि सीताजी का पता चलने पर उन्हें यह स्मृति चिह्न दे सकें। खोजते-खोजते हनुमान की भेंट विंध्य क्षेत्र में संपाति से हुई। संपाति ने बताया कि किस प्रकार उसने दुष्ट रावण द्वारा अलंकारों से सुसज्जित स्त्री का हरण करके ले जाते हुए देखा था और वे बार-बार राम का नाम ले रही थी। इसीलिए में समझता हूं कि वे सीताजी रहीं होगीं।

फिर सम्पाति ने हनुमान को रावण के राज्य और महल का पता बताया। हनुमान के सैनिक लंका पहुंचने के लिए समुद्र तट पर इकट्ठे हुए और समुद्र को लांघने से निराश बैठे सब सैनिकों के बीच जामवंत ने हनुमान को आह्वान किया कि हे हनुमान तुम महापराक्रमी हो, उठो और अपने पराक्रम से समुद्र को लांघों। तब हनुमान को अपनी शक्ति का आभास हुआ और एक ही हुंकार से उन्होंने समुद्र लांघ दिया। वास्तविकता यह थी कि हनुमान पूर्ण ब्रह्मचारी थे उन्हें विभिन्न सिद्धियां प्राप्त थीं उन्हीं के बल पर वे समुद्र को लांघ सके। तदनुसार इच्छानुसार रूप धारण करने में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समर्थ हनुमान सूक्ष्म रूप धारण कर लंका में प्रवेश कर गए और अशोक वाटिका में सीताजी को देखा। वहां हनुमान ने देखा कि सीताजी को रावण द्वारा अपनी रानी बनाने के प्रलोभन दिये जा रहे हैं, तो राक्षसियों द्वारा भय दिखाये जा रहे हैं। इन सबके जाने के बाद हनुमान जी ने सीताजी से बातचीत का अवसर निकाला। सीताजी हनुमान से मिलकर बहुत आश्वस्त हुईं। सीता को विश्वास दिलाने के लिए हनुमान ने राम की दी हुई अंगूठी सीताजी को दी और विश्वास दिलाया कि रामजी शीघ्र ही सेना लेकर आपको मुक्त करने के लिए आयेंगे।

अब हनुमान ने रावण को उत्तेजित करने के इरादे से उसकी वाटिका को तहस-नहस कर डाला। यह सब सुनकर रावण क्रोध में भर उठा, और हनुमान पर आक्रमण करने के लिए अनेक सैनिक भेजे किन्तु हनुमान ने सबको मार डाला। तब इन्द्रजित ने हनुमान को बंधक बनाकर रावण के सामने पेश किया। रावण ने क्रोधावेश में हनुमान का वध करने की आज्ञा दी लेकिन विभीषण ने अपन भाई रावण को ऐसा न करने के लिए समझाया। आखिर रावण को विभीषण की सलाह उचित लगी और हनुमान को अभय दिया। रावण के क्रोध के प्रतिकार स्वरूप हनुमान ने यत्र-तंत्र सारी लंका में आग लगा दी। और फिर वे अपना काम समाप्त कर समुद्र पार महेन्द्र पर्वत पर लौट आए। इसके पश्चात् हनुमान ने सुग्रीव, जामवंत, अंगद और राम तथा लक्ष्मण को सीता का कुशल समाचार दिया। राम यह समाचार पाकर अत्यधिक हर्षित हुए।

अब समस्या समुद्र के पार सेना भेजने की थी। हनुमान ने बताया कि मैंने लंका के पुल तोड़ दिये हैं और खाइयां पाट दी हैं। उधर रावण चिन्तित था। वह जानता था कि अब राम का एक ही अनुचर हनुमान सारी लंका को तहस-नहस कर सकता है तब श्रीराम की तो लंका पर विजय निश्चित ही है।

विभीषण ने रावण को काफी समझाने की कोशिश की कि वह राम से युद्ध न करें और सीताजी को आदरसहित लौटा दें लेकिन दुर्मति रावण ने उसकी एक न मानी और विभीषण को अपमानित किया। इस पर विभीषण रावण का राज्य छोड़कर राम की शरण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में चला गया। श्रीराम ने विभीषण को आश्वासन दिया कि लंका को जीतकर वे विभीषण को ही लंका का राज्य सौंप देंगे।

इसके पश्चात् श्रीराम के सैनिकों ने नल की देखरेख में पांच दिन में समुद्र पर पुल तैयार कर दिया। इस पुल के बनते ही सेना समुद्र के पार पहुंच गई।

सबसे पहले रावण और सुग्रीव में तुमुल युद्ध हुआ। रावण के मायाबल प्रयोग करने से पहले ही सुग्रीव वहाँ से चला गया। इसके पश्चात् पुनः अंगद राम के दूत बनकर गए और रावण को संधि करने के लिए समझाने की कोशिश की परन्तु दुर्बुद्धि रावण को अच्छी सलाह समझ में न आ सकी। इसके पश्चात् श्रीराम के पास कोई उपाय न बचा था। लंका पर प्रबल धावा बोल दिया गया। स्वयं द्वारों को तोड़ दिया गया। भयंकर युद्ध छिड़ गया। सैनिकों के रूधिर से धरती लाल हो गई।

रावण ने चिंतित होकर कुम्भकर्ण को जगाया। कुम्भकर्ण की मार से वानर सेना में हलचल मच गई। आखिर राम को स्वयं युद्ध में भाग लेना पड़ा और अपने तीक्ष्ण बाणों से कुम्भकर्ण का वध किया।

कुम्भकर्ण की मृत्यु के बाद मेघनाथ को रावण ने युद्ध के लिए भेजा। जब कुम्भकर्ण और रावण के कई पुत्र मारे गए तब राम की सेना में अपार उत्साह भर उठा और लंका को अग्नि की लपटों में झोंक दिया। अब रामचन्द्र और रावण में सीधे युद्ध हुआ। रामचन्द्र जी ने अपने बाणों से रावण का सारा शरीर छेद किया। तब रावण ने एक शक्ति से लक्ष्मण पर प्रहार किया। लक्ष्मण अचेत होकर धरती पर गिर पड़े। तब राम ने विख्यात वैद्य सुषेण के निर्देश पर हनुमान से संजीवनी लाने को कहा। हनुमान पर्वत पर संजीवनी की पहचान न कर सका इसलिए पूरा भूमिखंड ही उखाड़ लाया। इस औषधि को सूंघते ही लक्ष्मण स्वस्थ हो गया। तत्पश्चात् राम और रावण में फिर घमासान युद्ध हो गया और श्रीराम के वज्र सशबाण से रावण के प्राण पखेरू उड़ गए।

लंकापति रावण की मृत्यु से लंका में हा-हाकार मच गया। फिर श्रीराम के आदेश से विभीषण ने रावण का अंतिम संस्कार किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तत्पश्चात रामचन्द्रजी ने विभीषण का लंकापति के रूप में अभिषेक कराया। इसक पश्चात् हनुमान जी ने श्रीराम की आज्ञा से सीताजी को राम की विजय को समाचार सुनाया। हनुमान से समाचार सुनकर सीताजी अत्यधिक प्रसन्न हुईं और अविलम्ब श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन की इच्छा प्रकट की। विभीषण रामचन्द्रजी की आज्ञा से तुरन्त अंतःपुर में गए और सीताजी को पालकी में बैठाकर श्रीराम के सम्मुख ले आए। पति को देवता मानने वाली सीता ने विस्मय, हर्ष और स्नेह से अपने श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन किए।

तत्पश्चात् श्रीरामचन्द्रजी ने लोकापवाद से बचने के लिए सीता जी की अग्नि परीक्षा ली। यहां अग्नि परीक्षा से तात्पर्य जनविश्वास प्राप्त करने से ही है।

यह समाचार अयोध्या पहुंचा तब चारों ओर हर्षोल्लास फैल गया और अयोध्या लौटने पर चिर प्रतीक्षा में आकुल भ्राता भरत ने राम के चरणों में राज्य समर्पित कर दिया। □

मैं एक नारा दे रहा हूँ, एक आवाज उठा रहा हूं, आपको जगा रहा हूँ, जागो और कहो—

भारत उनका—जो भारत के

तुष्टिकरण की नीति मेरे देश की तबाही का एकमात्र कारण है।

अगर हम मरकर भी गौ-गंगा-गायत्री की एकता, स्वतन्त्रता और सीमा की रक्षा कर सकें तो यह हमारी अमरता होगी। यह हम समझें और सभी को समझायें। —महात्मा वेदभिक्षुः

सच की सदैव जीत होती है। यदि सच में थोड़ा-सा भी झूठ मिल जायेगा तो छोटा झूठ बन जायेगा, और बड़े झूठ के मुकाबले छोटा झूठ हारेगा। यदि खरा सच होगा तो कोई भी शक्ति सच को नहीं हरा सकती।

महात्मा वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोहत्याबंदी—वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक प्रयोजन

—दादा धर्माधिकारी

गो-हत्याबन्दी का प्रश्न उठाते ही लोग बौद्धिकता और वैज्ञानिकता का आक्षेप करते हैं। वे कहते हैं कि गोहत्याबन्दी वाले लोग तो हमें बैलगाड़ी के जमाने तक पीछे ले जाना चाहते हैं। किन्तु बैलगाड़ी भी अवैज्ञानिक तो नहीं है, हां वह आधुनिकतम नहीं है। फिर भी मान लीजिए कि बैलगाड़ी पिछड़े हुए जमाने का प्रतीक है, इसलिए अवैज्ञानिक है। लेकिन क्या बैल भी अवैज्ञानिक हैं? मोटर वैज्ञानिक है तो क्या बैल वैज्ञानिक नहीं हैं? तब तो कहना होगा कि जड़ और निर्जीव चीजें ही वैज्ञानिक हैं, परन्तु चेतन और सजीव अवैज्ञानिक। आंख अवैज्ञानिक हैं, चश्मा वैज्ञानिक हैं। आप बैलगाड़ी को आधुनिकतम रूप दीजिये, लेकिन मेहरबानी करके बैल को खारिज न कीजिये।

इस समस्या का व्यावहारिक पक्ष भी विचारणीय हैं। कुछ आर्थिक विवशतायें होती हैं। आर्थिक विवशताओं को कोई अब तक जीत नहीं सका। जिस पशु का हमारे आर्थिक संयोजन में स्थान न हो उसे विधाता भी नहीं बचा सकता। गाय को इसलिए हमारे आर्थिक संयोजन में और उत्पादन की प्रक्रिया में शामिल कर दिया गया। किन्तु बकरे को बुद्ध और महावीर भी नहीं बचा सके। अब अगर बैल बेकार होता चला जाय तो गाय नहीं बचाई जा सकती। इसमें अवैज्ञानिकता कहां है? विज्ञान का उपयोग जीवन के संहार के लिए नहीं, विकास के लिए होना चाहिए।

यंत्र विज्ञान की उपज है। लेकिन यंत्र अपने में विज्ञान नहीं है। हमसे पूछते हैं कि तुम विज्ञान के पक्ष में हो या विरोध में? हमारा निवेदन है कि जीवन के विकास में अगर यंत्र सहायक हो तो उसका हम स्वागत और सत्कार करेंगे। लेकिन अगर यंत्र जीव की जगह लेने लगे, उसको विस्थापित करने लगे तो हम उसे अभिशाप मानेंगे। हमारा जीवन दिन-पर-दिन क्षीण हो रहा है। सुविधायें बढ़ रही हैं, जीवन क्षीण हो रहा है। घोड़ा गया, ऊंट जा रहा है, हाथी केवल शोभा के लिए रह गया है, वहां अब लोग मगर-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घड़ियाल, गिरगिट और छिपकली को भी पालने लगे हैं। मनुष्य का यह गौरव है कि वह अन्य प्राणियों के साथ आत्मीयता खोजता है। उस खोज का फल गाय है। मनुष्य शिकारी के जीवन से जब खेतीहर बना, तो पशु के साथ इस रिश्तेदारी का आरंभ हुआ। नातेदारी ही जीवन है।

यह सांस्कृतिक प्रक्रिया वैज्ञानिक भी है। पहला चरण था कि पोषण की प्रक्रिया में गाय को शामिल किया और उत्पादन की प्रक्रिया में बैल को। उपयोगिता की दृष्टि से ही विचार करें तो भी गोहत्याबंदी आवश्यक मालूम होगी। वीर सावरकर हिन्दुत्व के आचार्य थे। वे किन्तु गाय को (महज एक) उपयोगी पशु ही मानते थे। इस प्रकार हम भी यदि गाय को उपयोगी पशु ही मानते हैं तो बैल का बहिष्कार नहीं कर सकते। बैल कभी यंत्र की जगह नहीं ले सकता। हमारी मांग इतनी ही है कि यंत्र बैल का स्थान न ले।

पशु फिर से मानवीय जीवन में दाखिल होना चाहिए। आज का रवैया चलता रहा तो वह दिन आवेगा, जब हमारे जीवन में पशु के लिए कोई भूमिका नहीं रह जायेगी! और आगे चलकर मनुष्य की भी कोई भूमिका नहीं रह जायेगी। लेकिन याद रहे, मनुष्य का स्थान कम्प्युटर या रोबोट नहीं ले सकेगा। रोबोट और कम्प्युटर बिगड़ सकते हैं, लेकिन गलती नहीं कर सकते। मनुष्य गलती कर सकता है और उसे सुधार भी सकता है। अपने जीवन को बदलने की शक्ति उसकी विशिष्ट शक्ति है। इसलिए मनुष्य पागल भी हो सकता है, और विभूतियत्व को भी पा सकता है। उसकी अस्मिता क्षितिजव्यापी हो सकती है, अखिल विश्व के साथ उसका तादात्म्य हो सकता है।

हिंदू जागेगा
देश का
संकट भागेगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपका रसोईघर ऐसा हो

—अनुरक्ति

घर भर की तन्दुरुस्ती अच्छे वातावरण और अच्छे भोजन पर निर्भर करती है और इसके लिये आवश्यक है एक अच्छा और उपयोगी रसोईघर।

रसोईघर में गृहणी का सबसे ज्यादा समय व्यतीत होता है अतः वहीं सभी सुविधायें होनी ही चाहिये। मच्छर, मक्खी अन्दर न आने पाए अतः इसके दरवाजे व खिड़कियों पर जालीदार पल्ले भी लगे होने चाहिए। रसोई घर ऐसी जगह स्थित हो जहां से या तो मुख्य द्वार नजर आता हो या वहां तुरन्त ही पहुँचा जा सकता हो। घर के पुरुष तो काम पर बाहर चले जाते हैं अतः गृहिणी को ही सारा दिन घर की देखभाल करनी होती है ऐसे में अगर रसोई में काम करते हुए भी वह घर के प्रवेश पर नजर रख सके तो अति उत्तम होगा।

रसोईघर डाइनिंग रूम के पास ही स्थित होना चाहिये। इस तरह खाना परोसते समय गृहिणी को अकारण भाग दौड़ नहीं करनी पड़ेगी। इसके लिये दोनों कमरों के बीच 'सर्विस विंडो' हो तो और भी अच्छा रहेगा।

रसोईघर में अच्छे क्रास वेन्टीलेशन के लिये जरूरी है कि उसकी एक खिड़की आंगन की तरफ अवश्य खुले। यदि ऐसा सम्भव न हो तो छत से थोड़ा नीचे, फालतू गर्म हवा बाहर फेंकने के लिये, 'एक्जास्ट फैन' लगवा लेना चाहिये।

अब खड़े-खड़े खाना बनाने का प्रचलन हो गया है। इसके लिये रसोई काउंटर की ऊंचाई सुविधानुसार २.६ फुट से २.८ फुट रखी जा सकती है। बर्तन धोने की व्यवस्था के लिए एक सिंक भी पत्थर के एक सिरे पर लगवा लेना चाहिए। अतिरिक्त खाद्य सामग्री तथा अन्य वस्तुएं रखने के लिये या तो रसोईघर में ही काफी स्थान रहना चाहिए या फिर इसके साथ ही छोटा सा भंडार घर बनवा लिया जाए जिसमें इस तरह की सामग्री रखी जा सके। इसमें एक छोटा से रोशनदान ही काफी रहता है परन्तु यदि संभव न हो तो उसके बिना भी काम चल सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खाना पकाने के लिये अब ज्यादातर घरों में गैस के चूल्हों का ही इस्तेमाल होता है। गैस स्टोव के लिय चिमनी बनाने की जरूरत नहीं पड़ती लेकिन यदि लकड़ी या कोयला ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाये तो धुआं निकलने के लिये चिमनी बनाना आवश्यक है। इसके लिय जिस स्थान पर चूल्हा रखना है उस जगह के ऊपर ढक्कनतुमा हुड बनाकर उसके एक कोने में पाइप लगाकर मकान के ऊपर धुआं छोड़ने की व्यवस्था की जाती है। इसमें तरह की चिमनी से रसोईघर काला नहीं होता और वायु शुद्ध बनी रहता है। फ्रिज तथा कुकिंग रेंज कहां रखा जायेगा इसकी योजना भी रसोई की काम करते समय ही बना लेनी चाहिये।

हवा की तरह ही रसोईघर में रोशनी आना बहुत जरूरी है। वहां सूरज की धूप आती हो तो बहुत अच्छा, किन्तु यदि धूप सीधे तौर पर नहीं भी आती हो तो सूर्य की किरणें रसोईघर तक अवश्य पहुंचनी चाहिये इससे वहां का वातावरण स्वास्थ्यप्रद रहता है।

अनेक घरों में रसोईघर का उपयोग देर रात तक होता है। फिर भी प्रायः यह पाया जाता है कि ये लोग रसोईघर में चालीस 'वाट' से अधिक का बल्ब नहीं जलाते। इनमें ज्यादा प्रतिशत उन लोगों का है जो रसोईघर में जीरो बत्ती का बल्ब हीं काम में लेते हैं। ऐसा करना उचित नहीं है। क्योंकि रसोईघर में छानने बीनने और साफ सफाई के असंख्य कार्य करने पड़ते हैं जो समुचित प्रकाश के अभाव में संभव नहीं होते। मिर्च मसालों के प्रयोग व खाने पीने की चीजों में भी काफी सावधानी बरतनी होती है। रात में या अंधेरे में ये कार्य समुचित प्रकाश वाले बल्ब को जलाकर ही सम्पन्न किये जाने चाहिये। बड़ा बल्ब ऐसे स्थान पर होना चाहिये जहां से काम करने की जगह पर पूरा-पूरा प्रकाश पहुंच सके। रसोईघर में जलाये जाने वाले बल्ब या ट्यूब लाइट का स्विच ऐसी जगह पर हो, जिसे रसोईघर के बाहर से ही सरलता से चालू या बन्द किया जा सके।

रसोईघर का काउंटर जिस पर आटा गूंदने से सब्जी छौंकने तक के सारे कार्य सम्पन्न किये जाते हैं, वह संगमरमर अथवा ऐसे पदार्थ का बना हुआ होना चाहिये जिसे आसानी से साफ किया जा सके एवं जिस पर गंदगी साफ तौर से नजर आ जाये। उसका सामान्य सीमेंट अथवा कंकरीट का आधार बना हुआ हो। इस हेतु यथासंभव संगमरमर की एक इंच मोटी पट्टी लेकर आवश्यकतानुसार आकार में लगवा लेनी चाहिए।

रसोईघर में ऐसी छोटी अलमारियों का बड़ा महत्व होता है जिसमें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दराजें होती हैं। इन दराजों में कप, प्लेट्स, चाकू, छुरी रसोईघर में काम आने वाली छोटी मोटी चीजें, रखी जा सकती हैं।

गैस का उपयोग करने वाली महिलाओं को चाहिए कि गैस सिलेंडर को रसोईघर में वर्किंग काउंटर के नीचे रखें। यदि सिलेंडर को बंद करके रखा जायेगा तो बेहतर होगा। रसोईघर के एक कोने में जहां पर नल की व्यवस्था हो वहीं एक वाशवेसिन भी लगाया जाना उचित होगा। बेसिन न हो तब बर्तन धोने की जगह पर तीन तरफ टाइल्स लगवा लेना चाहिए।

सामान्यतः रसोईघर की दीवारों पर अथवा वहां रखी जाने वाली आलमारी व पत्थर आदि पर हल्के रंग होने चाहिए। गहरे रंगों का प्रयोग हानिकारक सिद्ध होता है।

अब आइये एक नजर रसोईघर में हर रोज काम आने वाले बर्तनों पर भी डालें। वे डब्बे पीपे जिनमें आप खाने पीने का सामान रखती हैं, वे बर्तन जिनमें दिन में कई बार चाय, दूध व खाना पकाया जाता है तथा खाया जाता है, उनकी सफाई भी बेहद जरूरी है।

रोज काम आने वाली चाय, चीनी, घी, तेल के डिब्बे छोटी साइज के रखिये तथा अपनी पहुंच में रखिये ताकि आसानी से उन्हें उतार सकें और वापस उचित स्थान पर रख सकें ताकि हाथों से छूटकर उनके बिखरने का डर न रहे।

गैस के साथ-साथ अपनी रसोई में बहुत से परिवार स्टोव भी रखते हैं। उसके काम में आने वाली पिनों, दियासलाई तथा मोमबत्ती के लिये आप अपने बच्चों के पुराने ड्राइंग बाक्स अथवा पेन्सिल की लम्बी डिब्बी ले सकती हैं ताकि समय पर माचिस व पिन आदि के लिये इधर-उधर ताकना न पड़े।

इस प्रकार अगर आप अपनी रसोई को व्यवस्थित रखेंगी तो आपके समय की बचत होगी, आपको सुविधा होगी तथा घर आने वाली आपकी सहेलियां आपके रसोईगर को देखकर आपकी प्रशंसा किये बगैर नहीं रवेगी। जब आप अपने घर आने वाले मेहमानों से अपनी प्रशंसा सुनेंगी तो खुशी का अनुभव करेंगी और रसोई में दिये गये अपने समय को सार्थक समझेंगी। □

सत्यम् शिवं सुन्दरम्। ओ३म् नमः शिवायः ओ३म् नमः शिवायः··· □ □ □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंग्रेजी ने हमारे नामों को भी विकृत कर दिया है

–शिवकुमार गोयल

अंग्रेजी की मानसिक दासता के कारण जहां हमें देश-विदेश में समय-समय पर अपमानित होना पड़ता रहा है वहीं हम अपनी संस्कृति, परम्पराओं तथा इतिहास को भी विकृत होते देख रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के मोहपाश में फंसकर हम अपने पूर्वजों के नाम को भी विस्मृत कर डालने में नहीं हिचकिचाते। एक ओर हम हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर देखने को लालायित है किन्तु दूसरी ओर हम अपने घर, दुकान तथा चौके तक से हिन्दी को बहिष्कृत करने तथा अंग्रेजी को पटरानी की तरह ऊंचे सिंहासन पर बिठाने में गर्व करते हैं।

राजधानी दिल्ली के समीपवर्ती मेरठ, गाजियाबाद तथा बुलन्दशहर जैसे घोर हिन्दी भाषी जनपदों के कस्बों व गांवों का सर्वेक्षण करने के बाद मैंने पाया कि ७० प्रतिशत मध्यम वर्ग के दुकानदार व्यापारी तथा नौकरीपेशा लोग अंग्रेजी का प्रयोग करने में गर्व महसूस करते हैं। मसलन दुकानों के नाम पट्ट, पत्र व्यवहार में काम आने वाली सामग्री आदि अंग्रेजी में छपवाते हैं। ३० प्रतिशत फर्मों के बहीखाते अंग्रेजी में किये जाते हैं और तो और गृह प्रवेश, नामकरण, मुण्डन जैसे धार्मिक संस्कारों के निमंत्रण–पत्र तक अंग्रेजी में छपवाना गौरव समझा जाता है।

बुआ की जगह—"भुआ"

हाल ही में गाजियाबाद के एक सभ्रांत परिवार में मुण्डन संस्कार था। बच्चे पिंकू की ओर से अंग्रजी में 'निमन्त्रण छपवाया गया जिसकी शुरूआत' डीयर अंकिल एण्ड आण्टी से थी। उसका मजमून था—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Ma Parent;Smt. & Shrt··········& Grand Parents········ took me M A A JWALA JI For her Darshan, They got my mundan·············.

Now they have agreed to celebrate the same and want to give me a new name with the help of my BHUA ANITAJI"

'बुआ' को अंग्रेजी ने 'भुआ' कर ही दिया नीचे 'पिंकू' का उच्चारण 'पिन्चू' (Pinchoo) था। बालक पिन्कू तथा उसके दादी-दादा अंग्रेजी का एक शब्द नहीं जानते थे। दादी-दादा स्वयं उस निमन्त्रण पत्र को पढ़ नहीं सकते, किन्तु अंग्रेजी की मानसिक दासता के शिकार परिवार वालों को इस बात से क्या लेना देना है?

'गृह प्रवेश' के अंग्रेजी में छपे निमन्त्रण में 'हवन' के साथ 'लंच' कितना छटपटा लगता है?

'केक' संस्कृति

हाल ही में अपने एक मित्र के बच्चे के जन्मदिन का आमंत्रण मिला। मैं अपने छायाकार मित्र श्री राधेश्याम शर्मा के साथ उनके यहां पहुंचा। मेज पर सजी केक तथा मोमबत्तियां देखकर माथा ठनका। कुछ ही देर बाद बच्चे से केक कटवाकर मोमबत्तियां बुझाने को कहा गया तो बच्चा बोला– "दीवाली पर हम तो मोमबत्ती जलाते हैं, बुझाये क्यों? "उसकी तुतुली भाषा में ये शब्द सुनकर हम सब हंस पड़े। उपस्थित बच्चे ही नहीं बड़े-बड़े लोग व युवतियाँ तक जब "हैपी बर्थ डे—हैपी बर्थ डे" की आवाजें कर गुब्बारे फोड़ने लगे, जंगलियों की सी आवाजें निकालने लगे तो हमने अपना माथा पीट लिया। सात समुन्दर पार के इस माहौल में अपने को खपा न सकने के कारण हम बिना भोजन किये ही वापस लौट आये।

बच्चों के जन्मदिन पर कभी हमारे यहां कथा कराने, तुलादान करने तथा गरीबों को भोजन देने की प्रथा थी। बच्चे की दीर्घायु के लिए दीप जलाया जाता था। अब मोमबत्तियां बुझाकर, केक कटवाकर गुब्बारे फोड़-कर, जंगलियों की सी आवाजें करके यह दिन मनाया जाने लगा है। यह बीमारी गांवों तक पहुंचती जा रही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पवित्र नामों को विकृत कर दिया है

हमारे पूर्वज अपने इष्टदेव वीर-वीरांगनाओं, महापुरुषों तथा अच्छे कार्य करने वालों के नामों पर अपने बच्चों के नाम रखते थे। 'राम' के नाम पर करोड़ों लोगों के नाम मिलेंगे परन्तु रावण या कुंभकर्ण शायद ही कहीं मिले कृष्ण जगह-जगह हैं किन्तु 'कंस' नाम रखना कोई पसन्द नहीं करता। किन्तु अंग्रेजी के अन्धानुकरण ने हमारे पूर्वजों की इस भावना पर भी पानी फेर डाला है। हमारे माता-पिता ने नाम रखा था 'राम कृष्ण शर्मा'। अंग्रेजी ने उसे कर दिया आर० के० शर्मा। भगवान शिव की आराधना के बाद अनेक मनौतियां मनाये जाने पर उत्पन्न एकमात्र पुत्र का नाम दिया गया 'शिवदास अग्रवाल' किन्तु अंग्रेजी ने उसे एस० डी० अग्रवाल कर शिवभक्त पिता के अरमानों को तोड़ डाला। जीवन भर गंगा जी की भक्ति करने वाली मां ने अपनी पांच बेटियों के बाद हुए बेटे का नाम रखा 'गंगाप्रसाद' किन्तु वाह री अंग्रेजी तूने उसे 'जी० पी० कर डाला।

महान् क्रांतिकारी वीर सावरकर का नाम 'विनायक-दामोदर सावरकर' था। महाराष्ट्र में पिता का नाम भी पुत्र के नाम के साथ जोड़े जाने की परम्परा है। एक बार सावरकर जी के नाम को वी० डी० सावरकर लिखा गया तो उन्होंने असन्तोष व्यक्त करते हुए कहा था—"मुझे" विनायक-दामोदर जैसे पावन नाम से ही सम्बोधित किया जाये। इन शब्दों में नामकरण के समय की माता-पिता की श्रद्धा छिपी हुई है।

'तात्याटोपेनगर' टीटीनगर हो गया

महापुरुषों व वीर-वीरांगनाओं की स्मृति को धूमिल करने में अंग्रेजी भाषा किस प्रकार सक्रिय है इसका ज्वलन्त प्रमाण मुझे भोपाल में देखने को मिला।

१८५७ के महान क्रांतिकारी श्री तात्याटोपे का मध्य प्रदेश से सम्बन्ध रहा है। वहां के लोगों ने कई वर्षों तक प्रयास करके भोपाल की एक कालोनी का नाम 'तात्याटोपे नगर रखवाया।

मैं भोपाल गया तो तात्याटोपे नगर जाने के लिए रिक्शा वाले को बुलाया। एक भी रिक्शा वाला नहीं समझ पाया कि 'तात्याटोपेनगर' क्या बला है। एक दुकानदार मेरी परेशानी देख रहा था। वह बोला "बाबू—टी० टी० नगर कहो, तात्याटोपे नगर से कोई नहीं समझेगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने प्रत्यक्ष देखा कि अंग्रेजी ने उन लाखों व्यक्तियों की आकांक्षाओं पर पानी फेर डाला है जिन्होंने एक महान शहीद के नाम पर इस कालोनी का नामकरण कराया था। आम आदमी समझता है कि रेलवे के टी० टी० इस कालोनी में रहते होंगे इसलिए इसे 'टी० टी० नगर' कहते हैं।

इसी प्रकार दिल्ली में महात्मा गांधी मार्ग का नाम एम० जी० मार्ग और राम कृष्ण पुरम का आर० के० पुरम ज्यादा प्रचलित हो गया है। हर नगर में महापुरुषों के नाम पर स्थापित सड़कों, कालेजों व अन्य स्थलों से उनकी स्मृति ही विस्मृत कर डाली है अंग्रेजी ने।

सेंट विवेकानन्द

और तो और अंग्रेजी पर गर्व करने वालों ने अपना उच्चारण भी विकृत कर डाला है। अंग्रेजी दा भारतीय महाराजा अशोक के नाम पर स्थापित होटल को "अशोका", डा० रघुवीर को "रघुवीरा", राम को 'रामा' तथा योग को 'योगी' कहने में गर्व अनुभव करते हैं।

दिल्ली की यमुना पार बस्ती विवेक विहार से गुजरते समय मैंने एक इमारत पर 'सेन्ट विवेकानन्द' कालेज का बोर्ड लगा देखा तो लगा कि भविष्य में 'सेन्ट तुलसीदास' सेन्ट सूरदास, सेन्ट बाल्मीकि जैसे शब्दों का प्रचलन हो जायेगा। उर्दू के नाम पर कुछ वर्ष पूर्व "मौलाना बाल्मीकि, 'बेगम सीता' बादशाह दशरथ, शहजादा राम एक पाठ्य पुस्तक में लिखा ही गया था।

अंग्रेजी पूरी तरह से हमारे इतिहास, संस्कृति व परम्पराओं को विकृत करने में लगी हुई है। इसके लिए हमारी अंग्रेजी की मानसिक गुलामी ही जिम्मेबार है। पिलखुवा (गाजियाबाद) उ० प्र०

भूल सुधार

—पृष्ठ ६६ पर डा० श्याम शर्मा 'नूर' की कविता में, प्रथम पंक्ति दूसरी पंक्ति के स्थान पर छप गई है। छठी पंक्ति में चन्द्रशेखर के स्थान पर 'इन्द्रा' शब्द अंकित कर लें और अंतिम पंक्ति में 'चले' गए के स्थान पर 'चला' गए शब्द सुधार लें—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक समाचार

नरसिंह हिन्दू रक्षा समिति द्वारा पंजाब दिवस का आयोजन

नरसिंहगढ़, ५ अगस्त। यहां पंजाब से हिन्दुओं के निरन्तर पलायन और उनकी हत्याओं को रोकने की मांग को लेकर हिन्दू रक्षा समिति द्वारा नगर बन्द का आयोजन किया गया जो पूर्ण सफल रहा। इसी दिन यहां समिति के नेतृत्व में एक विशाल जलूस भी निकाला गया और तहसील केन्द्र पर जलूस की समाप्ति के साथ ही एस०डी०ओ० नरसिंहगढ़ को राष्ट्रपति के लिए एक ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

बरनाला सरकार बनाम पंजाब समझौता

पंजाब के हिंदुओं में निरन्तर असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है। श्री बादल का यह कथन कि, "बरनाला के राज में पंजाब पुलिस में ५००० जवान भरती हों, और उनमें एक भी गैर-सिख न हो, तब आप क्या कहेंगे? बादल की सरकार में ऐसा कभी नहीं हुआ था।" स्वयं में एक टिप्पणी है कि बरनाला शासन में हिन्दुओं के साथ कितना पक्षपात किया जा रहा है। बरनाला को आतंकवादियों का समर्थक तो नहीं कहा जा सकता किन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि वे हिन्दुओं के लिए सिर्फ घड़ियाली आंसू ही बहाते हैं। हाल की घटनाओं से यह भी सिद्ध हो गया है कि बरनाला सरकार पंजाब समझौते को एक मजाक मानती है और उस पर अमल करने में कोई रुचि नहीं है। वह पंजाब में रहने वाले हिन्दुओं को न आतंकवाद के चंगुल से बचा पायी है, न ही उनके जानमाल की रक्षा कर पाई है।

बंगलादेश द्वारा बौद्धमूलवासियों का निष्कासन

पिछले १४ वर्षों से बंगला देशी सेना वहां के मूल निवासी चकमा बौद्धों को भारत खदेड़ने पर तुली हुई है। इन शांतिप्रिय चकमाओं के साथ यह अन्याय १९४७ से ही जारी है जबकि चटगांव में उनका ९८ प्रतिशत बहुमत होने के बावजूद, सीमा निर्धारण करने वाले अंग्रेज अधिकारी रैडक्लिफ ने अनेक आपत्तियों और प्रार्थना पत्रों के बावजूद इस क्षेत्र को पूर्वी पाकिस्तान को सौंप दिया था। तभी से पूर्वी पाकिस्तान सरकार और अब बंगलादेश सरकार इनके उन्मूलन करने पर तुली हुई है। इस समय त्रिपुरा के शरणार्थी शिविरों में १० हजार से अधिक चकमा लोग रह रहे हैं, वे पुनः ! बंगला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश नहीं जाना चाहते क्योंकि बंगलादेश उनके लिए कसाईघर बन चुका है। यदि भारत सरकार इन्हें उचित संरक्षण दे तो ये चकमा भारतीय सेना, पुलिस आदि दलों में शामिल होकर राष्ट्रविरोधी तत्वों का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं।

बम्बई आर्य समाज में पंजाब बचाओ दिवस

विगत १५ अगस्त को आर्यसमाज मन्दिर शांताक्रूज में 'पंजाब बचाओ, देश बचाओ' दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दू राष्ट्रीय संगठन के पंजाब के अध्यक्ष तथा दुर्याना टाइम्स के सम्पादक सुरेन्द्र कुमार बिल्ला ने पंजाब में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों और उनके नरमेध की जानकारी देते हुए कि पंजाब की समस्या के बीज आजादी के समय से ही पड़ गए थे। उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि पंजाब से पलायन करने वाले हिन्दुओं की घोर उपेक्षा की जा रही है जबकि कोई सिख यहां से जाए तो पंजाब सरकार तुरन्त राहत देती है। इस अवसर पर हिन्दुओं की सामूहिक हत्या रोकने में असफल बरनाला सरकार को बर्खास्त करने की मांग भी की गई।

इस अवसर पर पारित प्रस्ताव द्वारा फिरोजपुर अमृतसर एवं गुरुदासपुर जिलों को, जहां आतंकवादियों का बाहुल्य है, सेना के हवाले करने की भी मांग की गई। आतंकवादियों को दंड देने के लिए विशेष अदालतें गठित करने की भी मांग की गई। प्रस्ताव में यह भी मांग की गई कि हिन्दू बाहुल्य वाले चंडीगढ़ को अलगाववादी सिखों के हवाले न किया जाये बल्कि इसे केन्द्रशासित क्षेत्र ही बनाए रखा जाये।

भिलाई में आवासीय चिकित्सालय

शहीद भगतसिंह शिक्षा महाविद्यालय, भिलाई बी० एड, तथा आयुर्वेद सनातन औषधि एवं शल्य चिकित्सा के साथ ही अब १० बिस्तरों वाला निशुल्क आवासीय चिकित्सालय भी बन रहा है। ऐसी अवस्थाओं के अभाव में ही निर्धन हिन्दू धर्मान्तरित होते हैं। हिन्दुत्व के प्रचार-प्रसार हेतु महाविद्यालय में प्रेस की व्यवस्था भी की जा रही है।

चुटकुला

अध्यापक : छात्रः ! वदत आम्राणि कस्मिन् काले चषितुं लभ्यन्ते ?
छात्र : यदा माली उद्याने न भवति।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दानदाताओं की सूची

५१) रु० देने वाले

सर्वश्री—रणजीत राजसिंह, दिल्ली। चौ० मनीराम बैनीवाल, श्रीगंगानगर। पी० पी० चौहान, राजकोट। गुरुदेवसिंह धीमान, होशियारपुर। विनोद कुमार पंजाबी, गोधरा। एन० ए० त्रिवेदी गुजरात। मगनीराम, श्री गंगानगर, नरेन्द्रनाथ जुनेजा, बम्बई। रामावतार, बंबई। वैद्यनाथ मँदीरता, बस्ती। राजबहादुर एण्ड सन्स, एटा। शंकरलाल आर्य, अलीगढ़। सेबाराम सरपंच, सहारनपुर। मेवालाल आर्य, कलकत्ता। बी० एल० राजा, बम्बई। गणेशप्रसाद साहू, जोनपुर राज आयरन स्ट्रीट, गोबिन्द गढ़। जानकीलाल, मकराना सुन्दर लाल नारंग, सतना। अमरनाथ शर्मा, ताजगंज। सुरेन्द्रचन्द्र अग्रवाल, फिरोजाबाद, योगेन्द्रजी, कीर्तिनगर। रमेशचन्द्र गोयल, दिल्ली। प्रेमकान्ती अरोड़ा, चंडीगढ़, किशन गोपाल पुरोहित नागपुर। राधा चावल वाले, आगरा। रान्दढ़ आयरन स्टोर, मकराना। आनन्द राव मरातोराव, नागपुर। हंसराज शर्मा, दिल्ली। चक्रेश्वर मित्रा, धनबाद। मिस्त्री शंकरलाल, डूंगरपुर। बनवारी लाल शर्मा, कलकत्ता। प्रेमशंकर वेदप्रकाश, गाजियावाद। शंकर लाल बनवारी लाल, जोधपुर। वी० वी० देशमुख अहमदाबाद। परमात्मा प्रसाद मिश्र बम्बई। रमेश मेहता दिल्ली। पूरनमल देहली वाला बम्बई। श्रीकृष्ण दिल्ली। कल्याण थाना बी० पी० अग्रवाल बम्बई। आर-सी० अग्रवाल पूना। सीताराम आर्य राजपुर, नारायण सिंह खुर्द। प्रशांत कुमार, पोरबन्दर। नावल्टी प्रोसेस स्टूडियो बम्बई, नारायणसिंह, गोरखपुर। ओमप्रकाश अग्रवाल भोपाल। दसई जितई यादव, बम्बई। राजावाए गोंडया। राममुनि वानप्रस्थी हिसार। श्रीरामदास मानपुरी, गजानन्द रविदत्त शर्मा कलकत्ता हरिभाई कोटिया, पोरबन्दर हनुमान सेना, साररराम रामेश्वर प्रसाद पलामू। प्रकाशवती आर्य, बम्बई। राम चौधरी, हुमनाबाद। फतेह बहादुर सिंह देवरिया। जगदीश गम्भीर मेरठ। सपना आटो गैरेज, जालना। सुरेन्द्र कुमार शर्मा जयपुर। इंदरसिंह सोनीपत। सुदर्शनलाल फगवाड़ा। मदन प्रसाद आर्य, पलामू।

५०) रु० देने वाले

सर्वश्री—आर० के० बंसल आगरा। डा० ऊषा गुप्ता मुरादाबाद। सत्यभूषण नई दिल्ली। के. एस. त्यागी बिजनौर। प्रभुदयाल ओमप्रकाश फतेहपुर, तरुण कुमार, सूरत। हरवंसलाल कुमार, मुरादाबाद। मरणसिंह यादव, राजकोट। आज्ञावती आर्या अमृतसर। बूदोलाल रावत बीकानेर, डा. विश्वम्भरलाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कपूर, गोहाना । शिवरामती ओंकारनाथ, बान्द्रा । बी० एन० शिवलाल, जालन्धर । किस्तूरचन्द जोशी, नागौर । कमला भूटानी, दिल्ली । के० जी० केसवानी धूले । हरिश्चन्द्र शर्मा जींद । जुगेश्वर प्रसाद पटना । ओ० पी० मित्तल भरतपुर, चमनलाल भलौट, शिवचरण गर्ग बम्बई, कमलाप्रसादसिंह मिर्जापुर, कुमारी अरुणा पोखरियाल, गढ़वाल । अंबा प्रसाद भटनागर, मुरादाबाद । केदारनाथ शास्त्री धनगढ़ । रामलाल प्रेमप्रकाश एटा । रामनाथ वर्मा मुजफ्फर-नगर । चित्र कुमार विजनवारि । कमलनारायण अग्रवाल बहराईच । रतीराम शर्मा सिलीगुड़ी । गन्धर्व सिंहगार्ड, वीना सत्यवती शर्मा बरेली । दुलार बाबू ।

२०) रु० दान देने वाले

सर्वश्री—सरोज आर्य मेरठ, मंजुल शास्त्री नैनीताल । डा० महेन्द्र दिल्ली, रामप्रकाश छावड़ा दिल्ली, लीलाधर बुलन्दशहर, महावीरप्रसाद शाहजहांपुर, डा० रामशोभित समस्तीपुर । श्यामबाबू बदायूं । हजारीलाल गुप्ता दिल्ली मुलकराज डावर, दिल्ली । श्यामलाल मिगा, राहलकेला : किशोरीजिन्दल, जयपुर दिगम्बरसिंह वर्मा बुलन्दशहर, आर० एस० वधवा, दिल्ली । महावीर प्रसाद हलवाई, जमालपुर । राजबहादुर, वाजपुर । सुखबीरसिंह, दिल्ली । पदीहाजारीसिंह बुलन्दशहर, विजयमोहन गुप्ता मेरठ, पुरुषोत्तमगुप्त फतेहपुर, गंगाधर दूबे हजारीनाथ, रामानन्द स्वर्णकार जावला । एम० एम० उपाध्यक्ष, हरदा प्रकाशट्रेडिंग कं०, मद्रास । ताराचन्द भारद्वाज जालन्धर । गणपतलाल उज्जैन । व्रजमोहन चौ०, रांची । आर्य स० मुरादनगर गाजियाबाद । प्रवीन कुमार जिन्दल जगाधरी, कन्हैयालाल कलकत्ता, रमेशकपूर प्रयाग । टी० आर० कोहली लखनऊ । पी० राज गोपाल ग्वालियर । कमल पी० पटेल, बलसाड़ । कौशल्या ग्रोवर देहरादून, मेरनसिंह सिहोर, नकुल प्रसाद बरनवाल गिरीडीह, इन्दूराम वर्मा, कुल्लू । ओमशरण वर्जवाल, मुंगेर । कृष्णगोपाल भास्कर, बेगुसराय । शंकरदयाल चौ० होशंगाबाद, रामलाल सलूसा बहादुरगढ़ । अम्बा प्रसाद भटनागर, मुरादाबाद । रतनलाल, कानपुर । ज्ञानसिंह मोदीपुरम् । K. Udagoodtan, Vishakhapattnam । एम० पी० श्रीवास्तव, टीकमगढ़ । श्यामादेवीसूद, दिल्ली । शंकर कोडीवा लातूर । उमेशचन्द्र, गिरीडीह । बलदेव बानप्रस्थी बिजनौर । नामदेवराव लक्ष्मणरावं लातूर । चन्द्रसिंघल राजगांगपुर, भगवानदास आर्य, हिसार । हरदयाल गुप्ता, जम्मू । केदारनाथ आर्य, गोंडा । किस्तूर चन्द जोशी, मकराना । एम० एल० बागड़ी बदायूं । नीलकंठ बलाथ स्टोर्स बुलढाणा । परशुराममिश्र लखनऊ । जगदीशचन्द्र शास्त्री, कांगड़ा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११) रु० देने वाले

सर्वश्री —भजनसिंह धौलपुर। द्वारकादास रोगांव। गणेश प्रसाद भागलपुर, नंदकिशोर बुलठाणा। बी० एस० गुप्ता, कुरुक्षेत्र। लच्छीराम, सहारनपुर। लक्ष्मणसिंह मैनपुरी, धर्मचन्द आर्य हिसार। पालीगल जन० स्टोर काकरौली, चन्द्रिका प्रसाद सिंहभूमि, जगतनारायण पौढ़ी गढ़वाल। देसराज तरनतारन। दयालसिंह देहरादून। एस० आर० मित्तल भटिन्डा। आर० बी० यादव प्रताप गढ़, केजरीवाल, धनबाद। पुरुषोत्तम मण्डला। उमेशचन्द्र, मैनपुरी। सुशीला, कलकत्ता। हरिवंश आर्य, बस्ती। कुन्दनमल, हैदराबाद। श्यामलाल गंगटोक, नाथूमल, छपरा। मोतीलाल, धनबाद। शिवचन्द्र प्रसाद, बम्बई। शोमर्मसिंह, नैनीताल, पी० एल० कपिला विलासपुर। रामचन्द्र अहमदाबाद, के. शंकरैय्या हैदराबाद। सुधीर कु० मूसला देहरादून। आर० के० मेहरा, नौएडा। आर्य समाज, गंगा खेड़ बिजयमणिलाल, गोदिया राजेन्द्रसिंह, फतेहाबाद शंकर प्रसाद चौस्ता। ठाकुर रामपुकारसिंह, पचरखी। बी० एल० मिश्रा, बम्बई। राम आय सोट मेरठ, मु० ह० कुलकर्णी लातूर राहुल, जामनगर। के० एम० वीर कुंवर, हिंगोले। सूरज प्रकाश शिमला। विजयदत्त दीक्षित, ललितपुर। सत्यवती शर्मा बरेली, ओमप्रकाश वार्ष्णेय अलीगढ़, नंदकिशोर, दिल्ली। छेदी प्रसाद लखीमपुर। अमृतलाल भटिण्डा, मिलापचंद जैन जयपुर, श्री—घरौंदा सरयू प्रसाद गुप्त हजारी बाग, के० एल० गोधा उदयपुर, भंवरसिंह, मुजफ्फर नगर, डी० एन० गुप्ता दिल्ली चन्द्रभान सहारनपुर। रमेश कु० सोनी ललित पुर, राम औतार गुप्त शाहजहांपुर। एस० एन० अग्रवाल कलकत्ता, पी० के० कपूर बम्बई, रान जी के० गनातरा बम्बई। एन० सी० शाह नाडियाड, ओम प्रकाश अग्रवाल भोपाल। हरिप्रसादसिंह भोपाल। आर्य समाज, इलाहाबाद। इमावस्त उपाच्या गाजीपुर। आर० के० शर्मा, कैथल। नारायणसिह मलौर, एम० एस० राणा खण्डवा। बोधन नामक ढामला। दसईलतई यादव, बम्बई। हेमराज मोहाली, नेगट्रो टैक्सटाईल मद्रास। मगन भाई जामनगर। आर० सी० शर्मा नीमच। एम० आर० सबवाली सरस्वती देवी, राजबहादुर एण्ड सन्स, आगरा। देवी सिंह पटेल रतलाम। महेन्द्र सिंह आर्य, झाँसी श्री बी० एस० श्रीवास्तव, बरहारपुर। गोवर्धन लाल, अकोला। कमल पृ० चौबे दुर्ग। योगेन्द्रराव मनपुर। मूलचन्द गर्ग टोंक। राधेश्याम शर्मा बुलन्दशहर। बजीर सिंह रोहतक। बृजकिशोर श्रीवास्तव, गोंडा। अमृतलाल मोहनलाल राठौर, राजकोट। त्र्यम्बक नाथ कानपुर। मेघनाथसिंह धौलाना। आर० सी० गुप्ता जयपुर, जीतूराम आर्य मिर्जापुर, सज्जन कु० प्रयाग कारबिस गंज, सत्यनारायण प्र० आर्य बस्ती। लक्ष्मीनारायण रस्तोगी गौंडा। श्याम सोनी नरसिंह गढ़।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जे० टी० कवाचीवाला अहमदनगर। रमेशचन्द्र बूंदी। रामेश्वर लाल अग्रवाल, रुड़कीं, हीरालाल बंसल पुणे, रामनाथ अग्रवाल पुणे, अशोक कुमार मुजफ्फर-नगर, छोटेलाल गुप्त हरदोई, सुदामा कु० गुप्त हरदोई, रमेशचन्द्र गर्ग सोनी। तुलसीनाथ जोगवंशी सिवाना बिहार। प्लास्टिक उद्योग पटना। मिकानचंद महतो पूणे। बी० बी० सिंह सतना। बद्रीनारायण जायसवाल भोजपुर। राम किशोर बबेरू। जनार्दन प्रसाद पाण्डेय अंबिकापुर। सरला जौहरी, बरेली। सुरेशचन्द्र चौरसिया बाराबंकी। सरदार सिंह जालौर। रामप्रसाद लहरपुर। रामगोपाल अमरोहा। प्रतापसिंह राठौर मण्डी। विष्नूभक्त गौतम असम। प्रेमरंजन कारसिग्रं, अमरनाथ आर्य तलवाड़ा। ख्याली राम जोशी चमोली, रामगोपाल पाल आगरा। आर० एम० थोगट औरंगाबाद, हरवंसलाल गोयल रीहाबाद, प्रो. रवि शोलापुर, वाकना ब्रादर्स मद्रास, घनेश्वर गुप्ता फरूखाबाद, रामेश्वर लाल विश्नोई। श्री गंगानगर मनोहर लाल आर्य अमरोहा। जगदीश यादव दीमापुर। क्षेमचन्द्र सुमन शाहदरा। सत्यदेव सिंह, मथुरा। रमेशचन्द्र प्रकाशचन्द्र कानपुर, के० वी० साहनाथ फरीदाबाद। डा० चन्द्रभानु विजनौर श्री प्रेम प्रकाश धूरी। एच० सी० गुप्ता दिल्ली। श्री विजेन्द्रकुमार मुरादाबाद श्रीरामनिवास जी बम्बई। भेरा राम टाक सवाईबांध। रामप्रसाद पौद्दार, बम्बई। संतोष कुमार फतेहपुर। प्रभात आश्रम मेरठ। त्रिलोक चन्द्र बरेली। भगवती प्रसाद कानपुर। राम गोपाल छिन्दवाड़ा, सुखबीरसिंह दिल्ली। शिव-नन्दन प्रसाद नालन्दा, चुन्नीलाल भ्रामर, जगदीश प्रसाद दिल्ली, एस० एल० आर्य जलपाई। गुड़ी एम० पी० सिंह सहारनपुर। प्रिंसीपल डी० ए० वी० स्कूल अमृतसर, गोबिन्दलाल भीलवाड़ा, रामबाग लश्कर, श्रीऊमल चन्दोसी, द० रा० शेवड़े अहमदाबाद। मदन गोपाल भीलवाड़ा। उमाकांत भावनगर। टिम्बर मर्चेण्ट यमुनानगर। जी० डी० दुबे जगदलपुर। रामसहाय दिल्ली। विशवम्भर दयाल सिकन्दराबाद। पंचवटी नागपुर। अशोक कु० रांची। सूर्य प्रकाश गुप्त, राजवैद्य गुजरात। पृथ्वीराज असम। सतीश कुमार अफजलगढ़। रमेश भसीन दिल्ली। या के० एस० मिश्र होशंगाबाद। सोमप्रकाश ओमपाल सिंह मेरठ। पवन कुमार पठानकोट। बृजमोहन बिहारीलाल केमाल पानी अफ़जलगढ़। जसवन्त राय दिल्ली, YOVOTES दिल्ली। मुन्नीलाल बुलन्द-शहर, एस० एल० कोतवाल जम्मूत। मनोहर लाल नागपुर। सोनी रसिक लाल गुजरात। एस० के० चौधरी दिल्ली। भगवत प्रसाद लखनऊ। रामबली हरदोई। जानकी लाल प० निभाड़। बंसीलाल, गुजरात। U.V.S. चौहान आगरा। श्यामलाल रोहतक। परमानन्द, दिल्ली। विद्यासागर शर्मा दिल्ली, रामेश्वर दयाल दिल्ली। गोविन्दराम बाढ़मेर। मनोहरलाल भौंडवाले दिल्ली।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डी० सी० जैन दिल्ली। विनयचन्द्र पचौरी खरगासिंह मथुरा। सुनील कु० सिन्हा ग्वालियर, यशपालसिंह आलमनगर, चन्द्रलाल झरिया, कावले नामदेव बीदर विनोद कुमार बिजनौर, मोरसिंह आर्य खोंक, एस० के० मोंगा हरिद्वार, धीरसिंह पद्मपुर। शिवनारायण, कानपुर। बनगरी लाल झुझुर। जेठाराम, सूरत, के० आर० पाटिल चलगांव। रामचन्द्र गुप्ता सहारनपुर। भगनीदास, एटा। कृष्ण दत्त बाजपेयी कानपुर, राजकुमार देवबन्द, श्यामलाल भरतपुर। केशव आर्य बेगुसराय, बृजभूषणगुप्ता सीहोर। भोलाराम नागौर। चन्द्रशेखर, गुरुदासपुर। विजयप्रकाश फरीदाबाद। सूर्यकाल नान्देड़, शंकरलाल भन्दसौर, आर० के० अमरपुरी ग्वालियर, श्याहीलाल बुलठाणा। अरुणदेव शास्त्री टोंक, आर० बी० माहोन्ती मंदसौर। अभयराम गोरखपुर। मथनी शंकर सुरेन्द्र-नगर, रामसिंह सुरेन्द्रनगर। सी० के० सोनी ईडर, रामेश्वर प्रसाद फतेहपु, प्रभुदयाल फतेहपुर, लखनलाल फतेहपुर, शवरणसिंह फतेहपुर। एम० जोशी, नाडियाड, विष्णुप्रसाद जोशी नाडियाड। हरिओम फतेहपुर। रामजीलाल, भरतपुर। ओ० एस० मेहता दिल्ली। गणेश नारायण बम्बई। नरेश मिशन, कानपुर। राजकुमार मुजफ्फर नगर। रामनारायण आर्य नान्टेड़। आर० के० पुरम दिल्ली, शिवप्रकाश बूलिया भीलवाड़ा। विष्णुप्रसाद रायपुर, ओमप्रकाश सोहना, ब्र० देवेन्द्र पाण्डेय उन्नाव। पटेल नरसिंह पूना। गणपतलाल, टोंक। भुमानन्द गंगाराम पेतडी पूना, घनश्याम, फरूखाबाद। हुकुमचन्द नरसिंहपुर। श्यामसुनेर लोहिया दिल्ली, वेदपाल चंडीगढ़। ज्ञानचंद व्यास ताण्डूर। जयदेव साहिबगंज। शिवमंगल राय मुजफ्फरनगर। पप्पूमल सिंधी करनाल। बंगाली ठाकुर, समस्तीपुर। पूरणमल शास्त्री, मुरैल।

१०) रु० दान देने वाले

सर्वश्री—फिरंगी मिस्ती इलाहाबाद। राजेन्द्रप्रसाद गोयल दिल्ली। हरशरण आर्य बुलन्दशहर, जगपालसिंह दिल्ली, खेता भाई अहमदाबाद, N.N. ZUN JURDE औरंगाबाद। चौ० मनोहरसिंह नैनीताल, रोहनसाब हजारी बाग, पृथ्वीराज लाहोटी असम, कालीप्रसाद दिल्ली, बद्रीनाथ गुप्त कोटा, कृष्ण लाल एडवोकेट सहारनपुर। गोपालदास शर्मा सरवाना, सुभाषसिंह पुणे, सत्य स्वरूप, बुलन्दशहर। धर्मदेवी फरीदाबाद। शकरदास बब्बर दिल्ली। प्रकाश माहेश्वरी, बुलन्दशहर। वैद्य रामसिंह गुजरात। जगदीशशरण मुरादाबाद। रामनिहोरसिंह जौनपुर, हरस्वरूपसिंह मुरादाबाद, देवेन्द्रकुमार धामपुर, बृज-लाल गुप्ता हिसार, बनेश्वरीप्रसाद मधेपुरा, लक्ष्मीचन्द्र वार्ष्णेय, गाजियाबाद, रमेश दामोदर रींवा। हरीशंकर माहेश्वरी कासगंज। सुनहरासिंह, सहारनपुर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंगाप्रसाद सिंह कलीयाबाद, धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता केराकत, अतरसिंह शामली; भीमसिंह आहा, अमृतलाल पाली, हर भगवान मेहता दिल्ली। चौ० सुरेन्द्रपाल मुजफ्फरनगर, कैप्टन शेरसिंह पुल्डाना, हरनारायण आर्य बस्ती। हवलदान् भगवतदयाल आर्य चांदपुर, कैलासचन्द्र रस्तोगी किरतपुर, हरिहरसिंह, हजारीबाग जगपालसिंह, मेरठ अतरसिंह मंत्री आर्य, शाहपुर त्रिलोकीनाथ, लखनऊ। अध्यापक मानसिंह अलवर। डा० एन० एल० शर्मा, विलसन्डा। पंचमदास कुशवाहा उरई। प्रवीणदत्त, नागौर। शिवप्रसाद पाण्डेय नागौर। नाथूदत्त नागौर, लालसिंह नागौर, नारायणलाल मकवाना नागौर। केसाराम सठ औफ जेताराम झांड़वा। चिरंजीलाल अजमेरा। भीलवाड़ा राजारामचन्द्र जलगांव। बालाराव सावरकर बम्बई, सूर्यदेवपंडित सीतामढ़ी, जुगुतराम आर्य रामपुर। शंकरभाई मेहसाना। पोसरदास कपूर देहरादून। लक्ष्मीनारायण अग्रवाल मुरादाबाद। गरीबदास यादव भोपाल। श्रीनाथ पाण्डय वाराणसी। बंशीधर तिवारी कठनी। विजयकुमार, गोरखपुर। जयप्रकाश एम० बरनवाल अहमदाबाद।

चुटकुलें

पिता ने अपनी बेटी से कहा—"अरी मुन्नी, अपनी गुड़िया की शादी में हमें ले जाएगी न।"

इस पर मुन्नी ने जल्दी से जवाब दिया—"ना ना आपने तो मुझे मम्मी की शादी में याद तक नहीं किया।

किसी महफिल में एक महिला बड़ी लीन होकर गा रही थी कि एक श्रोता ऊबकर अपने पास के व्यक्ति से बोला, "कैसी भद्दी आवाज है! आप जानते हैं यह महिला कौन है?"

उक्त व्यक्ति ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया, "जी हां यह मेरी पत्नी है।

इस पर लज्जित होकर श्रोता बोला, "माफ कीजिए, मैं सोचता हूं उनकी आवाज उतनी खराब नहीं है, जितने कि गीत के बोल। क्या आप बता सकते हैं गीतकार का नाम?

व्यक्ति (उतनी ही शान्ति से) "जी गीतकार मैं ही हूं।" □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कितने दीपक और जलायें

—बलबीर सिंह रंग

मेरे राष्ट्र देवता बोलो, कितने दीपक और जलायें ?
सूरज यदि जल रहे क्रम से, जलें रात भर लाखों तारे ?
अनगिन नंदा दीप तिमिर के, सागर से लड़-भिड़कर हारे।
जाने कितनी बार किरण ने, कण-कण आंगन द्वार बुहारे ।।
गली-मोड़ हर राजमार्ग पर, चला रोशनी का फव्वारा,
फिर भी मरा नहीं अंधियारा, और कौन-सा मंच चलाएं ?
कितने दीपक और जलाएं ? आ -मृग का पीछा करना,
संकल्पों का राम थक गया, संदेहों का नाग न मरता,
रण करता घनश्याम थक गया, चलें रुकें, बढ़ चलें कि ठहरे,
हमको जकड़ रहे हैं संशय, हम मरूथल के हिरन हो गए,
कब तक झेले और पराजय, प्रेतों के इस महानगर में,
कब तक और प्रभाती गाएं ? कितने दीपक और जलाएं ?
झिझक रही वरने से नल को, कैसी है यह जय-दमयंती ?
सत्यवान के वध पर खुश है, प्रजातन्त्र की यह सतवन्ती ।।
यशोधरा बदचलन हुई तो, किसको दर्द सुनाए गौतम ?
दिव्य ज्योति तो सपन बन गई, युग का सत्य हो गया तम ।।
धुंधलाती निष्ठा वाली से, कितने नगर-डगर उजलाए ।।
कितने दीपक और जलाएं ।।

"हम रहें न रहें, पर हमारे देश का भविष्य "ओ३म्" ध्वज की छाया में स्वर्णिम होगा और धरती का सबसे बड़ा राष्ट्र बनेगा। यह हमारा अटल विश्वास है।"

—महात्मा वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीन लोक से न्यारी मथुरा कभी बनी थी इस्लामाबाद

—जमना दास अख्तर

मैंने कुतुबमीनार के आसपास के इलाके में लालकोट के २७ हिन्दू और जैन मंदिरों को तबाह करके मस्जिदों मे बदल देने और गियासुद्दीन तुगलक के निर्देश से दिल्ली और अन्य शहरों में मंदिरों को तबाह कर देने और मूर्ति-पूजन करने वालों के नरसंहार का जिक्र किया था। मैंने लिखा था कि अजमेर में भी हिन्दुओं के मंदिर गिरा कर उन्हें मस्जिदों में बदल दिया गया था। इस पर कुछ लोगों ने मुझ से पूछा कि क्या आप चाहते हैं कि इन मस्जिदों को गिराकर मंदिरों में पुन: बदल दिया जाये और क्या यह सत्य है कि मथुरा में कृष्ण मंदिर को गिराकर औरंगजेब ने एक विशाल मस्जिद का निर्माण किया था। मेरा उत्तर यह है कि मैं इस बात के हक में नहीं कि इन मस्जिदों को गिराकर उनकी जगह मंदिर बना दिया जाये। इससे कोई लाभ नहीं होगा। बुराई के बदले बुराई करना ठीक नहीं होता। इन मस्जिदों का कायम रहना ही इस बात की याद दिलाता रहेगा कि मंदिरों को गिराने वाले कौन लोग थे। मैं इन लोगों की हरकतों के लिये आज के मुसलमानों को अपराधी ठहराने के हक में भी नहीं। अलबत्ता, इन्हें स्वीकार कर लेना चाहिए कि कुतुबुद्दीन ऐबक, अलाउद्दीन, गियासुद्दीन खिलजी आदि शासक इस्लाम के नाम पर लुटेरों और डाकुओं का पार्ट अदा कर रहे थे।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो लोग दूसरों का हक छीनकर य खूनखराबा करके शा न पर कब्जा कर लेते हैं वे अपने आपको बढ़ चढ़क मजहबी तौर पर जनूनी सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। महमूद गजनवी अपने पिता की मृत्यु पर अपने बड़े भाई को कैद करके उसकी हत्या करा द थी। स्वाभाविक तौर पर जनता उससे घृणा करती थी। इसलिये उसने अपने आपको इस्लाम का रक्षक जाहिर करके भारत पर हमले किये और मंदिरों को तोड़ा और लूटपाट शुरू की। सैनिकों को लूटपाट में हिस्सा मिला और इस तरह गजनी की जनता यह भूल गयी कि वास्तव में वह अपने ही परिवार के सदस्यों की हत्या करने वाला है। गियासुद्दीन तुगलक की माँ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दु थी। उसे आम मुसलमान अच्छा नहीं समझते थे। राजसिंहासन पर कब्जा करने से पहले बगावत हो गयी थी।

विद्रोहियों का साथ देने वाले हिन्दु थे और विद्रोह करने वाले वे लोग थे जो हिन्दुओं से मुसलमान बने थे परन्तु उन्हें समान दर्जा नहीं मिला था। तुगलक ने शासन पर कब्जा किया तो अपने आपको पक्का मुसलमान जाहिर करने के लिये उसने हिन्दुओं का नरसंहार शुरू कर दिया। मंदिर तोड़े और मूर्तिपूजा को अपराध करार दिया। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने बूढ़े चाचा की हत्या की थी। मुसलमान उसे हत्यारा समझते थे। इसलिये उसने अपने आपको इस्लाम का रक्षक जाहिर करने के लिये मंदिरों को लूटना शुरू कर दिया।

यही हालत औरंगजेब की थी। उसने अपने पिता शाहजहां और अपनी बहन को ताजमहल में कैद किया। अपने बड़े भाई दारा शिकोह और दूसरे दो भाईयों की हत्या की। स्वाभाविक तौर पर आम मुसलमान उसे हत्यारा समझते थे। इसलिये उसने अपने आपको इस्लाम का रक्षक जाहिर करके हिन्दुओं को आतंक का निशाना बनाया। कट्टर पंथियों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये उसने मौलवियों के वजीफे स्वीकृत किये। हिन्दु मंदिरों को गिराकर उनकी जगह मस्जिदों का निर्माण किया।

मथुरा की तबाही

औरंगजेब की इन हरकतों का जिक्र समकालीन मुसलमान इतिहासकारों और बाद के मुसलमान लेखकों ने अपनी पुस्तकों में पूरी तरह किया है। औरंगजेब के जीवनकाल में ही उसके निर्देश से मिर्जा मुहम्मद काजिम ने उसके बारे में पुस्तक लिखना शुरू की थी। इसका नाम 'आलमगीर नामा' है। अचानक ही बादशाह ने निर्देश दिया कि इस पुस्तक का लिखना बंद कर दिया जाये। कारण यह था कि बादशाह मराठों और पठानों की लड़ाईयों में बुरी तरह व्यस्त था और सरकारी खजाना खाली हो रहा था। उसकी मृत्यु के बाद साकी मसतहिद खान ने इस पुस्तक को मुकम्मल किया। रायल एशियाटिक सोसाईटी ने कलकत्ता में १९४७ में इसका अनुवाद प्रकाशित करवाया।

इस पुस्तक के पृष्ठ ६० पर लिखा है कि बादशाह ने जो कि न्याय करने वाला, सच्चाई से काम लेने वाला और इस्लाम को मजबूत करने वाला है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रमजान महीने की १५ तारीख को (२६ जनवरी १६७०) एक निर्देश जारी किया कि मथुरा में केशवराय के डेरे के नाम से मशहूर मंदिर को गिरा दिया जाय। उसके अधिकारियों ने मेहनत करके थोड़े ही दिनों में मंदिर को गिरा दिया। यह मंदिर काफिरों की मजबूत बुनियाद था। इसकी जगह बड़ी भारी रकम से एक विशाल मस्जिद का निर्माण किया गया। महामूर्ख वीरसिंह बुन्देला ने बुराईयों का यह मंदिर बनवाया था। शासक बनने से पहले जहांगीर शेख अबुलफजल से नाराज हो गया था। इसकी हत्या करके यह हिन्दू काफिर जहांगीर के निकट आ गया था।

इससे प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे मंदिर के निर्माण की इजाजत दे दी थी। इस मंदिर पर ३३ लाख रुपयों का खर्च हुआ था। अल्लाहताला की कृपा से कुफर को तबाह करने वाले बादशाह औरंगजेब ने असम्भव दिखाई देने वाले इस काम को पूरा कर दिया। इस मंदिर की मूर्तियां जो छोटी बड़ी थीं और उनमें बहुमूल्य हीरे जड़े हुए थे, आगरा में लाई गई। इन्हें बेगम साहिब की जामा मस्जिद की सीढ़ियों में दबा दिया गया ताकि (मस्जिद में आने वाले लोगों के पांव तले) लगातार इन्हें रौंदा जाये।

इतिहासकारों ने लिखा है कि औरंगजेब ने मथुरा का नाम बदलकर इस्लामाबाद रख दिया था।

काशी विश्वनाथ का मंदिर गिराया गया

इसी इतिहासकार ने पृष्ठ ५५ पर लिखा है कि औरंगजेब के निर्देश से काशी में विश्वनाथ का मंदिर गिरा दिया गया। मैंने इससे पहले अपने लेख में बताया था कि काशी में बहुत बड़ा मजार वास्तव में हिन्दू और बौद्ध मंदिरों को तोड़कर बनाया गया था। मस्जिद की दीवारों का निचला भाग उसी मंदिर की दीवारों का है। इसी पुस्तक के पृष्ठ ५३ पर लिखा है कि मलारना में बादशाह के आदेश से सालेहबहादुर ने मंदिर गिराया। उद्धव बैरागी को इस आरोप में गिरफ्तार किया गया कि वह अपने धर्म का प्रचार करता था। बाद में उसे और उसके दो अनुयाईयों को फांसी दे दी गयी।

जोधपुर और उद्धेपुर के मंदिर

इस इतिहासकार ने पृष्ठ १०८, ११५ और ११६ पर लिखा है कि इस्लाम के प्रचार के लिये और काफिरों की रस्मों को नष्ट करने के लिये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बादशाह ने उनसे जजिया लेने का निर्देश जारी किया। यह आदेश २ अप्रैल, १६७६ को जारी किया गया। बादशाह ने कहा कि कुरान के सिद्धांतों के अनुसार दिल्ली और दूसरे प्रांतों मे हिन्दुओं से जजिया वसूल किया जाये। जजिया की वसूली के लिये वरिष्ठ उलेमा नियुक्त किये गये। बादशाह के निर्देश से खान जहान बहादुर जोधपुर में हिन्दुओं के मंदिरों को गिराकर मूर्तियों से लदे हुए छकड़ों को लिये हुए आया। उसने बादशाह से मुलाकात की। बादशाह ने उसकी बहुत प्रशसा की और मूर्तियों को जो कि हीरों से जड़ी थी और सोने, चांदी, कांसे आदि की थी, सरकारी जिला खान में पिघला दिया और निर्देश जारी किया कि जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर इन्हें रखा जाये ताकि लोग उन्हें रौद कर गुजरे। १४ जनवरी, १६८० को राजस्थान के उद्धेपुर में महाराणा के महल के सामने विशाल हिन्दु मंदिर को गिरा देने का निर्देश दिया वहां केवल २० राजपूत थे। वे एक-एक करके बाहर निकले। इन्होंने बादशाह की सेना के बहुत से सिपाहियों की हत्या कर दी। इनमें अत्यन्त वफादार इलियास खान भी शामिल था। लड़ते-लड़ते तमाम राजपूत मारे गये और इसके बाद तमाम मूर्तियां तोड़ दी गयी।

इतिहासकार के अनुसार उद्धेपुर के उद्धेसागर में तीन सुन्दर मंदिर तोड़ दिये गये। शहर के आस-पास के क्षेत्रों में कुल मिलाकर १७२ मंदिर तोड़े गये। चित्तौड़ में ६३ मंदिर इसी तरह तोड़ दिये गये। अम्बर में भी ६६ मंदिर गिराकर मस्जिदों का निर्माण किया गया।

इतिहासकार ने इन तमाम हरकतों के लिए बादशाह को इस्लाम का रक्षक करार दिया है। दक्षिण में हैदराबाद, बीजापुर और अन्य शहरों में हिन्दुओं के मदिर बड़े पैमाने पर तोड़े गये। बीजापुर में हमीदुदीन ने मदिर गिराया।

बादशाह को बताया गया कि उसने मंदिर की जगह मस्जिद बनवा दी है। बादशाह ने प्रसन्न होकर उसे गुसलखाने का दारोगा बना दिया। पृष्ठ ३१४ पर लिखा है कि बादशाह ने तमाम हिन्दु मुंशी हटा दिये। काफरों के पूजा स्थान बड़ी भारी संख्या में गिरा दिये। इन्हें तोड़ फोड़ कर वीरान कर दिया गया। जब लोग इनके खंडहरों को देखते तो हैरान रह जाते कि इतना कठिन काम किस तरह कामयाबी से पूरा किया गया है।

इस इतिहासकार के ब्यान अनुसार महाराज शिवाजी के बेटे शम्बाजी को उसके किलेदार ने धोखा दिया। सम्बाजी को गिरफ्तार करके मुहीदीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से उसकी बेटी का विवाह करा दिया गया। इतिहासकार के शब्दों में बादशाह ने इस्लाम से अपनी मुहब्बत के कारण आदेश दिया कि इसे दरबार में हाजिर किया जाये। उसके सिर पर फांसी के कैदियों की लकड़ी की टोपी पहनायी गयी। जिसके साथ घटिया लगी थी और गीदड़ की दुम लगाई गई थी। ढोल और नक्कारे बजाकर उसे दरबार में पेश किया गया। ताकि मुसलमान खुमरों और काफलों के हौंसले उसे देखकर टूट जायें जब प्रातः उसे दरबार में लाया गया तो रात शब बरात ही थी क्योंकि लोग यह दृश्य देखने के लिये रात भर सोये नहीं थे। दिन ईद की तरह ही गया था। क्योंकि बूढ़े और जवान इस खुशी का दृश्य देखने उमड़ आये। बादशाह ने निर्देश दियां कि कैदी को फांसी की कोठरी में बंद करके सजा दी जाये।

पहले तो उसकी आंखें निकाल दी गयीं। बाद में उसके अंग एक-एक कर काट दिये गये। बादशाह ने जब उसे मृत्यु दण्ड देने का आदेश दिया तो उसने राजसिंहासन से उतर कर अल्लाह का शुक्रिया अदा किया। संबा जी की पत्नी और बेटियों को कैद कर लिया गया था। उसी एक बेटी का विवाह सिकंदर खान से कर दिया गया। सम्बाजी का भाई राजाराम लड़ाई में मारा गया। उसकी एक बेटी का विवाह असगर खान के प्रति शमशेर बेग से कर दिया गया।

इसमें संदेह नहीं कि राजा जसवंत सिंह आदि कुछ हिन्दू औरंगजेब सेना के वरिष्ठ अधिकारी थे परन्तु औरंगजेब को अफगानों की बगावत पर काबू पाने के लिये इनकी आवश्यकता थी। मुसलमान सैनिक अफगानों से लड़ने के लिये तैयार नहीं होते थे। राजा जसवन्त सिंह ने पुनः काबुल पर कब्जा कर लिया था।

हैरानी है कि सब कुछ जानते हुए कुछ कट्टरपंथी आज भी औरंगजेब की प्रशंसा करते हैं। उसने अपने पिता को कैद किया और भाईयों की हत्या की। वे मजहब के नाम पर इसकी इन हरकतों को भी उचित ठहराते हैं।

औरंगजेब ने गुरु तेग बहादुर, भाई मती दास और सत्ती दास को शहीद किया इतिहासकारों ने इन घटनाओं का जिक्र नहीं किया।

(वीर अर्जुन से साभार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिवाजी सुरक्षित ऐसे बचे...

–पोमाराम चौधरी नारलाई

असे हो जया अंतरी भाव जैसा।
वसे हो नया अंतरी देव तैसा॥

"मराठे शिवाजी महाराष्ट्र के अमोल रत्न थे। मुगल औरंगजेब को इनकी वीरता से हर समय डर रहता था। शिवाजी आध्यात्मिक शक्ति के भी प्रबल धनी थे। अपने समर्थ गुरु श्री रामदास के परम् भक्त थे। प्रत्येक कार्य अपने गुरु के निर्देशन में ही करते थे।

एक दिन शिवाजी सूर्योदय के पूर्व उठे तथा अपने नित्य ईश्वरीय कार्य-क्रम को पूरा करने के पश्चात् मंत्री से कहा—"आज अपना घोड़ा तैयार कर दो। मैं अकेला ही राज्य भ्रमण हेतु जाऊंगा!" घोड़ा तैयार होते ही राम नाम लेकर रवाना हो गए। वे राम के नाम स्मरण में इतने लीन हो गए कि उनका घोड़ा कहां जा रहा है, उन्हें यह भी याद न रहा! वे इसी को आनन्द समझने लगे, इसी को राज्य समझने लगे। नाम स्मरण में लीन होने के कारण उनका घोड़ा भटक गया।

जब वे जंगलों में इधर-उधर भटक रहे थे तब आगे से अचानक आवाज आई—मारो! मारो!...

शिवाजी ने इस भयंकर आवाज को सुनकर इधर-उधर देखा, परन्तु कुछ भी दिखाई नहीं दिया। आश्चर्य से देखते रहे।

उसी समय उसी दिशा से वापस आवाज आई—पकड़ो! पकड़ो! कहीं भाग न जाए। क्षण भर में शिवाजी को हजारों की संख्या में मुगल सेना दिखाई दी।

सेनापति चिल्लाया, "आज इसको पकड़कर ही दम लेना होगा।"

शिवाजी सब कुछ जान गए किन्तु घबराए नहीं। राम का नाम बोलने लगे। अपने घोड़े को जोर से ऐड़ लगाई जिससे घोड़ा अज्ञात मार्ग की ओर हवा की भांति उड़ने लगा।

आगे-आगे शिवा व पीछे-पीछे मुगल सेना भूखे भेड़ियों की भांति आ रही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

थी। अचानक शिवाजी को पढ़पुर में विट्ठल का मंदिर दीखा। मंदिर में पहुंचते ही वहां के महान् संत श्री तुकाराम को दंडवत किया तथा विट्ठल भगवान को भी दंडवत किया। घोड़े को मन्दिर के अंदर बांध दिया गया। तुकाराम जी भी सुब स्थिति को जान गए अत: मन्दिर के दरवाजे बंदकर दिये किन्तु क्रूर सेना ने आकर मंदिर के चारों ओर घेरा डाल दिया। शिवाजी वहां पर भी ईश्वर का ध्यान करने लगे।

शिवाजी अकेले थे, यदि सेना का मुकाबला करें भी, तो कैसे करें ?

मंदिर मजबूती से बनाया हुआ था। सेनापति ने कहा कि शिवा को प्रातःकाल आराम से पकड़कर कैदी बना लेंगे।

मुख्य दरवाजे पर कुछ मुख्य सिपाहियों को नियुक्त कर दिया ताकि शिवाजी…

थकान के कारण मध्य रात में पहरेदार बेहोश होकर सो गये। उसी समय तुकाराम जी ने शिवाजी को जाने का आदेश दिया।

शीघ्र ही शिवाजी ने विट्ठल को दंडवत किया तथा धीरे-धीरे बाहर निकल गये। शिवाजी जब बाहर आए तो सभी नींद के खर्राटे भर रहे थे।

शिवाजी ईश्वर कृपा से बड़ी आसानी से वहां से निकल गये।

प्रातःकाल जब पहरे के सिपाही उठे तो वे दंग रह गये कि शिवाजी मंदिर से सुरक्षित कैसे भाग सके।

जब शिवाजी अपने राज्य में पहुंचे तब उनको (स्वयं को) यह आभास हुआ कि मेरी आज ईश्वर ने स्वयं रक्षा की। वस्तुतः जैसे हम ईश्वर को याद करेंगे वैसे ही ईश्वर भी ध्यान रखेगा।

"अनन्यास रक्षीत से चापपाणी"

केवल इक्कीस रुपए दक्षिणा देकर जन-ज्ञान में अपना वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करवायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठो !

—ठाकुर लटकनसिंह

उठो बहनो ! क्या सोच-विचार,
आज छाया है कौन खुमार,
वीर थीं तुम तो पहले धीर,
भीरु क्यों बनती अब लाचार।।
कहां वह कर्म धर्म-अनुकूल,
कहां वह जीवन सुख का मूल,
देख यह पश्चिमीय अंधियाव,
वहीं क्यों जाती सुध-बुध भूल।।
बनी जाती हो क्यों नादान,
भूलकर वह अपना अभिमान,
शिवा, राणा-सी वीर महान,
तुम्हीं ने पैदा की संतान,
उठा लो अपना शस्त्र कृपाण।।
करो भारत का नव-निर्माण,
गुंजा दो नभ में गौरव-गान,
जग उठे हिन्दू-राष्ट्र महान!!

भारत का सौभाग्य

भारत का सौभाग्य
यहां हिन्दुत्व अमर है
आये कितने पंथ यहां
पर हुआ न तनिक असर है।

बने नींव के पत्थर जिन पर
धर्म ध्वज फहराता है
हिन्दू का बच्चा-बच्चा सब
उनकी ही जय गाता है।

बलिवेदी पर चढ़े यहां
पर धर्म कभी ना खोया
सूली पर चढ़ने वाला भी
वीर कभी ना रोया।

मिटे यहां से कितने
पर यह धर्म न मिटने पाया।
रक्षा करने वीर यहां पर,
कफन बांध कर आया।

हमें वीरता में गौरव को कभी नहीं खोना है।
एक सूत्र में बंधकर सबको सदा एक होना है।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथर्ववेद में गणित के चमत्कार

प्राचीन हिन्दुओं के बारे में दीर्घकाल तक यह धारणा रही कि गणित और विज्ञान को उनकी एकमात्र देन है वर्त्तमान अंक-पद्धति। गणित-विषयक विख्यात लेखक जे०एस० मेयर ने लिखा है, "तथा-कथित अरबी अंक-पद्धति यानी १ से ९ तक अंक एवं शून्य तथा उनके स्थान एवं अग्रनयन की व्यवस्था का आविष्कार और पूर्ण विकास पूरी तरह प्राचीन हिन्दुओं की देन है, जो कि अपने युग के सबसे बड़े विचारक और तत्ववेत्ता थे"।

हम इस पद्धति को बड़ी स्वाभाविक-सी चीज समझते हैं और शायद ही कभी महसूस करते हैं कि यह मनुष्य के सबसे अद्भुत आविष्कारों में से एक है। जैसे यंत्रविद्या में पहिया, उसी तरह यह एक ऐसा बुनियादी आविष्कार था, जिसने बाकी तमाम आविष्कारों को संभव बनाया। मेयर आनंदविभोर होकर कहते हैं—

"इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती कि इनके बिना हमारा काम कैसे चलता और दशमलव-पद्धति के अभाव में हमारे अंक-गणित और गणितशास्त्र का स्वरूप क्या होता। आज विज्ञान ने हमें जो आराम और सुख सुविधाएं सुलभ करा रखी हैं, उनके लिये साधारण अंक इस हद तक जिम्मेदार हैं, जिसकी हमें कल्पना नहीं है। प्राचीन हिन्दुओं के हम चिरऋणी हैं कि उन्होंने इन अंकों से हमारा परिचय कराया।"

नवीनतम शोध की कृपा से अब हम यह जानते हैं कि ये प्राचीन गणितज्ञ यानी वैदिक-काल के हिन्दू गणितल यह महान् आविष्कार करके ही संतुष्ट होकर नहीं बैठ गये। इस युगांतरकारी आविष्कार के बल पर वे आगे बढ़ते गये और उन्होंने बीजगणित, रेखागणित और त्रिकोणमिति का आविष्कार किया और उनमें पर्याप्त प्रगति की। उन्होंने समाकलन और अवकलन गणित (इंटीग्रल एण्ड डिफ-रेन्शल कैल्कुलस) का पता लगाया, पीथीगोरस एवं एपोलोनियस के प्रमेय तथा ज्यामितीय और विश्लेषणात्मक शंकुमिति के प्रश्न हल किये।

अंकगणितीय संक्रियाओं में उन्होंने गुणा, भाग, वर्गफल, घनफल,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्गमूल, घनमूल आदि की आश्चर्यजनक रूप से क्षिप्र विधियां निकालीं। आवर्ती दशमलव को तो उन्होंने जादुई बिसात बना डाला और उनके अनेक दिलचस्प गुणधर्मों का पता लगाया और साधारण भिन्नों का दशमलव में बदलने की अत्यन्त क्षिप्रविधियां निकालीं। उन्होंने "वेष्टन" (आश्लेषण या आस्क्युलेशन) की विधि ईजाद की, जिससे आप चंद सेकन्डों में यह बता सकते हैं कि १३,१७,१६,२६ जैसी कोई छोटी संख्या अमुक बड़ी संख्या का गुणन-खंड है या नहीं। उनके इस तरह के आविष्कारों की सूची बहुत लंबी है।

विलुप्ति के बाद पुनः खोज

जैसा कि सभी प्राचीन सभ्यताओं में होता आया है, यह सब सूक्ष्म ज्ञान बहुत ही गुप्त रखा गया और चंद चुनिंदा लोगों तक ही सीमित रहा। फलतः जब भारत पर विदेशी आक्रमणों का तांता लग गया, तब यह ज्ञान सदा के लिए विलुप्त हो गया। किन्तु हिन्दू जाति के एक मूलभूत धर्मग्रन्थ "अथर्ववेद" में गूढ़ सांकेतिक भाषा में सूत्रों के रूप में यह ज्ञान आज भी सुरक्षित है। इस तरह यह ज्ञान अथर्ववेद में मानो ताले में बंद था और उस ताले को एक बहुत ही जबर्दस्त प्रतिभा ने अत्यन्त कठोर बौद्धिक परिश्रम द्वारा आज से ३० वर्ष पूर्व खोला।

जगद्गुरु श्री भारतीकृष्ण

यह महान् प्रतिभा थी जगन्नाथ पुरी के गोवर्धन-पीठ के पिछले शंकराचार्य जगद्गुरु श्री भारतीकृष्ण तीर्थ महाराज, जो प्रकांड संस्कृतज्ञ होने के साथ ही आधुनिक गणित और विज्ञान के भी तल-स्पर्शी ज्ञाता थे। प्राचीन वैदिक गणित के रहस्यों का उद्घाटन करने में सफल होने पर उन्हें क्या अनुभव हुआ, इसका वर्णन उन्हीं के शब्दों में सुनिए—

"आठ वर्ष के केन्द्रित ध्यान के बाद अंततः हम चिरकाल से खोयी हुई इन कुंजियों को खोजने में सफल हो गये, जिनकी सहायता से ही इस ज्ञान-भंडार के द्वार खोले जा सकते थे। हमें यह देखकर आनन्द-मिश्रित आश्चर्य और गहरा संतोष हुआ कि गणित के अत्यन्त जटिल प्रश्नों को…अथर्ववेद के परिशिष्ट में आने वाले इन अति-सरल वैदिक या गणितीय सूत्रों की सहायता से बड़ी आसानी से,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आनन-फानन में हल किया जा सकता है।" स्वामीजी ने आगे कहा है कि ये सूत्र गणित की प्रत्येक शाखा पर लागू होते हैं।

स्वामीजी महाराज जबरदस्त लिक्खाड़ थे और उन्होंने १६ ग्रन्थ लिखे। ये ग्रन्थ किसी भक्त के घर रखे हुये थे और दुर्भाग्य से एक बार वहां आग लग गई और वे भस्म हो गये। स्वामीजी हिम्मत हारने वाले आदमी नहीं थे। अपनी याददाश्त से उन्होंने उन्हें फिर से लिखना शुरू किया। किन्तु वे अभी पहली पोथी ही दुबारा लिख पाये थे कि १९६० में उनकी महासमाधि लग गई। इस तरह कितना विशाल वैदिक खजाना अभी तक अज्ञात ही रह गया है, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

वैदिक विधि से गणित अतिरोचक

अगर कक्षा में वैदिक विधि से गणित पढ़ाया जाय, तो गणित का पाठ जादू के कार्यक्रम जितना ही रोचक बन जायेगा। कितने आह्लादित हो उठेंगे नन्हें शिक्षार्थी यह देखकर कि हमारी अंक-व्यवस्था दशमलव पद्धति पर आधारित है! इस तथ्य का उपयोग करते हुए छः अंकों की एक राशि को उतने ही अंकों की दूसरी राशि से महज १५ मिनट में गुणा किया जा सकता है। १।१९ का दशमलव मूल्य १९ के बजाय २ से भाग करके प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रश्न का उत्तर ०.०५२६३१५७८९४७३६८४२१ है, यह बताने में बस उतना ही समय लगेगा, जितना कि इसे लिखने में लगाता है—यही कोई दस सेकंड। बहुत-से गुणनफल और वर्गफल तो एक ही नजर में निकाल लिये जा सकते हैं। वैदिक गणित-विधियां जादू की छड़ी की तरह नीरसता और ऊबाऊ मेहनत के भूतों को गणित की कक्षा से भगा देती हैं।

अब इनमें से कतिपय विधियों पर दृष्टिपात करें। ये किस प्रकार काम करती हैं, यह दर्शाने के लिए मैं एक सरल तालिका बनाऊंगा। मगर आप जब तरीके को समझ लेंगे, उसके बाद तो आप प्रश्न को देखकर मुंहजबानी उत्तर लिखा सकेंगे, आपको कागज-पेंसिल की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। सुविधा और सुबोधता के लिए मैं छोटी संख्याओं का उपयोग करूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ उदाहरण

आइये, ९४ को ८९ से गुणा करें। इन दोनों राशियों से सबसे निकटवर्ती १० का घात १०० है और हम उसे आधार-संख्या के रूप में प्रयोग करेंगे। दोनों संख्याओं को एक दूसरे के नीचे लिखिए और १०० से उनका जो अंतर है, वह उनकी दायीं ओर लिख दीजिए। हमारी तालिका कुछ ऐसी बनेगी।

तालिका

१००

९४	—६
८९	—११

आइए, अब उत्तर निकालें। उत्तर का बायां हिस्सा होगा ८९—६ यानी ८३ आप देखेंगे कि ९४—११ भी ८३ ही हैं। उत्तर का दायां हिस्सा होगा ६×११ यानी ६६। पूरा उत्तर हुआ ८३६६ और अन्त में हमारी तालिका का रूप ऐसा होगा।

तालिका

१००

९४	—६
८९	—११
८३	—६६ उत्तर

चूंकि हमारी आधार-संख्या १०० थी, इसलिए बायीं ओर के ८३ सैंकड़े में थे, यानि ८३०० थे। इस बात को समझना बहुत जरूरी है, खासकर ऐसे मामलों में जिनमें थोड़ा एडजस्टमेंट करना पड़ता हो। जैसे कि ९३×८४ में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तालिका

१००

९३	—७
८४	—१६
७७	११२

७८१२ उत्तर

बांयी ओर आते हैं ८४-७ या ९३-१६, जोकि ७७ होते हैं, और दायीं ओर ७×१६ अर्थात् ११२ मगर ये ७७ असल में ७७०० हैं, जिसमें आपको ११२ जोड़ने हैं। यानी उत्तर ७८१२ है। ऐसे मामलों में दायीं ओर का पहला अंक बायीं ओर ले जाना होता है।

लेकिन जब राशियां चुनी हुई आधार-संख्या से अधिक हों तो ? तब भी विधि तो वही काम में लाई जाती है, पर आधार-संख्या में अन्तर घटाने के बजाय जोड़ दिया जाता है। उदाहरण है ११२× १०७।

तालिका

१००

११२	धन १२
१०७	धन ७
११९	८४

ध्यान दीजिए ११२ धन ७ = ११९ और ७×१२ = ८४।

यह विधि तब भी काम में लायी जा सकती है, जब दो में से एक राशि आधार-संख्या से छोटी हो। उदाहरण है ९३×१०८।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तालिका

१००

९३ | —७
१०८ | —८

१०१ | —५६

१००४४ उत्तर

बायीं ओर का उत्तर ९३ धन ८ अथवा १०८—७ अर्थात् १०१ है। दायीं ओर आते हैं [−७]×[धन ८] अथवा −५६। चूंकि बायीं ओर का १०१ वास्तव में १०१०० है, इसलिए उत्तर है १०१०० ५६ अर्थात् १००४४।

आधार-संख्या के रूप में १० का कोई भी घात काम में लाया जा सकता है, जैसे १०, १००, १००० और उनके गुणज। अथवा उनके अपवर्तक भी काम में लाये जा सकते हैं, जैसे २०, ५०, ६०, २००, ३००, २५०, ५०० आदि। अगले उदाहरण में हम आधार-संख्या के रूप में ५० को लेते हैं। प्रश्न है ३८×४६।

तालिका

५०

३८ | —१२
४६ | — ४

३४ | ४८

१७ | ४८ उत्तर

प्रथम स्तर में बायीं ओर की संख्या होगी ३८—४ अर्थात् ३४। मगर चूंकि आधार-संख्या हमने ५० रखी है, इसलिए यह ३४ वस्तुतः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३४ पचास यानी १७०० है। दायीं ओर आता है ४८। आधार-संख्या चाहे कुछ भी हो, दायीं ओर के अंक बदलते नहीं हैं।

वर्गफल की क्षिप्रविधि

किसी भी संख्या का वर्गफल निकालने की एक यह क्षिप्रविधि इस सूत्र में निहित है कि "जो कम है, उसे घटाओं।" मान लीजिए, हमें वर्गफल निकालना है ९२ का जो कि १०० से ८ कम है। अब हमें करना इतना ही है कि ९२ में से ८ घटा दें। उसे बायीं ओर रखें। दायीं ओर रखें ८^{२} अर्थात् ६४। पूरी संख्या हुई ८४६४। ९२ को ९२ से गुणा करने में कितना समय लगता, पर इस विधि से कितनी जल्दी उत्तर निकल आया।

इस सूत्र का अर्थ यह भी है कि जिसका वर्गफल निकालना हो वह राशि अगर आधार-संख्या से अधिक है, तो जितना अधिक हो उतना जोड़ दिया जाए। १०९^{२} का उत्तर निकालना हो तो उसका ढंग यह होगा १०९ धन ९ = ११८ और चूंकि ९^{२} = ८१ है, इसलिए उत्तर होगा ११८८१।

वैदिक गणित में वर्णित क्षिप्रविधियां लगभग ३५ वर्ष पूर्व रूस के एक अत्यन्त प्रतिभावान यहूदी गणितज्ञ याकोव ट्रैक्टेनबर्ग ने स्वतन्त्र रूप से खोजी थीं। यूरोप के अनेक देशों तथा अमेरिका और कनाडा में ये "ट्रैक्टेनबर्ग विधियों" के नाम से पढ़ायी जाती हैं। स्विट्जरलैंड में वे विशेष लोकप्रिय हैं और बैंकों, बड़ी व्यापारिक संस्थाओं और टैक्स-विभाग में ट्रैक्टेनबर्ग विधियां जानने वालों को नौकरी में तरजीह दी जाती है। ट्रैक्टेनबर्ग के आविष्कार सचमुच अद्भुत हैं, मगर वे वैदिक ज्ञान-भण्डार में भरी संपदा का बहुत छोटा-सा हिस्सा हैं। [दैनिक रांची एक्सप्रेस से साभार]

भारत उनका जो भारत के। विदेशी षड्यंत्रकारियों को देश से निकाला जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बन्दी प्रभु

—रतनलाल रत्नेश

वहीं कल्पना नहीं तर्क है अंधी श्रद्धा के कीरों में।
बन्दी प्रभु को हाय बनाया परम्परा का प्राचीरों में ।।
सदियां ही उठ गईं निराशा ले अपने जीवन में।
सत्पथ की पगडंडी कोई मिली नहीं मंदिर आंगन में ।।
मूर्ति को भगवान मानते मंदिर उसका घर है।
ऐसी कोई जगह जगत में जहां नहीं ईश्वर है ।।
कौन बोलता है घट-घट में कौन अनाथों की पीरों में।
बन्दी प्रभु को हाय बनाया परम्परा की प्राचीरों में ।।
धवल ज्योति इंगित करती हैं अंगुली रश्मि उठा चन्दा को,
मिले बराबर दिव्य ज्योत्सना जग के हर वन्दा को ।।
चेतन ही मानवता सच्ची ईश्वर जग का रब है।
जड़ता पर विश्वास, जगे चैतन्य कहां सम्भव है ।।
सोमनाथ के मन्दिर पर आघात हुआ था निर्दय,
जड़ता पर विश्वास पुजारी खो बैठे निज पल लय ।।
जड़ता ही वीरत्व खा गई शेष नहीं पानी वीरों में।
बन्दी प्रभु को हाय बनाया परम्परा की प्राचीरों में ।।
दयानन्द ने कहा इसी से मेरी प्रतिमा नहीं बनाना,
मेरा है उद्देश्य न जग को जड़ता का जामा पहनाना ।।
चेतन प्रभु है सर्व जीव में, हर कण-कण में रमा हुआ,
अब तक है अज्ञान तिमिर यह जड़ता में ही जमा हुआ ।।
मानवता का सिंधु नहीं उमड़ेगा हृदयों में जन-जन के,
आकाश कुसुम यह सुक्ख शान्ति है मानव के तन मन में ।।
मानवता का मार्ग चुना था, कृष्ण, राम ने चक्र और तीरों में,
बन्दी प्रभु को हाय बनाया परम्परा की प्राचीरों में ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मधुमेह

जिसे आधुनिक सभ्यता ने पनाह दी

—डॉ० श्याम सुन्दर जोशी

अष्टांग हृदयकार के मतानुसार सम्पूर्ण प्रकार के प्रमेहों में रोगी द्वारा मधुर तथा मधु के समान मूत्र त्याग करने एवं शरीर में मधुरता रहने के कारण इसे 'मधुमेह' कहा जाता है। लोक में इसे 'पेशाब में चीनी आना' 'डायबिटीज' और 'जियाबेतीस' आदि नामों से जाना जाता है।

नयी दिल्ली में अक्तूबर, १९६४ में किये गये एक सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार राजधानी में करीब दस प्रतिशत व्यक्ति मधुमेह रोग से ग्रस्त हैं। अनधिकृत आंकड़ों के अनुसार भारत में अनुमानतः आठ प्रतिशत व्यक्ति इस रोग के शिकार हैं।

डाइबिटीज एसोसिएशन ऑफ इन्डिया द्वारा १९५५ में बम्बई में किये गये 'मधुमेह रोग सर्वेक्षण, की रिपोर्ट से पता चलता है कि प्रति सौ व्यक्तियों में से छह मधुमेह के रोगी पाये गये। भारत सरकार और अन्य स्वास्थ्य संगठनों ने इन आंकणों को कोई मान्यता नहीं दी, क्योंकि उनका यह विश्वास था कि जिन व्यक्तियों की जांच की गयी, उनमें वे व्यक्ति अधिक थे, जिन्हें यह पूर्व ज्ञात था कि वे मधुमेह रोग से ग्रस्त हैं। सर्वेक्षण इसलिये आशातीत सफलता नहीं प्राप्त कर सका कि आम जनता की एक धारणा रही कि इस प्रकार के सर्वेक्षण का कोई महत्व नहीं और यही प्रमुख कारण था कि जनता ने इसके प्रति कोई रुचि नहीं दिखाई। इसकी असफलता का दूसरा कारण यह भी रहा कि सरकार ने भी इसके प्रति कोई सहयोग की भावना नहीं दिखाई। परिणामतः बिना सरकार के सहयोग से एसोसिएशन जनता की रुचि के कुछ विशेष महत्वपूर्ण आंकड़े उपलब्ध न कर सका। किन्तु एसोसिएशन का यह कार्य वास्तव में सराहनीय रहा।

अमरीका में किये गये एक सर्वे से पता चलता है कि वहां मधुमेह के रोगियों की संख्या केवल दो प्रतिशत है। वस्तु' कुछ भी हो, भारत में उपरोक्त एसोसिएशन द्वारा किये गये सर्वेक्षण की रिपोर्ट की यदि हम अमरीका की रिपोर्ट से तुलना करें, तो छह प्रतिशत व्यक्तियों का इस रोग से ग्रस्त होना वास्तव में एक चिन्तनीय विषय है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधुनिक चिकित्सा-शास्त्रियों का कहना है कि इस रोग का कोई स्थायी इलाज नहीं हो सकता, किन्तु प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली के आचार्यों का मत है कि रोग को जड़ से समाप्त किया जा सकता है। यह ठीक है कि नोबेल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक श्री जे. फ्रेडरिक बेंटिंग ने 'इन्सुलिन' नामक एक औषधि की खोज कर मानव को इस रोग से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न किया है, किन्तु इससे रोगियों की संख्या बढ़ती ही गयी है। इस औषधि के आविष्कार से पूर्व भारत में आयुर्वेदिक औषधियां और ऐसे घरेलू नुस्खे प्रचलित थे, जिनके द्वारा इस रोग पर काबू कर लिया जाता था। प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली के सिद्धान्तों के आधार पर जड़ से रोग को नष्ट कर दिया जाता था लेकिन इन्सुलीन के आविष्कार केवल रोग की उत्पत्ति के कारणों की खोज करने में सहायता मिली, न कि कोई स्थायी चिकित्सा का आविष्कार किया गया। प्रायः देखा गया है कि जब तक रोगी इन्सुलीन का प्रयोग करता रहता, है उसके मूत्र में चीनी की मात्रा नहीं होती, किन्तु प्रयोग बन्द करते ही 'रोग पुनः उभरने लगता है। इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कि इन्सुलीन के आविष्कार से पूर्व अधिकतर रोगी काल के ग्रास बन जाते थे, किन्तु इस औषधि ने उनकी आयु लम्बी कर दी है। मधुमेह का रोगी इस औषधि के सहारे अधिक समय तक जीवित रहता है, किन्तु उसके शरीर में मधुमेह के लक्षण रक्त में मिले होते हैं। जब वह सम्भोग करता है, तो वीर्य के साथ ये कीटाणु भी सन्तानोत्पत्ति में सहयोग देते हैं। परिणामतः इस रोग ने क्षय और दमा की तरह वंश परम्परागत रोग का रूप धारण कर लिया है। अतः हम यह कह सकते हैं रोग बच्चों को माता-पिता से विरासत में भी कभी-कभी मिलता है।

कारण और पहचान : क्यों और कैसे

मधुमेह रोग के लक्षणों की जानकारी के बारे में प्रसिद्ध चिकित्सक डा- रीड ने १९६० में एक सर्वेक्षण किया, जिससे पता चला कि सामान्य नागरिकों को मधुमेह के लक्षणों एवं कारणों की जानकारी नगण्य है।

विश्वविद्यालय मधुमेह चिकित्सक डा. जोसलिन ने भी एक हजार मोटे व्यक्तियों की, मधुमेह से सम्बन्ध होने के बारे में, जांच कर यह घोषित किया कि ७७ प्रतिशत रोगियों को 'मोटापा रोग' होता है। विद्वान चिकित्सक ने अपनी सम्मति प्रकट करते हुए लिखा है कि यदि ऐसे रोगी के भोजन की मात्रा कम कर दी जाये, तो वे बिना किसी औषधि के ही ठीक हो जायेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मोटापा कम करने के लिये अन्यान्य उपायों की बजाय योग-व्यायाम और उपवास चिकित्सा-प्रणाली का सहारा यदि लिया जाये, तो अत्यन्त शीघ्र लाभान्वित होने की आशा की जा सकती है।

कोई स्नायविक रोग होना, भय, क्रोध, चिन्ता, मानसिक आवेग, मलेरिया वाले स्थान में रहना, अत्यधिक मानसिक परिश्रम करना, अत्यधिक चीनी या उससे बने पदर्थों का प्रयोग, गठिया या वात, वीर्य क्षय, सर्दी लगना शराब, चाय काफी, मदिरा, कहुवा, इत्यादि गर्म एवं उत्तेजक पेय पदार्थों का अधिक सेवन मांस, मछली, अण्डा, इत्यादि अप्राकृतिक भोजन प्रभृति इस रोग के उत्तेजक कारण माने जाते हैं !

प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक डा० युगल किशोर चौधरी के अनुसार, "मधुमेह केवल एक अंग, पित्ताशय अथवा जिगर की खराबी का ही परिणाम नहीं है, बल्कि समस्त शरीर व्यापी मल संचय का परिणाम है और यह अन्दर-ही अन्दर कई वर्षों में उत्पन्न होता है यह प्रकृति के नियम भंग का एक दंड है।"

रोगी की कुछ सामान्य पहचान इस प्रकार है :

(१) पेशाब में चीनी रहने के कारण पेशाब किये गये स्थान पर चींटियां या मक्खियां लग जाती हैं। (२) रोगी को दिन भर में चार सेर से बीस सेर तक पेशाब आता है धीरे-धीरे पेशाब का वजन बढ़ता जाता है। (३) रोगी को रात में अधिक प्यास लगती है एवं दिन में हमेशा गला सूखा-सूखा सा प्रतीत होता है। (४) प्रारम्भ में चमड़ा सूखा एवं रूखापन लिये, शरीर का तापमान ६४ से ६७ डिग्री, अत्यधिक भूख लगना, कब्ज, अधिक पेशाब होना तेज प्यास, श्वास-प्रश्वास में बदबू, फेफड़ों का कमजोर होते जाना एवं क्षीण-काय होते जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। (५) रोग बढ़ने पर क्षीणकाय होते जाना, स्त्रियों में जरायु में खुजलाहट तथा पुरुषों में कामेच्छा वृद्धि, चर्म रोग होना, जहरीले किस्म के फोड़े फुन्सियों या प्रमेह-पीड़िकाएं (कार्बन्कल) इत्यादि हो जाती हैं। रोगी काफी कमजोरी का अनुभव करमे लगता है और उसमें कार्य करने की इच्छा नहीं रह जाती। (६) यह रोग बच्चों को माता पिता से विरासत में मिलता है। होमियोपैथी चिकित्सा-प्रणाली के जन्मदाता डा. हैनीमैन के अनुसार यह रोग बच्चों और स्त्रियों को कम होता है। (७) युवावस्था में इस रोग के होने पर रोगी को न्युमोनिया, क्षय या इस प्रकार के फोड़े होते हैं, जो सड़ते जाते हैं और आसानी से अच्छे नहीं होते। विशेष रूप से ऐसे रोगी को कार्बन्कल या दुष्टव्रण हो जाता है और एसे उपसर्गों के कारण कुछ समय पश्चात रोगी की मृत्यु हो जाती है, किन्तु प्रौढ़ावस्था में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
इस रोग के होने पर रोगी की शीघ्र मृत्यु नहीं होती। (८) स्त्रियों को यह रोग होने पर कुछ ही वर्षों में रोगिणी परलोकवासी हो जाती थी, क्योंकि कम आयु में इस रोग से ग्रस्त होने पर अधिकतर गर्भपात हो जाया करते थे। किन्तु अब इन्सुलीन के कारण ऐसा नही होता। स्त्रियों मे यह रोग होने पर मासिक धर्म बन्द होना, गर्भपात, सन्तान न होना इत्यादि की अधिक सम्भावनाएं होती है। (९) ज्यों-ज्यों यह रोग पुराना होता जाता है, रोगी को बार-बार फोड़े-फुन्सियां होने लगती हैं और उनके ठीक होने मे बहुत समय लगता है। इतना ही नहीं, इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति को रक्तचाप, गठिया, मोतियाबिन्द, आंखों के आगे धुंधलापन छा जाना, तपेदिक, कार्बन्कल जैसे असाध्य रोगों के होने की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं और इस प्रकार रोगी की अन्त में मृत्यु हो जाती है।

मूत्र में चीनी की मात्रा का सही पता लगाने के लिये अधिकांशत: 'बैण्डिक्ट्स-टेस्ट-मेथड' का प्रयोग किया जाता है। किसी भी आधुनिक चिकित्सक से इस बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

चिकित्सा : आयुर्वेदिक, प्राकृतिक और अन्य

आयुर्वेदाचार्य के अनुसार दिन में निद्रा, आलसी स्वभाव, बकरी, भेड़ आदि ग्राम्य जीवों का मांस-रस, मछली, कछुआ आदि जल जीवों का मांस-रस, चक्रवाक, हंस आदि आनूपदेशीय जीवों का मांस-रस दही, नवीन अन्न, गुड़ चीनी आदि तथा कफकारक पदार्थों के अत्यधिक सेवन करने से कफ वस्तिगत, मेद, मांस, व शरीर के क्लेद को दूषित करके, प्रमेह को उत्पन्न करते हैं। सामान्यतया प्रमेह को एनोमलीज आफ यूरीनरी सिक्रीशन कहते हैं। सुरामेह, पिष्टमेह, शुक्रमेह, सान्द्रमेह, इक्षुमेह, सितामेह, शनैमेह, उदरमेह, शीतमेह, लालामेह ये दस कफज प्रमेह, क्षार प्रमेह, नीलमेह, कालमेह, मजिष्ठमेह, और हरिद्रामेह, ये छह पित्तज प्रमेह और वसामेह, हस्तिमेह, मज्जामेह, और मधुमेह, ये चार वातज प्रमेह, इस प्रकार कुल मिलाकर बीस प्रकार के प्रमेह होते हैं।

आचार्य सुश्रुत के अनुसार "सामान्य लक्षणंतेषां प्रभूताविलमूत्रता" अर्थात् मूत्र की अधिकता तथा गंदलापन प्रमेह का सामान्य लक्षण है तथा दांत आदि में मैल जमना, शरीर में चिकनापन, प्यास, हाथ-पैर में दाह और मुख का मीठा रहना प्रमेह के पूर्व रूप है। दोष तथा दूष्यों के संयोग की विशेषता के आधार पर मूत्र की मात्रा और वर्ण आदि में भिन्नता के अनुसार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही उपयुक्त बीस प्रकार के प्रमेहों की कल्पना की गयी है।

आयुर्वेदाचार्यों का मत है कि स्त्रियों में मासिक स्राव होने के कारण उनके शरीर दोष शुद्ध होते रहते हैं, अतः उन्हें प्रमेह होने की सम्भावना बहुत कम या नहीं के बराबर रहती है। मूर्छा, वमन, ज्वर, कांस, श्वास, विकर्णता, गुरुता, उपद्रवों से युक्त जन्मजात प्रमेही और अधिक दिनों से उपेक्षा करने पर सन्धियों, मांसयुक्त एवं मर्म स्थानों पर दस प्रकार की प्रमेह पीड़िकाएं निकल आती हैं तथा रोगी की मृत्यु हो जाती है।

आचार्य सुश्रुत के अनुसार सभी प्रकार के प्रमेहों की यदि प्रारम्भावस्था में समुचित चिकित्सा न की जाये, तो वे मधुमेह का रूप धारण कर लेते हैं और इस अवस्था को असाध्य कहा जाता है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्रियों के अनुसार भी सभी प्रकार के प्रमेह विभिन्न मूल कारणों के कारण मधुमेह में परिवर्तन नहीं होते। चरक संहिता में प्रमेह के मधुमेह में परिवर्तित होने की क्रिया पर आचार्य चरक ने लिखा है—"तैरावृतगतिर्वायुरोग आदाय गच्छति। यदा बस्तिं तदा कृच्छो मधुमेहः प्रवर्तते।"

सुश्रुत संहिता में लिखा है कि शिलाजीत (शिलाजतु) ही एक मात्र ऐसी औषधि है, जो प्रमेह और मधुमेह को शीघ्र ठीक कर देती है। यकृत की शर्करा-निर्माण-प्रक्रिया पर प्रभाव होने के कारण रक्त एवं मूत्र में शर्करा की मात्रा कम हो जाती है। शिलाजीत रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) के रोगी के लिए भी एक उपयुक्त औषधि है। सुश्रुत संहिता के चिकित्सा स्थानम् के व्याख्याकार वैद्य प्रियव्रत सिंह ने पृष्ठ संख्या ६१ पर लिखा है—'शिवागुटिका' शिलाजीत से निर्मित आयुर्वेद-जगत की प्रसिद्ध औषधि है, जिसके प्रयोग से मधुमेह, रक्तचाप आदि रोगों में महान् लाभ होता है। केवल शुद्ध शिलाजीत का सेवन भी मूत्र में आने वाली शर्करा की मात्रा को कम करने के लिए उपयोगी है। मधुमेह को नष्ट करने के लिए शालसारादिगण के क्वाथ के साथ इसका सेवन करना चाहिए।

आयुर्वेद-चिकित्सा में गोक्षुरपाक, बसन्त कुसमाकर रस, अकरकरादि चूर्ण, अभ्रक भस्म; बंग भस्म, लोध्रासव, अश्वगन्धादि चूर्ण, शतावरी चूर्ण, शुक्रमातृकाबटी, न्यग्रोधादि चूर्ण, चन्द्र प्रभावटी, मूसलीपाक, लौहा रसायन, चन्द्रकला रस आदि शास्त्रीय योग तथा गुड़मास, करेला, बिम्बी आदि के विभिन्न प्रयोग विशेष रूप से दिये जाते हैं।

मधुमेह रोग से छुटकारा पाने के लिए मात्र प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है, जिसके द्वारा पूर्ण स्वास्थ्य लाभ किया जा सकता है। लेकिन इस इलाज में आत्म बल का सुदृढ़ होना अत्यावश्यक हैं। यदि रोगी ने किसी तरह इन नियमों का पालन कर लिया, तो वह शीघ्र ही पूर्णतया स्वास्थ्य लाभ कर लेगा, यह मैं आत्मविश्वास के साथ कह सकता हूं।

सर्वप्रथम मधुमेह के रोगी को ६-७ दिन का लम्बा उपवास करना चाहिए। उपवास के दौरान गर्म जल या नींबू जल का प्रयोग करना चाहिए तथा प्रतिदिन मौसम्मी, सन्तरे, माल्टा, अनार, मट्ठा, टमाटर के रसों का सेवन करना चाहिए। दिन में २ से ७ गिलास तक रस लिया जा सकता है। उपवास-अवधि समाप्त होने पर १० से १५ दिन तक रोगी को फलाहार अर्थात् ऋतुफलों, जो भी ताजा उपलब्ध हों जैसे अंगूर, पपीता, सेब, अमरूद, जामुन, टमाटर, रसभरी, अलूचा, अन्नानास आदि का प्रयोग करना चाहिए। १५ दिन के इस प्रयोग के पूर्ण होने पर एक से चार या पांच सप्ताह तक रोगी को अपने भोजन में केवल ताजा ऋतुफल, मीठा दही या धारोष्ण दूध (फीका अर्थात् चीनी रहित) ही सेवन करना चाहिए। यह भोजन तब तक जारी रखना चाहिए, जब तक कि पेशाब में चीनी आना बन्द न हो जाये।

प्राय: यह देखा गया है कि यदि रोगी केवल अपने भोजन पर इस प्रकार ३५-४० दिन तक नियन्त्रण रखे, तो पेशाब में चीनी का आना बिलकुल बन्द हो जाता है। जब तक पेशाब में चीनी आना बिलकुल बन्द न हो जाये, तब तक रोगी को मोटे आटे (गेहूं) की रोटी, ही एवं ताजी सब्जियां, फल, मट्ठा, दही, धारोष्ण दूध आदि दिये जा सकते हैं।

पेशाब में चीनी की मात्रा आना बन्द होने पर भी रोगी को कम-से-कम छह मास तक चीनी का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि दूध के साथ या मीठा खाने की तीव्र इच्छा हो, तो खजूर, छुहारे या अन्य कोई मीठा फल जैसे अंगूर, सन्तरा इत्यादि लिये जा सकते हैं। प्राकृतिक रूप से फलों में परिपक्व चीनी शरीर द्वारा ग्रहण कर ली जायेगी और पेशाब में चीनी नहीं आयेगी।

यदि रोगी को कब्ज हो, तो एनिमा द्वारा आंतों को साफ करना चाहिए।

आधुनिक चिकित्सा में मधुमेह रोग पर नियन्त्रण के लिए 'इंसुलिन' नामक औषधि का अधिक प्रयोग किया जाता है। इन औषधियों के अत्यधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली होने के कारण इन्हें बिना चिकित्सक की सलाह के सेवन न करें।

विभिन्न योग-व्यायाम एवं प्राकृतिक-चिकित्सा केन्द्रों द्वारा किये गये प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मधुमेह रोग को जड़ से निकालने के लिए गुर्दों एवं पाचन संस्थान के अवयवों का स्वस्थ होना अत्यावश्यक है, ताकि वे शर्करा-निर्माण का कार्य प्रकृति-नियमानुसार करें। सर्वांगासन, हलासन, पश्चिमोत्तानासन, पादहस्तासन, चक्रासन, कर्णपीड़ासन, मत्स्यासन, सुप्त-वज्रासन, मत्स्येन्द्रासन आदि तथा सामान्य व्यायाम अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

होमियोपैथिक औषधियों में एसिड फस, युरेनियमनाइट्रिकम, कल्केरिया फस, एसेटिक एसिड, अर्जेण्टम मेटालिकम आदि में से रोग के लक्षणानुसार चुनाव किया जा सकता है। सिजिजियम जेम्बोलिनम, नेट्रमफस और नेट्रम सल्फ तथा इलम्ब्रम इस रोग की अच्छी दवाएं हैं। कई बार इनके लगातार चार-पांच माह तक प्रयोग करने से रोग नष्ट हो जाता है।

और ये हैं कुछ आवश्यक सुझाव

ये तो रही चिकित्सा की बात, किन्तु यदि वास्तव में मधुमेह या मूत्रमेह जैसे असाध्य रोग से बचना है या छुटकारा पाना है, तो निम्नलिखित बातों को हमेशा ध्यान में रखा जाना और उन पर अमल किया जाना चाहिए।

(१) प्रतिदिन प्रातः या सायंकाल किसी स्वच्छ वायु वाले खुले स्थान पर या मैदान में जाकर अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्यायाम एवं योगासन करें तथा अपने-अपने वजन पर निगाह रखें। मधुमेह का वास्तविक रोगी दुबला होता है। यदि वजन बढ़ रहा है, तो उसे कम करने वाले व्यायाम करें तथा आहार पर विशेष ध्यान दें।

(२) अपने भोजन में स्टार्च (मांड़ी) और चीनी (शुगर) वाले खाद्य पदार्थों को कम स्थान दें, क्योंकि स्टार्च रक्त में मिलने से पूर्व ही मधुमेह के रोगी के शरीर द्वारा चीनी में बदल दी जाती है। क्लोमग्रन्थि को अनावश्यक कार्य से बचाने के लिए उसे रक्त में पूर्व वर्तमान चीनी की मात्रा को ही सुव्यवस्थित ढंग से खर्च करने के लिए मजबूर कर दें। अतः अपने भोजन में स्टार्च वाले पदार्थों जैसे मैदा या मैदा से बनी चीजें, गेहूं की रोटी, दालें,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिठाइयां, मुरब्बे, मीठे अचार, आलू, शकरकंद, मांस, मछली, अण्डे, वनस्पति घी, तेल, तेज मिर्च-मसाले, शर्बत, टाफी, केमपेस्ट्री इत्यादि को स्थान न दें। स्टार्च की कमी को चर्बी से पूरा करना चाहिए।

(३) अपने भोजन में ताजा ऋतुफलों, सब्जियों तथा ताजी हरी पत्ते वाली सब्जियों को स्थान दें। दूध, दही, मट्ठा, गाजर, पालक, टमाटर, नींबू, सन्तरे माल्टे, रसभरी इत्यादि रस वाले फल एवं सब्जियों का प्रयोग सर्वोत्तम है।

(४) कब्ज से येन-केन-प्रकारेण बचें। यह इस रोग की जड़ है। यदि आप मधुमेह रूपी रोग-वृक्ष को खत्म करना चाहते हैं, तो इसकी कब्जरूपी जड़ को काट दें।

(५) मधुमेह के रोगियों में प्रायः पांवों एवं पैरों की रक्तवाहिनियों में विकार पाया जाता है। इसलिए पांवों की संज्ञ हीनता को रोकने के लिए प्रतिदिन गर्म जल पादस्नान करना चाहिए। पांवों एवं तलवों पर सरसों के तेल की मालिश भी सर्वोत्तम है।

(६) मधुमेह के रोगी को गर्म एवं ठण्डे उत्तेजक पेय और खाद्य पदार्थों का जैसे—मांस, मछली, शराब, सिगरेट, चाय, काफी, कोला-सोल्यूषान, कहुआ, ताड़ी, शर्बत आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। चाय, सिगरेट आदि उत्तेजक पदार्थों के सेवन से रक्तवाहिनियां दब जाती हैं तथा रक्त के स्वतन्त्र प्रवाह में बाधा पैदा कर देती हैं।

(७) प्रतिदिन ठण्डे पानी से स्नान करने से रक्त-संचार स्वाभाविक बना रहता है, किन्तु मधुमेह के रोगी को शरद् ऋतु में, यदि वह ठण्डे जल से स्नान न कर सके, तो १०५ डिग्री गर्म जल से स्नान करना चाहिए। प्रतिदिन शयन से पूर्व ठण्डे पानी से हाथ-पांव धोकर सोना चाहिए, इससे रक्त-संचार नियन्त्रित रहता है।

(८) सप्ताह में एक बार पूर्ण उपवास या फलाहार करना चाहिए। इस दिन केवल रसवाले फलों या सब्जियों का रस लेना सर्वोत्तम है।

(९) अधिक से अधिक प्राकृतिक जीवन व्यतीत करें। प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नहीं करें।

(१) इंसुलिन का प्रयोग तभी तक करना चाहिए, जब तक कि प्राकृतिक रूप से क्लोम ग्रन्थि इंसुलिन पर नियन्त्रण कर ले। इसलिए प्रति सप्ताह पेशाब जांच करवाते रहना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आजकल शहरों में मधुमेह रोग अत्यन्त तीव्रता से बढ़ता जा रहा है। कुछ लोगों का कथन है कि यह रोग अंग्रेजी सभ्यता की देन है, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं। आज से कई शताब्दियों पूर्व लिखे गये आयुर्वेद और अन्य चिकित्सा-ग्रन्थों में मधुमेह से मिलते-जुलते रोगों का वर्णन हमें मिलता है। हां, हम यह अवश्य कह सकते हैं कि भारत जैसे देश में इस रोग को अंग्रेजी सभ्यता ने पनाह दी है और इसकी छत्रछाया मे यह रोग दिन दूना और रात चौगुना पनपता और बढ़ता जा रहा है। □□□

जन-ज्ञान [मासिक] में

विज्ञापन दीजिए

- यह आपको एक लाख पाठकों से मिलवायेगा।
- आपके उत्पादन-संस्थान का उनसे परिचय करवायेगा।
- जन-ज्ञान केवल एक पत्रिका नहीं, एक आन्दोलन है।
- एक यज्ञ है यह आप इसमें आहुति भी देंगे— जब आप जन-ज्ञान में विज्ञापन देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षुः	६० पैसे
३.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षुः	६० पैसे
४.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ रु०
५.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	६० पैसे
६.	पोस्टर—दो प्रकार के	१)२० पैसे
७.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	६० पैसे
८.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	६० पैसे
९.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	६० पैसे
१०.	इस्लाम—एक परिचय	६० पैसे
११.	Bible in the Balance	१ रु०
१२.	A Challenge to the Christian Faith	३० पैसे
१३.	पोप की सेना का भारत परहमला—वेदभिक्षुः	६० पैसे
१४.	पादरियों को चुनौती	६० पैसे
१५.	बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	६० पैसे
१६.	क्या ईसा खुदा का बेटा था !	६० पैसे
१७.	…और पादरी भाग गया	६० पैसे
१८.	Christianity Unmasked	१ रु०
१९.	The Clarion Call	६० पैसे
२०.	जन-ज्ञान मासिक का "जय हिन्दू विशेषांक"	६ रु०
२१.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	६० पैसे
२२.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	६० पैसे
२३.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पैसे
२४.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	६० पैसे

दयानन्द संस्थान २२८६ आर्य समाज रोड करौल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के प्रति यह कैसा बर्ताव

–वि० स० विनोद

मुझे एक पुस्तिका 'हमारे सांस्कृतिक प्रतीक' लेखक डा० श्याम बहादुर वर्मा, जो विश्व हिन्दू परिषद प्रकाशन है, मिली। इसमें श्री वर्मा ने कहा है कि जो भारतीय पुर्नजागरण १९वीं सदी के आरम्भ में हुआ, वह अभी तक चल रहा है। राष्ट्रीय एकता का साक्षात्कार करने वाले अनेक महापुरुषों के कई एक नाम आपने गिनाये हैं, जिनमें महात्मा गांधी व विनोबा भावे भी हैं लेकिन इस सूची में आपने महर्षि दयानन्द स्वामी का नाम रखना उचित नहीं समझा और यह आपने जानबूझकर किया है।

पुस्तक में आपने स्पष्ट किया है कि मूर्ति पूजा हिन्दू समाज की एक आवश्यकीय पद्धति है। चूंकि महर्षि दयानन्द मूर्ति पूजा के विरोधी थे, इसलिए वे इस योग्य नहीं माने गये कि देश के पुर्नजागरण में उन्हें कोई स्थान दिया जाये।

सम्राट अशोक महान के बाद हिन्दुओं का बिखराव शुरू हुआ और पृथ्वीराज चौहान तक यह स्थिति बढ़ती गयी। जब जयचन्द ने गजनवी को न्यौता दिया कि वह भारत पर आक्रमण करे और कहा कि उसे उसकी पूरी सहायता मिलेगी। कहते हैं कई बार गजनवी युद्ध में हारा परन्तु पृथ्वीराज चौहान ने उसे क्षमा कर दिया। एक बार पृथ्वीराज चौहान हारा परन्तु गजनवी ने उसे क्षमा नहीं किया वरन उसकी दोनों आंखें निकलवा लीं और लोहे की बेड़ियों में बांधकर ले गया। वह भारत का तख्त भी जयचन्द को न सौंपकर अपने ही किसी अधिकारी को सौंप गया।

हिन्दुओं का बिखराव जारी रहा और पन्द्रहवीं शताब्दी तक चलता रहा, जब भारत पर अनेक मुस्लिम आक्रमणकारियों ने हमले किये और भारतीय एकता को तहस-नहस कर दिया।

लगभग एक हजार साल तक मुस्लिम आक्रमणकारी शासन करते रहे, तब अंग्रेज, फ्रैंच, पुर्तगाली अपनी सेनायें लेकर भारत पर टूटे। अंग्रेजों ने भारत के अनेक हिस्सों को कब्जा लिया। इस प्रकार १९वीं शताब्दी तक भारत को दो घोलीचुक नोंच रहे थे। इनमें अंग्रेज ज्यादा चालाक व मक्कार थे। उनकी योजना थी समस्त भारत को ईसाई बना लेना जब कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुस्लिम आक्रमणकारियों ने भी ऐसा ही प्रयत्न किया था, जिसमें वे असफल रहे थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू में अंग्रेज भारत के शासक बन गये और भारत का हिन्दू एक प्रकार से अनाथ-सा पड़ गया। इस समय देश में कई एक महापुरुष पैदा हुए, जिन्होंने हिन्दुओं को इस दुर्दशा से उबारने के लिए घोर प्रयत्न किये। इनमें महर्षि दयानन्द सर्वोपरि थे। यदि स्वामी दयानन्द उस समय न होते तो हिन्दू इस समय मुसलमान होते या ईसाई। हिन्दू नेताओं के पास मुल्लाओं और पादरियों के ऊटपटांग सवालों का जवाब देने को कुछ नहीं था। केवल आर्यसमाज ने उनका मुंह तोड़ उत्तर दिया और हर तरह हिन्दू समाज को विधर्मी होने से बचाया।

लेकिन विश्व हिन्दू परिषद के प्रकाशन में डा० वर्मा को यह सब कुछ दिखायी नहीं देता। वर्मा जी ने महर्षि जी का नाम तक नहीं लिखा।

विश्व हिन्दू परिषद भारत के समस्त हिन्दुओं की एक संस्था मानी जाती है। हिन्दू समाज में सभी लोग एक विचार के नहीं हैं, न सभी की पूजा पद्धति एक है और न ही सभी का धर्म ग्रन्थ एक है। हिन्दू समाज में मूर्ति-पूजक भी हिन्दू हैं न पूजने वाला भी हिन्दू है। यहां तक कि मांसाहारी भी हिन्दू हैं। हिन्दू समाज में समानता केवल इतनी है कि गौ और गंगा के प्रश्न पर सब एक हैं।

विश्व हिन्दू परिषद को अपना दृष्टिकोण ऐसा अपनाना चाहिए कि समाज के सभी अंग की संस्था को अपना समझे। गत वर्ष एकात्मकता यज्ञ के अवसर पर, जो विश्व हिन्दू परिषद ने संचालित किया था—समस्त हिन्दू समाज ने एकता का पूरा प्रमाण दिया था। इसमें बढ़-चढ़कर सरदार लोग भाग ले रहे थे। यद्यपि आज पंजाब में कुछ उग्रवादी हिन्दू संगठनों का विरोध कर रहे हैं।

इस यज्ञ में हिन्दू समाज का सर्वाधिक कमजोर वर्ग बाल्मीकि भी ऐसे ही भाग ले रहा था, जैसे ब्राह्मण या अन्य लोग। वे भी अपने मंदिरों में जल लेकर आये और एकात्मता रथ पर जो जल रखा था, पर जल चढ़ाकर, उसमें से जल ले गये और अपने मौहल्ले के अपने परिवारों में बाँटा। उस दिन उन्होंने यह अनुभव किया कि वे वास्तव में हिन्दू हैं और उनका हिन्दू समाज पूरा आदर करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहां तक यह प्रश्न है कि आर्यसमाज अपने को हिन्दू मानता है या नहीं, यह ठीक है कि स्वामीजी ने कहा था कि हम आर्य समाजी थे और हैं। उनके सामने ही देश में एक जनगणना हुई थी। महर्षि ने समस्त आर्य समाजों को यह निर्देश दिया था कि वे अपने को आर्य न दिखाकर हिन्दू दिखायें अन्यथा हिन्दुओं की संख्या कम हो जायेगी। इससे समाज व देश को हानि होगी। आर्य समाज व देश को हानि होगी। आर्य समाज का यह पग नहीं था।

लेकिन डा० वर्मा, जो दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं, समझते हैं कि आर्य समाज विश्व हिन्दू परिषद से बाहर है।

क्या कोई यह मान सकता है कि स्वामी दयानन्द ने देश के नवनिर्माण में और हिन्दुओं के संगठन में कोई योगदान नहीं दिया, जैसा कि डा० वर्मा ने उनका नाम तक लिखना उचित नहीं समझा।

मैं डा० वर्मा को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता लेकिन मुझे उनकी यह पुस्तक पढ़कर बड़ा दुःख हुआ है कि वे विनोबा भावे ने उन लोगों की चोटी काट दी थी, जिन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्ध करके क्षत्रिय बनाया था। हरियाणा के मेवे लोग भी क्षत्रिय थे, जिन्हें औरंगजेब के जमाने में मुसलमान बना दिया गया था।

डा० वर्मा को यह ध्यान रखना चाहिए कि हिन्दू विश्व परिषद उनकी जेब की पुड़िया नहीं है। यह इस देश के ८५ प्रतिशत हिन्दुओं की एक संस्था है, जिसमें भिन्न-भिन्न विचारों के लोगहैं। नास्तिक भी हिन्दु हैं और आस्तिक भी। हमारा प्रयत्न हिन्दू समाज को एक साथ लेकर चलने का होना चाहिए न कि उसके और टुकड़े कर दिये जायें।

पहले ही हिन्दू समाज का विघटन करने का असफल प्रयास अंग्रेजों ने किया था और कांग्रेस सरकार की नीति भी बहुत कुछ सहायता नहीं है। विश्व हिन्दु परिषद के नेताओं को बड़ी सावधानी से कार्य करने की जरूरत है। उनके कार्य से मैं संतुष्ट हूँ और मैं एक साधारण व्यक्ति हूं, वृद्ध हूं लेकिन मुझसे जो कुछ बन पड़ता है, मैं कभी पीछे नहीं रहता और न रहूंगा।

---

१. यदि अंग-प्रदर्शन ही फैशन है तो हम बहुत अभागे हैं, कारण इस दौड़ में जानवर हमसे आगे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शोर-गुल कम कीजिए हानि पहुंचाता है

वैज्ञानिकों और चिकित्सकों का कहना है कि जिस तरह से धूल, धुआं और अन्य प्रकार की गंदगी का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, उसी तरह शोर भी हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। आदमी की श्रवण-शक्ति कम होती जाती है। बहरेपन की बीमारी, विशेष रूप से महानगरों में आजकल बढ़ती जा रही है।

शोर, सभ्यता का एक अनिवार्य परिणाम है। एक सीमा तक तो वह निरापद रहता है, लेकिन जब उसकी मात्रा बढ़ जाती है, तो उसके दुष्परिणाम दिखाई पड़ने लगते हैं। वैज्ञानिकों ने इसे ध्वनि-प्रदूषण का नाम दिया है। जैसे जल-प्रदूषण होता है, वायु-प्रदूषण होता है वैसे ही ध्वनि-प्रदूषण भी होता है। प्रदूषण-विरोधी अभियान में ध्वनि-प्रदूषण को भी शामिल कर लिया गया है।

पिछले दिनों अखिल भारतीय चिकित्सा संस्थान ने महानगरों के ध्वनि-प्रदूषण का सर्वेक्षण कराया था। अन्य देशों में इस तरह के सर्वेक्षण प्रायः होते रहते हैं और ध्वनि-प्रदूषण को रोकने के लिए तरह-तरह के उपाय किये जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय निरापद सीमा ४५ 'डेसिबल' मानी गयी है। 'डेसिबल' शोर की मात्रा को मापने की एक इकाई है। भारत की राजधानी दिल्ली में शोर का परिणाम ९५ 'डेसिबल' तक बढ़ गया है, अर्थात् निरापद सीमा से ५० डेसिबल अधिक।

महानगरों में शोर बढ़ने के अनेक कारण हैं। परिवहन के साधन, वायुयान, रेलगाड़ी, मोटर, ट्रक, बसें, इन सबसे शोर बढ़ता है। कारखानों में लगी भीमकाय मशीनें खूब शोर करती हैं। लाउडस्पीकर, चाहे वे धार्मिक स्थलों में प्रार्थना और प्रवचन के लिए लगे हों, सभा-सम्मेलनों में लगे हों, जलूसों में लगे हों, या विज्ञापन के काम में लगे हों, शोर बढ़ाने के सबसे भयंकर माध्यम हैं। रेडियो, टेलीविजन, वीडियो आदि सब शोर बढ़ाने में लगे हुए हैं।

यह सन्तोष का विषय है कि ध्वनि-प्रदूषण की ओर समाज के जागरूक वर्ग का ध्यान गया है, और वह इसको कम करने के उपाय ढूंढ़ने में लगा है। विधान-सभा तथा संसद तक में इसकी अनुगूंज पहुंची है, और वे कानून बना कर शोर को कम करने की बात सोच रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और कब तक

महोदया,

हिंदुस्तान सही अर्थों में एक धर्मनिर्पेक्ष देश है…लेकिन चंद दिनों से कुछ सिरफिरे…वहशी…व देशद्रोही लोगों ने इस देश की एकता अखंडता व धर्मनिरपेक्षता पर निरंतर प्रहार करना प्रारंभ कर दिया है। ताकि देश के हिन्दू उनसे डरकर रहें, भाग्य की कितनी बड़ी विडंबना है…कितनी शर्मनाक स्थिति है…कि एक हिंदू बाहुल्य देश में स्वयं हिन्दू अल्पसंख्यक कहे जा रहे हैं।

पंजाब में हिंदुओं की दुर्दशा व वहां से उनका निरंतर पलायन होता है जम्मू काश्मीर में हिन्दुओं पर सरे आम अत्याचार होते रहे हैं…वहां सैंकड़ों अनेक हिन्दू मंदिर जलाए जा चुके हैं, और…देश की एकता व अखंडता के नाम पर चुनाव जीतने वाले लोग खामोश बैंठे तमाशा देख रहे हैं।

देश की एकता व अखंडता के नाम पर चुनाव जीतने वाले एक वर्ग की साम्प्रदायिकता के मसले पर गुमसुम क्यों है…क्या हिंसात्मक बातों से साफ जाहिर नहीं होता कि इनकी पीठ पर हमारे उसी पड़ोसी देश का हाथ है… जिसे हमारी सेना के वीर जवानों ने दो बार धूल चटा दी है…। इस तरह की देशद्रोहितापूर्ण बातों के लिये उकसाना, देश के अदंरुनी भागों में दंगे करवाना…क्या इनको रोकने के लिये देश में कोई कानून नहीं है…! क्या देश के सारे कानून व पुलिस सिर्फ गरीबों पर अत्याचार करने व…वेगुनाह लोगों का खून बहाने के लिये ही है। क्या देश में हमेशा यही होता रहेगा…

हिंदुस्तान में रहकर…पलकर…यहीं का अन्न खाकर…यहां के हिंदुओं से सड़क पर निर्णायक लड़ाई…ये बातें देशद्रोहिता व गद्दारी की है या नहीं…कोई "आदम सेना" का निर्माण करता है…कोई हिंदुओं को ललकारता है…लेकिन देश के हिन्दू ना जाने किस दुनिया में हैं…उन वेचारों को तो किसी बात से कुछ लेना देना नहीं है…।

कितनी शर्मनाक स्थिति है…कि एक हिंदू बहुल देश में हिंदुओं को किसी मंदिर को अपना मंदिर कहने के लिये ३६ बरसों का शर्मनाक इंतजार करना पड़ता है…उसे अपने पूज्य श्री राम की "रथ-यात्रा" नहीं निकालने दी जाती है…आखिर क्यूं…

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या कारण है कि जम्मू कश्मीर में आज भी धारा ३७० लागू है… क्या ये क्षेत्र हिंदुस्तान का नहीं है…क्या मकसद है वहां के निवासियों को विशेष दर्जा देने का…हिंदुओं पर अत्याचार करवाना या…। उधर पाकिस्तान है जो कई बार हमारे रणबांकुरों से मुंह की खाने के बाद अब वापस सर उठा रहा है…सीमा पर निरंतर चल रही गोलियां व देश में हो रहे दंगे… क्या इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है कि जिया के इरादे ठीक नहीं हैं… लेकिन जिया को भी एक बात अवश्य नहीं भूलना चाहिये कि हिंदू नवयुवकों की रगों में आज भी पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, भगतसिंह, शिवाजी व छत्रसाल जैसे वीरों का लहू दौड़ रहा है……भले ही वे कह कुछ भी ना रहे हों पर समझ सब कुछ रहे हैं…जिस दिन वे जाग गए उस दिन चारों ओर शांति स्थापित कर देंगे !

श्याम सोनी ३, बड़ा बाजार
नरसिंहगढ़—४६५-६६६

सचिव
हिन्दू रक्षा समिति नरसिंहगढ़ (म० प्र०)

अखिल भारतीय हिन्दू कल्याण समिति [पंजीकृत]
द्वारा संचालित

जन ज्ञान (मासिक)

की पत्रिका के

आगे बढ़ने में सहयोग दीजिए। अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइए।

—राकेशरानी

---

२. मूर्खों से प्रशंसा के राग सुनने की अपेक्षा बुद्धिमान की फटकार सुनना अधिक श्रेयस्कर है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय

महाराणा सुहेलदेव की महान विजय

—विनोद कुमार मिश्र

महमूद गजनी ने ७ जनवरी १०२६ ई० को भारत के विख्यात शिव मन्दिर सोमनाथ को केवल ३० हजार घुड़सवारों के सैन्य बल से लूट लिया था। भारतीय इतिहास में इस घटना को लेकर हिन्दुओं के मूर्तिपूजक अंधविश्वास को भारत के पतन का एक प्रमुख कारण बताया जाता रहा है। आज तक हिन्दू इसके लिये आलोचना के पात्र रहे हैं; लेकिन कोई इतिहासकार इस प्रश्न पर विचार करने के लिये तैयार नहीं होता कि जब हिन्दू इतने मूर्ख, अन्धविश्वासी और असंगठित थे तो फिर करीब दो सौ सालों तक विदेशियों का भारत पर एक भी आक्रमण क्यों नहीं हुआ ? भारत का इतिहास महमूद गजनी (१०२६ ई० सन्) के हमले से मोहम्मद गोरी (११९२ ई०) के हमले तक सीधे छलांग लगा जाता है। यह हमारी विडम्बना रही है कि भारतवर्ष का इतिहास उन्हीं घटनाओं से प्रारम्भ किया जाता है, जिनमें हिन्दुओं की पराजय की अतिरंजित गाथाएं अंकित हैं।

वस्तुस्थिति यह है कि महमूद गजनी की लूटपाट से उत्साहित होकर लाखों विदेशियों ने गाजी मियां मसूद की रहनुमाई में भारत पर हमला किया था। ११ (ग्यारह) लाख फौज के साथ वह खुद आया था और उसके पीछे उसका पिता सालार शाहू (ईरान का सुलतान) भी लाखों की फौज लेकर आया। इतनी बड़ी सेना ने भारत पर कभी भी हमला नहीं किया था यह अंधड़ अयोध्या तक जा पहुंचा, जिसको बहराइच में हिन्दू राजाओं ने योजनापूर्वक घेरकर सर्वनाश कर दिया। एक आदमी भी खबर देने के लिए नहीं बचा, अरब ईरान के हर घर का चिराग बुझ गया। यही कारण था कि भारत पर हमला करने का मानस बनाने में आक्रान्ताओं की पांच पीढ़ियां लग् गई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रमाण

यह हमला सोमनाथ की लूट के छः साल बाद हुआ था। तारीखें, पात्र-पात्रों की कब्रे ही मौजूद नहीं हैं, बल्कि अवध का ये वर्ग गाजी मियां मसूद को बड़े वीर के रूप में पूजा करता है, और शहादत के दिन बहराइच में उनकी मजार पर बहुत बड़ा मेला लगता है। उससे थोड़ी दूरी पर मसूद को मौत के घाट उतारने वाले राय सुहेलदेव का भी मेला शान से लगता है। आश्चर्य है कि आज से केवल ९४९ वर्ष पूर्व हुए इस 'न भूतो न भविष्यति' महासमर की जानकारी भारतीय इतिहास को नहीं है। दो सौ साल बाद प्रसिद्ध सूफी सन्त मुइनुद्दीन चिश्ती अजमेर आये और राय पिथौरा के अध्यात्मिक गुरु अजीतपाल जोगी के विशेष स्नेह पात्र बन गये। उन्हीं चिश्ती साहब की बदौलत शहाबुद्दीन गौरी राय पिथौरा (पृथ्वीराज चौहान) को हराने में सफल हुआ।

इतिहास स्रोत

हिन्दुओं के शौर्य, संगठन-कौशल और सम्पूर्ण विजय के स्वर्णिम इतिहास का पता ग्रंथों से मिलता है, उसके लेखक एक मुसलमान विद्वान हैं, जिनका नाम है शेख अब्दुर्रहमान चिश्ती। उन्होंने बड़े शोध के बाद मसूद की शहादत का इतिहास लिखा था उनके इस इतिहास ग्रन्थ का नाम है—'मीर-अल-इ-मसूदी'। उन्होंने अपने इस इतिहास के आधार-ग्रन्थों में मुल्ला मोहम्मद गजनवी की तवारीखें महमूदी, रौजाबू-स सफा, तारीख इ. फिरोज शाही मूण्ट। खावू त-तवारिख आदि इतिहास ग्रंथों का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त इस लेखक ने अपने इस इतिहास के तथ्यों की पुष्टि में एक ब्राह्मण विद्वान आचार्य माली बहादुर का भी उल्लेख किया है। लेखक का कहना है, बादशाह नुरुद्दीन, मुहम्मद जहांगीर के आदेश से वह हिमालय के तराई के क्षेत्रों में गया था, जहां पर्वतीय राजाओं के प्रतिनिधि के रूप में आचार्य माली बहादुर से उसकी भेंट हुई। वह ब्राह्मण हिन्दुओं द्वारा लिखे इतिहास से भलीभांति परिचित था, उसने मसूद के हिन्दुस्तान अभियान के बारे में हिन्दू इतिहासों से सम्पूर्ण जानकारी दी। इस आचार्य ने यह भी बताया कि अभी भी मसूद को मौत के घाट उतारने वाले राय सुहेलदेव के वंशज श्रावस्ती पर्वतीय प्रदेशों—के राजा हैं और उनके पुस्तकालय में रखे हिन्दू इतिहासों में उसने ये सारे विवरण पढ़े हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मसूद के हमले का यात्रा-पथ

मसूद गजनी के सुलतान महमूद की बहन मौला का पुत्र था। इसके पिता अपने जमाने के प्रसिद्ध योद्धा ईरान के सुल्तान सालार साहू थे। महमूद गजनी ने जब सोमनाथ पर हमला किया था, तब मसूद भी उनके साथ था, उस समय उसकी आयु मात्र १२ वर्ष थी। वह अत्यधिक सुन्दर और अल्पायु में ही शस्त्रचालन में पारंगत हो गया था। मुस्लिम जगत् में उसका नाम अत्यन्त पवित्र रूप में विख्यात था। वह धार्मिक प्रवृत्ति का योद्धा युवक था, मुसलमानों का विश्वास था कि मसूद, फतह का दूसरा नाम है। उसे वे दूसरा जोसेफ मानते थे।

सोमनाथ की लूट के पांच वर्षों बाद १०३१ ई० में मसूद ने इस्लाम के झंडे के तले एकत्र ११ लाख की सेना और कई लाख अपने पिता सालार साहू की सेना के साथ पूरे हिन्दुस्तान का फतह करने के इरादों से सिन्ध नदी पार की। उसके दो सेनापतियों मीर हुसैन अरब और अमीर वाजिद जफर ने ५० हजार घुड़सवार के साथ राय अर्जुन की छोटी सी रियासत सहूर को ध्वस्त करके ५ लाख सोने के सिक्के मसूद को हिन्दुस्तान की जमीन पर पैर रखते ही भेंट किये। महमूद गजनी के हमले से दो बार लूटे मुलतान ने अनंगपाल (राय जयपाल का पुत्र जिसने महमूद गजनी के पिता सुबुक्तगीन से पराजित होने की लज्जा में जीवित अग्नि समाधि लेकर आगे का संघर्ष राय अनंगपाल को सौंप दिया था) और राय अर्जुन के नेतृत्व में मसूद की सेना का सामना किया, लेकिन इस विशाल सेना के सामने वे कब तक टिक पाते मसूद की विशाल सेना दिल्ली से बचते हुए अयोध्या पहुंच गई।

दिल्ली में उस समय राय महिपाल का राज्य था। उसका इतना आतंक था कि लाहौर तक जीत लेने वाले महमूद गजनी की भी हिम्मत उससे छेड़खानी करने की नहीं हुई थी। मसूद ने दिल्ली के बाहर अपना मोर्चा जमा लिया। उसके सैनिकों के हौसले पस्त थे तभी ईरान से मसूद के चाचा सालार सैफुद्दीन, गजनी के विख्यात योद्धाओं सुलतान-स-सलातीन मीर बख्तियार, मीर सैयद, अजीजुद्दीन व मलिक बाहुसुद्दीन अपनी-अपनी सेनाएं लेकर मसूद की मदद को आ गए। पांच दिन तक दिल्ली की राजपूत सेना विदेशी सेना को काटती रही—अन्तिम सैनिक तक युद्ध लड़ा गया। किसी ने मैदान नहीं छोड़ा। उन दिनों यह बात बड़ी चर्चित थी कि मसूद ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सोमनाथ के लिंग पर बने भगवान शिव के श्रीमुख के नाक कान और मुंह तोड़कर उन्हें विरूपित किया था। महिपाल के किशोर पुत्र गोपाल ने बड़े शौर्य का परिचय हाथों दिया वह अपनी टोली के साथ दोनों में तलवार लिये शत्रुओं को काटता चीरता हुआ लाखों सैनिकों से घिरे मसूद तक अभिमन्यु के समान शत्रुव्यूह तोड़कर जा पहुंचा और एक प्रहार से ही उसकी नाक काट डाली आगे के दो दांत तोड़ दिये और वीरगति को प्राप्त हुआ।

दिल्ली के बाद मसूद ने मीरात पर चढ़ाई की। मीरात और उज्जैन के रायों ने लड़ना उचित न समझकर मित्रता कर ली। मसूद की सेनाओं ने सतराख (साकेत) जीतकर उसे पूरे हिन्दुस्तान की फतह का मुख्यालय बना लिया मियां रजब और सालार सैफुद्दीन ने बहराइच, अमीर हसन अरब ने महूंना, मलिक फजल ने बनारस जीत लिया। सुलतान-स-सलातीन और मीर बख्तियार दक्षिण की ओर कनूर तक गये जहां मीर बख्तियार हिन्दू सेना द्वारा मार डाला गया।

हिन्दू वीर चुप नहीं बैठे थे—वे हर स्थान पर इनसे जमकर मोर्चा ले रहे थे। पूरे देश में ब्राह्मण घूम-घूमकर युवकों और राजाओं को मसूद पर अन्तिम प्रहार करने के लिये संगठित कर रहे थे। मसूद की मां अपने पुत्र पर आने वाली आपदाओं के बारे में सोच-सोचकर गम में मर गई। मसूद के पिता सालार साहू भी एक विशाल सेना लेकर साकेत पहुंच गये। कड़ा और माणिकपुर उन दिनों सुदृढ़ राज्य थे और इनके राजा देश भर के राजाओं को संगठित करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे थे। हिन्दुस्तान के युद्धों के अनुभवी सालार साहू ने ध्वस्त करने का बीड़ा उठाया। दोनों राज्यों ने अन्तिम सैनिक तक युद्ध किया। कड़ा पर मलिक अब्दुल्ला और मीर कुतुब हैदर को माणिकपुर का हाकिम बनाकर वह साकेत लौट आया।

सालार मसूद का सर्वनाश

इधर हिन्दू सेनाओं ने बहराइच में मसूद को घेर कर उसका सर्वनाश करने की योजना बना ली थी। १७ राजा राय रईब, राय सईबा शयन, अर्जुन, राय भीखन, राय कनके, राय कल्याण, राय मकरू राय सबरू राय करन, राय बीरबल, राय जयपाल, राय श्रीपाल, राय हरपालु राय हवरू, राय प्रभु, राय देवनरायण राय नरसिंह २० लाख घुड़सवार और ३० लाख पैदल सैना के साथ वहां उपस्थित हो गए। कुछ दिनों बाद हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों के शाभूम (सिंह-भूमि) से राय सुहेल देव और बलूना से राय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरदेव भी अपनी विशाल सेना लेकर कसाला नदी के तट पर आ गये। बहराइच का हाकिम सालार सैफुद्दीन घबड़ा गया। सैफुद्दीन की मदद के लिये मसूद हिन्दुस्तान स्थिति सारी सेना के साथ श्रावण मास की ७वीं तारीख (१०३३ ई०) को बहराइच पहुंच गया। इतनी विशाल शत्रुसेना को हिन्दू वीर प्रतिदिन अपूर्व शौर्य से काटते रहे। प्रातः युद्ध आरम्भ होता और सूर्यास्त होते ही युद्ध रोक दिया जाता।

जब सालार मसूद ने समझ लिया कि अब उसकी सारी सेना पर मौत का शिकंजा कस चुका है और अपने बचने की कोई उम्मीद नहीं है, तो उसने अपनी हताश सेना के सभी सैनिकों और अफसरों को एकत्र किया और उसने बोला, 'दोस्तो अभी तक हमने हिन्दुओं से जितनी लड़ाइयां लड़ीं, उनमें खुदा ने हमें फतह हासिल कराई है। अब हिन्दुस्तान की सारी सेना हमारे मुकाबले में आकर खड़ी हो गई है। हमारे पूर्वजों की यह परम्परा रही है कि वे कभी युद्ध के मैदान से नहीं भागे। मैं भी उन्हीं के समान मरते दम तक लडता रहूंगा, मैं और तुम सिर्फ खुदा के लिये। क्या तुम युद्ध मैदान छोड़कर अपने घर लौट जाओगे? खुदा के लिये जो कोई भी यहां शहीद होना चाहता है वह मेरे साथ रहे और जो घर जाना चाहते हैं खुदा जानता है मैं अपनी इच्छा से आपको यहां से घर लौट जाने की अनुमति देता हूं।'

मीरात-ए-ससूदी के लेखक ने लिखा है कि यह कहकर सालार मसूद फूट-फूटकर रो पड़ा। उस समय कौन ऐसा पत्थर दिल हो सकता था जो ऐसी स्थिति में सालार मसूद का साथ छोड़ता। रजब मास की १४वीं तारीख, रविवार (जून १४, १०३३ ई०) के दिन मसूद सहित उसकी सम्पूर्ण सेना का सर्वनाश कर दिया गया। यह विजय सम्पूर्ण थी, अन्तिम दिन का युद्ध बालार्क (बालादित्य) सूर्य भगवान के मन्दिर के सामने बने सूरज कुण्ड के पास लड़ा गया था। इस महासमर के बाद करीब दो सौ वर्षों तक किसी विदेशी ने भारत की ओर आंख उठाकर देखने तक की किसी घटना को जन्म नहीं दिया। मीरात ए-मसूदी के अन्त में लेखक अब्दुर्रहमान चिश्ती ने लिखा है, 'सालार मसूद की मृत्यु के बाद अजमेर में मुजफ्फरखान भी मर गया। उसके उत्तराधिकारियों को हिन्दुओं ने मार भगाया। जो मूर्तियां हमलावरों ने तोड़ी थी, वे सब पुनः स्थापित हो गई और हिन्दुस्तान की जमीन पर मंदिरों में घंटियां निष्कंटक बजने लगीं। दो सौ साल तक यही स्थिति रही।'

(हिन्दू वार्ता से साभार)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी विभाग में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यंत्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने का अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीयस्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह लिखे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर सेवाश्रम आर्य समाज रोड, नई दिल्ली—५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शीश तुमने दिया···

—चन्द्रशेखर आर्य

शीश तुमने दिया गर वतन के लिए,
गीत बन जायेगी तेरी निज जीवनी।
गाके होगी मगन ये वतन की नसल,
लहरे गंगा की जैसे हो जग पावनी।
पुष्प लाखों खिले वाटिका में मगर,
खिल के मुरझा गये एक क्षण में सभी।
धन्य जीवन उसी फूल का है हुआ,
प्रभु चरणों में होता है अपण जो भी।
बाकी वे तो सभी व्यर्थ हो ही गए,
जिनकी कुर्बानी जग ने कही न सुनी।
शीश तुमने दिया गर वतन के लिए,
गीत बन जायेंगी तेरी नित जीवनी।
रानी लक्ष्मी और शेखर सुभाष बढ़े,
शीश देने भगत सिंह फांसी चढ़े।
मंगल पाण्डे ने गोली चला ही तो दी,
गाथा बनकर हुई है अमर जीवनी।

चुटकुला

एक बार एक आदमी एक गधे को लिये जा रहा था तो सामने से एक फौजी ने आते हुए बोला—"अरे, अपने भाई को क्यों बांध रखा है!" उस आदमी ने उत्तर दिया, "इसलिए कि कहीं ये भी फौज में जाकर फर्ती ना हो जाय।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद और विज्ञान

–स्व. पं. मधुसूदन ओझा

मंत्र को जानने की इच्छा वाला पुरुष प्रत्येक पद में स्वर, वर्ण, अक्षर, मात्रा उनके प्रयोग तथा अर्थ को जाने। (१) वेद के अध्ययन से, उसके दान से, उसके श्रवण से तथा वेद के वर्णों अक्षरों विभक्तियों व पदों के ज्ञान से धर्म होता है। (२) इस कात्यायनोक्ति से यह स्पष्ट सिद्ध है कि वर्णज्ञानपूर्वक तथा अक्षरज्ञानपूर्वक वेदार्थ ज्ञान ब्राह्मणों का निष्कारण कर्त्तव्य है।

ब्रह्म को जानने वाला ब्राह्मण होता है। त्रिभेदभिन्न यह ब्रह्म विश्व बनता है। ब्रह्म के तीन भेद पर, अक्षर व क्षर हैं। दिग्, देश, काल से अनवच्छिन्न होता हुआ भी जो क्षर तथा अक्षर का आलम्बन (आधार) होने से मन की तरह परिच्छिन्न होता है वही अव्यय नामक परब्रह्म है। वही चिति के द्वारा मन, प्राण व वाग् बनता है। इस मनोमय अव्यय मे अवलम्बित प्राणमय तथा क्षरों का संचालक कूटस्थ तत्व अक्षर कहलाता है। अक्षर में अवलम्बित वांगमय यह समग्र भूत समूह क्षर कहलाता है। इन अव्यय (पर) अक्षर व क्षर से भिन्न कोई-कोई तत्व संसार में नहीं है। अव्यय, अक्षर व क्षर तीनों पुरुष मिलकर एक पुरुष है। जिसे वेद में षोडशी कहा है। उस पुरुष को विशुद्ध आत्मा भी कह सकते हैं, विग्रहवान, आत्मा भी तथा अनेक विग्रहवानों (शरीरधारियों) से बना हुआ स्कन्ध (भूतग्राम) भी जो कुछ भूत व भव्य जगत् में दृष्टिगोचर होता है, वह पुरुष ही है। वह पुरुष मनोमय, प्राणमय व वांगमय है।

वेद में कहा है कि "अथो वागेवेदं सर्वम्"। अर्थात् सब कुछ वाक् ही है। वांग् आकाश को कहते हैं। वही वायु है, तेज है, जल है व पृथ्वी है। यह पृथ्वी जल पर प्रतिष्ठित है, जल तेज में, तेज वायु में, वायु आकाश रूप वाक्तत्व में। इसलिए ये सब विकार (कार्य) वाकतत्व से भिन्न नहीं हैं। इसलिए जगत् में जो कोई भी भूत समूह दिखाई देता है, वह सब वाक् ही है। इसलिये वेद में कहा है—"वाचीमा विश्वा भुवनान्यर्पिता" इति।

वे सब क्षर, अक्षर के अधीन हैं, अतः स्वतंत्र नहीं रह सकते। इसलिए इनकी सत्ता का आधायक कोई स्वतंत्र तत्व मानना होगा। वही तत्व अक्षर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। उसे ही प्राण कहते हैं। उस प्राण रूप अक्षर में अनन्त गुण उत्पन्न होते हैं। इसलिए गुणभेद से प्राणों के अनन्तविध होने पर भी पाँच प्रकार के स्थानों में रहने के कारण इस प्राण के पांच भेद माने जाते हैं। ये ही पांच प्रकार के प्राण पंच अक्षर कहलाते हैं। ये पंच अक्षर ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, अग्नि तथा सोम हैं। इन्हीं पांच अक्षरों से वाँग्मय तथा सभी क्षरात्मक भूत-समूह उत्पन्न होते हैं। इन्हीं प्राणों के आधार से ये भूत प्रतिष्ठित रहते हैं तथा अन्त में उन्हीं प्राणों में विलीन हो जाते हैं। यह परब्रह्मविद्या है अर्थात् यह स्थिति परब्रह्म में है। मन, प्राण, वाक् इन तीनों तत्वों में जिनको कि अव्यय, अक्षर, क्षर भी कहते हैं। यह वाक्तत्व भूतभाव, शब्द भाव व अर्थ भाव रूप से तीन प्रकार से विनियुक्त होता है। वाग् रूप आकाश से वायु आदि क्रम से उत्पन्न भूतसमूह ही भूतमय प्रपंच है। यह वाक् का एक प्रकार का विनियोग है। "तत्सृष्ट्वा तदेवानु प्राविशत्" इस श्रुति के अनुसार वायु आदि भूतों में अनुप्रविष्ट वाग्रूप आकाश ही आघात से कम्पित होता हुआ, वायु से पृथक् होकर वायु के आधार से चारों दिशाओं में गोल (वृत्ताकार) वीचीतरंग को उत्पन्न करता है। वह नाद रूप से कम्पमान वागाकाश चलता हुआ श्रोता के श्रोत्रप्रदेश में पहुंचता है और श्रोत्रेन्द्रिय के प्रज्ञाभाग से मिल-कर शब्द कहलाता है। यही शब्द, शब्दमय प्रपंच तथा अर्थमय प्रपंच रूप से दो प्रकार से विनियुक्त होता है। यही बात वाक्यपदीय में भर्तृहरि ने कही है—

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥

यह शब्दमय तथा अर्थमय दोनों प्रकार का प्रपंच वाग्मय प्रपंच ही है। यही वाक्तत्व का शब्दरूप तथा अर्थरूप इन दो प्रकारों से विनियोग है। इस शब्दमय तथा अर्थमयरूप वांग्मय प्रपंच में वे ही प्रकार हैं जिन प्रकारों का भूतमय प्रपंच में वर्णन किया है। वह वांग्मय प्रपंच भूतमय प्रपंच से छोटा है क्योंकि यह भूतमय प्रपंच का एकदेश है। अतः परब्रह्म विद्या को जानने की इच्छावाला पहिले शब्दमय ब्रह्म विद्या का परिशीलन करे। अल्पश्रम से ज्ञात यह शब्द विद्या महायाससाध्य परविद्या के ज्ञान में उपयोगी है इसीलिये मुण्डक श्रुति ने कहा है—

द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये शब्दब्रह्म परं च यत।
शाब्दे ब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस श्रुति में ब्रह्म शब्द का अर्थ विज्ञान है। वह विज्ञान शब्दविज्ञान तथा परविज्ञान भेद से दो प्रकार का है। विज्ञान तथा अभिनिवेश के द्वारा ज्ञानप्राप्ति भगवान् गौतम मानते हैं। शब्दश्रवणाधीन अर्थज्ञान विज्ञान है। इसे ही शब्द ब्रह्म कहते हैं। परीक्षा द्वारा साक्षात्काराधीन अर्थज्ञान को परब्रह्म कहते हैं। पूर्व परीक्षकों, पदार्थ तत्व का साक्षात्कार करने वाले पुरुषों के अधिगतार्थविषयक उपदेशरूप वाक्यार्थश्रवण में निष्णात पुरुष यदि परीक्षा के लिये प्रवृत होता है, तो उनका अभिनिवेशज्ञान समीचीन होता है। यह इस मंत्र का प्रथम अर्थ है। अन्य प्रकार से भी इस मंत्र की व्याख्या है— शब्द दो प्रकार से अर्थज्ञान कराता है अभिधानरूप से तथा प्रतीकरूप से। ओम् शब्द का वाच्य ब्रह्म है तथा ओम् शब्द भी ब्रह्म है जैसा कि श्रुति बतला रही है—"एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म यदोंकारः।

वहां अभिधानपक्ष के अनुसार "द्वे ब्रह्माणी" इत्यादि मंत्र की व्याख्या ऊपर कर दी गई है। प्रतीक पक्ष में इस मंत्र का अर्थ निम्नलिखित है—

परा तथा अपरा ये दो विद्या हैं। परब्रह्म ही पराविद्या तथा शब्द ब्रह्म ही अपरा विद्या है। दोनों विद्याओं में अत्यधिक साम्य है। अतः शब्दसृष्टि-ज्ञान से उसकी समानता के कारण अर्थसृष्टिज्ञान सिद्ध हो जाता है, ऐसा विद्वान मानते हैं। जिस प्रकार पर विद्या में अव्यय, अक्षर, क्षर भेद से तीन प्रकार का प्राणब्रह्म है। उसी प्रकार अपर विद्या में भी स्फोट, अक्षर वर्ण भेद से तीन प्रकार का वागब्रह्म है। अपर विद्या में वर्णों, अक्षरों, पदों, समस्त पदों, वाक्यों व महावाक्यों में एकत्व बुद्धि का कारण स्फोटरूप अव्यय है। जिस प्रकार पर विद्या में क्षर, अक्षर आदि का आलम्बन अव्यय पुरुष है, उसी स्फोटरूप अव्यय में नित्य सम्बद्ध पांच स्वरात्मक वर्ण अ, इ, उ, ऋ, लृ, अक्षर कहलाते हैं। इन्हीं पांच अक्षरों से क्षरात्मक सारे व्यंजनवर्ण उत्पन्न होते हैं। जिस प्रकार अक्षरों से उपगृहीत क्षर, अक्षरों के आलम्बन अव्यय में प्रतिष्ठित रहते हैं, उसी प्रकार स्वररूप अक्षरों से उपगृहीत व्यंजनरूप क्षर अक्षरालम्बन स्फोटरूप अव्यय में प्रतिष्ठित रहते हैं। परतंत्र क्षरात्मक व्यंजन अक्षरात्मक स्वर के आश्रित रहते हैं और अक्षरात्मक स्वर समूह अव्ययात्मक स्फोट में सम्बद्ध होता हुआ अपना स्वरूप धारण करता है। ये व्यंजन, स्वर और स्फोट तीनों एकीभूत एक वाक्तत्व हैं।

वाक्य का स्वरूप पदों से, पदों का अक्षरों से तथा अक्षरों का वर्णों से निष्पन्न होता है। अतः वाक्य, पद व अक्षर सभी का स्वरूप वर्णों से ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बनता है। अक्षर वर्णों का आत्मा है, अतः वर्णों से भिन्न है। अर्थात् वर्ण तथा अक्षर एक नहीं, भिन्न हैं। इसीलिये कात्यायन ने "स्वरो वर्णोऽक्षरं मात्रा" इस पद्य में वर्ण तथा अक्षर दोनों का प्रयोग कर वर्ण और अक्षर का भेद बतलाया है। जो वर्णसमाम्नाय अक्षरसमाम्नाय है, इस रूप से वर्ण और अक्षर में कहीं-कहीं अभेदव्यवहार भी किया गया है वह भ्रान्तिमूलक है।

वैदिक शब्दावली में वर्ण मातृ का या वर्णमाला की "पथ्या स्वस्ति" कहा जाता था। समीक्षा चक्रवर्ती पं० मधुसूदन ओझा ने "पथ्या स्वस्ति" नाम से एक ग्रंथ ही लिखा है जिसका प्रकाशन राज्य सरकार के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान ने किया है। इसका संपादन एवं अनुवाद स्वामी सुरजनदास जी ने किया है।

वेद में परब्रह्म को जानने का मार्ग शब्द-ब्रह्म को बताया गया है। पथ्या स्वस्ति में इसी शब्द ब्रह्म का विशद वैज्ञानिक निरूपण किया गया है। इस क्रम में पूज्य ओझाजी ने एक मात्रा, बिन्दु, वर्ण, अक्षर, स्वर, ध्वनि इत्यादि के उद्गम, विकास एवं स्वरूप का विवेचन किया है और यह दिग्दर्शन कराया है कि शब्द ही ब्रह्म है। ब्रह्म विद्या ही नहीं, भाषा, साहित्य, व्याकरण एवं ध्वनिशास्त्र के मर्मज्ञों एवं जिज्ञासुओं के लिये यह मौलिक ज्ञान सिद्ध होगा। वैदिक दृष्टि से भी यह मौलिक विज्ञान माना गया है। प्रस्तुत निबंध "पथ्या स्वस्ति" का ही एक अंश है। -सं०

क्योंकि आठ प्रकार से वर्णों एव अक्षरों मे भेद सिद्ध हैं। जैसे—

(१) वर्ण क्षरपुरुष है और अक्षर अक्षर पुरुष है, इस प्रकार दोनों में पुरुष भेद है। (२) वर्ण ६४ हैं और अक्षर लघु, गुरु भेद से दो प्रकार का है, यह संख्या भेद है। (३) वर्ण एक बिद्वात्मक है और अक्षर नवबिद्वात्मक है, यह योनिभेद है। (४) वर्ण निर्व्यापार है और पंचम बिन्दुस्थ अक्षर यदि निर्व्यापार है अथवा उसमें पृष्ठतः व्यापार है, तो लघु होता है और पुरतो व्यापार होता है, तो गुरु होता है। जैसे—अ या प्र लघु हैं किन्तु आ या अत् गुरु हैं, यह व्यापार भेद है। (५) वर्ण अन्न हैं और अक्षर अन्नाद हैं, यह वीर्य भेद है। (६) वर्ण अक्षर प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठित हैं और स्वतः अप्रतिष्ठित हैं, किन्तु अक्षर स्वतः प्रतिष्ठित, यह प्रतिष्ठाभेद हैं। (७) वर्ण अक्षर के अंग हैं और अक्षर वर्णों का अंगी है, यह अंगागिभेद है। (८) "ओम्" में वर्ण तीन हैं—'अ, उ, म् किन्तु ओम् अक्षर एक है, यह प्रतिपत्ति (ज्ञान) भेद है। इस प्रकार उपर्युक्त सन्दर्भ से दो बातें सिद्ध होती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं (१) वर्णों से अक्षर भिन्न हैं। (२) तथा अर्थ और शब्द दोनों ही तीन प्रकार के हैं, इस समानता के कारण परब्रह्मविद्या व शब्दब्रह्मविद्या में अत्यन्त सादृश्य है। अक्षरों की गुरुत्व तथा लघुत्व की उपपत्ति के लिये वर्णों के अंगांगिभाव की व्याख्या की जा रही है। "वृहत्याः (वाचः) पातः, वृहस्पतिः" इत्यादि निर्वचन से वाक् का वृहतीत्व सिद्ध होता है। यह वृहती वाक् ऐन्द्र (इन्द्र संबंधी) छन्द है। ऐतरेयारण्यक श्रुति में वृहतीशास्त्र को इन्द्र का प्रिय धाम बतलाया है। इसलिए ऐन्द्री वाक् वृहती कहलाता है। वृहती यह नौ भक्ति (भाग) वाले छन्द की संज्ञा है। ऐन्द्री वाक् को वृहती बतलाते हुए आचार्यों का ऐन्द्री वाक् नवभक्तिक (नौ भाग वाली) है, यह तात्पर्य है। अतः यह सिद्ध है कि ऐन्द्री वाक् का नौ बिन्दुएं व्याप्ति स्थान है। नौ बिन्दु तक यह अक्षर स्फोट है। अर्थात् नौ बिन्दुओं तक अक्षरस्फोट की व्याप्ति है।

उच्चार्यमाण व्यंजन जितने प्रदेश को व्याप्त करते हैं वह अर्धमात्राकाल है। उसी अर्धमात्राकाल का उपलक्षण (बोधक) एक बिन्दू है। यद्यपि स्वर को अक्षर कहते हैं और स्वर दो बिन्दुओं को विषय बनाता है न कि नौ बिन्दुओं को। क्योंकि स्वर एक मात्रिक होता है और एक मात्रा दो अर्ध-मात्रिक बिन्दुओं से बनती है तथापि नव बिन्दु तक अक्षर की व्याप्ति होती है, यह नवबिन्दुक का तात्पर्य है न कि नौ बिन्दुओं से स्वर रूप अक्षर का स्वरूप बनता है। अर्थात् नवबिंद्वात्मक प्रदेश तक के व्यंजनों को स्वर रूप अक्षर आत्मसात करने में समर्थ है। व्यंजनसहित स्वर भी अक्षर कहलाता है और सव्यंजन स्वर का नवबिन्दुक स्फोट आयतन होता है। यही स्फोट अव्यय है।

तात्पर्य यह है कि परब्रह्म की तरह शब्द ब्रह्म भी अक्षर उक्थ, अर्क अशिति भेद से तीन भागों से युक्त है। उन तीन भागों में बिंद्वद्वयात्मक स्वर शब्द ब्रह्म का उक्त या आत्मा है। सात बिन्दुएं इसका अर्कस्थान हैं। उक्थ-रूप आत्मा से उत्पन्न प्राण अर्क कहलाते हैं। वे अर्क क्रान्तिमण्डल रूप अपनी महिमा में अशिति (अन्न) को प्राप्त करने के लिए आक्रमण (गमन) करते हुए क्षररूप व्यंजन को आत्मसात् कर लेते हैं, उसे अपने स्वरूप में समाविष्ट कर लेते हैं। इस प्रकार यह उक्थ रूप आत्मा अपने क्रान्तिमण्डलरूप महिमा स्थान में अर्क द्वारा गृहीत व्यंजनों को अपने स्वरूप में समाविष्ट कर लेता है। अतः केवल स्वर के अक्षर होने पर भी ९ बिन्दु तक वर्तमान क्षर रूप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
व्यंजन स्वरूप अक्षर की सत्ता से ही सत्तावन होते हैं। अतः इन व्यंजनों से युक्त स्वर अक्षर कहलाता है। जैसे "अ" यह एक अक्षर है। इसी प्रकार य, स्य, त्र्य, स्त्रय भी एक-एक अक्षर ही हैं। वे अक्षर उपसर्ग (पूर्व में विद्यमान) व्यंजन के (एक-दो, तीन-चार भेद से) न्यूनाधिक होने पर भी आकार में समान स्थान को ही रोकते हैं। इसी प्रकार अ, अर्, अर्क, अर्क्ट ये चारों अक्षर भी स्वर से उत्तरवर्ती व्यंजनों से न्यूनाधिक होने पर भी छन्द (आकार) में समान स्थान को ही रोकते हैं। अतः ये एक अक्षर कहलाते हैं। इसीलिए जहां व्यंजन नहीं है, वहां शुद्ध स्वर ही अक्षर है। और स्वर के पूर्व या पश्चात, व्यंजनों के होने पर व्यजनविशिष्ट स्वर ही अक्षर कहलाता है। इसोलिए कात्यायन ने कहा है। "स्वरोऽक्षहद्रं सार्येर्व्यंजनै— रुत्तरैश्चाव-सितैः"। इति"

स्वर दो प्रकार का होता है— अपृक्त तथा व्यंजनसंपृक्ता जैसे—"अहम्" में प्रथम अकार व्यंजन से असंपृक्त है। उसको हम वर्ण व अक्षर दोनों कह सकते हैं। क्योंकि आकार वर्ण भी है और "स्वरोऽक्षरम्" इस सिद्धान्त से आकार स्वरवर्ण होने से अक्षर भी है। हकारोत्तरवर्ती आकार रूप पूर्व में हकार व्यंजन से तथा पश्चात [उत्तर में] अकार व्यंजन से सम्पृक्त है। अतः यहां व्यंजनविशिष्ट स्वर है, न कि केवल स्वर। यहां व्यंजनविशिष्ट स्वर का व्यंजनोपहित दृष्टि से विचार करें तो आकार भी वर्ण ही है अक्षर नहीं, क्योंकि उपाधि का उपहित में अन्वय नहीं होता। अतः उस दृष्टि से विचार करने पर व्यंजनों का अकार में अन्वय न होने से अकार वर्ण ही है। और यदि विशिष्ट मानकर विशिष्ट दृष्टि से विचार किया जाय तो विशेषणों का विशिष्ठ में अन्वय होने स अकार, पूर्व में हकार तथा उत्तर में मकार व्यंजन से युक्त होने के कारण "सहाद्येर्व्यंत्रजनैरुत्तरैश्चावसितैः" इस कात्यायनवचन के अनुसार अक्षर है। इसीलिये "वागित्येकमक्षरम्", अक्षरमितित्रक्षरम्" यह ऐतरेयारणयक श्रुति "वाग्" को एक अक्षर तथा अक्षर को त्रयक्षर [तीन अक्षरों का समुदाय] बतला रही है। क्योंकि वाग् में व्, आ, ग्, इन तीन वर्णों के होने पर भी आद्यन्त व्यंजनों से विशिष्ट अकारस्वर एक अक्षर ही है तथा "अक्षर" शब्द में "अ" यह एक अक्षर व्यंजन से असंपृक्त होने के कारण "स्वरोऽक्षरम्" इस सिद्धान्त के अनुसार अक्षर है। तथा "क्ष" व "र" ये दो व्यंजनसंपृक्त स्वर होने से "सहाद्यैर्व्यंत्रजनैरुत्तरैश्चावसितैः" इस वजन के अनुसार अक्षर है, मिलकर तीन अक्षर हैं, अतः "अक्षर" शब्द को तीन अक्षरों का समुदाय बतलाया गया है। कितने व्यजनों से युक्त स्वर एक अक्षर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहला सकता है, इस जिज्ञासा में यही उत्तर है कि आदि में (पूर्व में) चार व्यंजनों को तथा उत्तर में तीन व्यंजनों को व्याप्त कर सकता है। यही उसका क्रान्तिमण्डलरूप महिमा स्थान है, इससे अधिक नहीं। इस प्रकार एक स्वररूप आत्मा अपने अर्करूप प्राणों से आदि में आधान कर आत्मसात करके अंग बना सकता है। अतः इतने व्यंजन उसके अंग हैं तथा बिद्वद्वयात्मक स्वर उन व्यंजनरूप अंगों का आत्मा है। इसलिए जैसे पृथ्वी सूर्य का अंग है उसी प्रकार पार्थिव वागरूप व्यंजन ऐन्द्रवागरूप स्वर के अंग हैं।

(राजस्थान पत्रिका से साभार)

---

३. जैसे माता बच्चे को उठाने के लिए नीचे झुक जाती है, उसी तरह तुम्हें भी नीचे झुकना चाहिए और नीचे वालों को ऊपर उठाना चाहिए। विषमता मिटेगी और तभी सच्चा सुराज्य आएगा।

४. शिक्षा का स्तर इतनी तेजी से गिर रहा है कि कुछ दिनों में अनपढ़ गंवार लोग पढ़े-लिखों से अच्छे लगने लगेंगे।

५. कहते हैं कि अंग्रेजों के राज में सूरज नहीं डूबता था, किन्तु तुम तो उनसे भी आगे निकल गये। तुम्हारे राज में तो सूरज उगता ही नहीं, डूबने की नौबत कहां से आएगी ?

६. हमारे दांतों से हमारी जबांन कट रही है। क्रोध बहुत आ रहा है, लेकिन किस पर करें, यह सब हमारे अपने हैं।

हमें संघर्ष करना है—

अखण्ड हिन्दुस्थान के लिए

हम चाहते हैं—

त्यागवाद : समाजवाद नहीं

धर्मराज्य : सैक्युलरवाद नहीं

सबका समान अधिकार—

सबके लिए समान नियम : साम्प्रदायिकता नहीं

वेद-गौ-गंगा-गायत्री

की सुरक्षा के लिए कुछ करो

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां।।
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहिं काम ।।
चिंता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ।।
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल।
नानक हर गुन गाय ले छांड सकल जंजाल ।।
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार ।।
झूठ बखान कहा करे जग सुहने जियुं जात।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की ।।
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ।
कहु नानक एहु विपत में टेक एक रघुनाथ ।।

——श्री गुरु नानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है, ते सब नरक कुंड महिं परि है ।।

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१५८, बालकेश्वर मार्ग, तीनबत्ती, बम्बई-४०००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी० टी० ५. वरली नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताक्रुज (पश्चिम)।

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

आर्य समाज के प्रचार में तेजी लाने, ऋषिका सन्देश घर घर पहुंचाने, विवाह जन्म दिन आदि शुभ अवसरोंपर इष्टमित्रों को भेंट देने तथा स्वयं भी संगीतमय आनन्द प्राप्त करते हेतु, श्रेष्ठ गायकों द्वारा गाये मधुर संगीतमय भजनों तथा संध्या हवन आदि के उत्कृष्ट कैसेट आज ही मंगाइये ।

डार्क तथा पैकिंग खर्च अलग

छूट - 5 या उससे अधिक कैसेटों का पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजनेपर डाक तथा पैकिंग व्यय फ्री । वी.पी.पी. से मंगाने के लिये कृपया 15.00 रु. आदेश के साथ भेजिये ।

भेंट - दस कैसेट मंगाने वालोंको एक कैसेट मुफ़्त ।

कैसेट नं

1. वैदिक संध्या हवन-(स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण सहित) — 25.00 रु.
2. भक्ति भजनावली, गायक-गणेश विद्यालङ्कार व वन्दना वाजपेयी — 25.00 रु.
3. गायत्री महिमा, गायत्री मंत्र की विशद् व्याख्या (पिता-पुत्र संवाद में) — 25.00 रु.
4. महर्षि दयानन्द, गायक बाबूलाल राजस्थानी व जयश्री शिवराम — 25.00 रु.
5. आर्य भजन माला, गायक-संगीता, दीपक, रोहिणी, स्मिता व देवव्रत शास्त्री — 25.00 रु.
6. योगासन एवं प्राणायाम स्वंय शिक्षक, प्रशिक्षण, डॉ. देवव्रत आचार्य — 25.00 रु.
7. आर्य संगीतिका, गायिका-माता शिवराजवती आर्या — 25.00 रु.
8-9. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कैसेट) — 50.00 रु.
   (स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन) — 30.00 रु.
10. पथिक भजन सिन्धु, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक — 30.00 रु.
11. सत्यपाल पथिक भजनांवली, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक — 30.00 रु.
12. पथिक भजन माला, गीतकार व गायक-सत्यपाल पथिक — 30.00 रु.
13. मुसाफिर भजन सिन्धु, कुंवर महिपालसिंह आर्य द्वारा गाये गये कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के भजन — 30.00 रु.
14. श्रद्धा, प्रसिद्ध फिल्म गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान. — 30.00 रु.
15. आर्य भजनावली, फिल्मी संगीतकार एवं गायक-वेदपाल वर्मा — 30.00 रु.
16. वेद गीताञ्जली, गीतकार व गायक-सत्यकाम विद्यालङ्कार — 30.00 रु.
17. भजन सुधा, आ. प्रज्ञादेवी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन

प्राप्तिस्थान - **संसार साहित्य मण्डल**

(आर्य सिन्धु आश्रम)

141, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई-400 082

फोन-5617137

उपर्युक्त कैसेट दयानन्द संस्थान, २२८६, आर्य समाज रोड, करौल बाग, नई दिल्ली—५ से भी उपलब्ध हैं । जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५००)
२.	सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	८०)
३.	वेद ज्योति	१५)
४.	वेदांजलि :(वर्ष के ३६५ दिन के ३६५ वेद मन्त्रों की व्याख्या)	३०)
५.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	२०)
६.	अथर्ववेद परिचय :	६)
७.	संस्कारविधि [सजिल्द] :	१५)
८.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३०)
९.	यज्ञमीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) डा० रामनाथ वेदालंकार	२५)
१०.	सत्यार्थ-प्रकाश (१०-१५ इंच) स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	१५१)
	,, ,, ,, (आर्ट पेपर पर)	२५१)
११.	ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२.	वैदिक सम्पत्ति	१०१)
१३.	योगासन :	२)
१४.	योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५.	Concept of God	५०)
१६.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश :	२५)
१७.	LIGHT OF TRUTH	५०)
१८.	प्रकृति और सर्ग : (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	६)
१९.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	५०)
२०.	संक्षिप्त महाभारत	५०)
२१.	संक्षिप्त रामायण	१०)

२२. गायत्री मन्त्र (चार्ट) : हिन्दी भाष्य सहित १-५०)

दोनों ओर पत्ती लगी कम से कम दस प्रतियाँ मँगाएं
आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

कार्यालय :
२२८६ आर्य समाज रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-५

दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर
महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
अलीपुर, दिल्ली-११००३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(मासिक) P. O. मालोपुर दिल्ली-१६	२०४३ अक्टूबर १९८६	D-C-201 R.N. 10719/65

जनज्ञान का दिसम्बर अंक

'हिन्दू जागृति विशेषांक

इस अंक में आप पढ़ेंगे :

१) हिन्दुत्व के मानव कल्याणकारी दर्शन की तेजस्वी झलक
२) विश्व को हिन्दू धर्म की देन की खोजपरक जानकारी
३) हिन्दू राष्ट्रवाद के प्रेरक विकास की झांकी
४) विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध रणशूरों, समाज उन्नायकों एवं मनीषियों के संघर्ष, त्याग तथा बलिदान की सजीव गाथाएं।
५) हिन्दू जाग्रति की रोमांचक गाथा।
६) हिन्दुत्व के लिए जीवन अर्पित करने वाले महापुरुषों के उद्गार
७) हिन्दू जाग्रति एवं हिन्दुत्व की रक्षा के लिए समर्पित वीरबालकों और देवियों की बलिदान कथाएं।

ओजस्वी एवं राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कविताएं।

विद्वान लेखकों की लेखनी से सर्जित इस विशेषांक की प्रति पहले से सुरक्षित करालें। दो सौ पृष्ठ के इस संग्रहणीय अंक का मूल्य होगा आठ रुपये मात्र। ३० नवम्बर तक जनज्ञान के वार्षिक नये सदस्य बनने वालों को इस विशेषांक के लिए अतिरिक्त मूल्य नहीं देना होगा।

पृथक से विशेषांक की प्रति प्राप्त करने के इच्छुक सज्जनों का १५ नवम्बर तक अग्रिम राशि भेजने पर यह विशेषांक छै रुपये में प्राप्त हो सकेगा।

न्यूनतम — ५ प्रति ३० रुपये   १० प्रति -५० रुपये
५० ,, २२५ ,,   १०० ,, ४०० ,,

एजेन्ट अधिक प्रतियों की सूचना १५ नवम्बर तक भेज दें।
विज्ञापन दाता भी इस अवसर का लाभ उठाना न भूलें।

विज्ञापन दर -

अन्तिम कवर पृष्ट १२०० रुपये   कवर पृष्ट दो, तीन १००० रुपये
साधारण पूर्ण पृष्ट ८०० रुपये, आधा पृष्ट ५०० रुपये, चौथाई पृष्ट ३००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi